जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख
धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण
और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

(पांडुशिला ,सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य,जाप माला ,मंगल कलश, पूजा बर्तन ,चंदोवा,तोरण ,झारी ,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)

नोट:-हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु ,साधुओ के उपयोग हेतु ,
अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर
उपलब्ध कराया जाता है

SOURABH KUMAR JAIN
9993602663
77229 83010
SOURABHJN1989@GMAIL.COM

जैन

1. भजन

15th May 2016

Index

देव

1. अशरीरी सिद्ध भगवान
2. आ गया... आ गया...
3. आओ जिनमंदिर में आओ
4. आज मैं महावीर जी
5. आज सी सुहानी
6. आज हम जिनराज
7. आया कहां से
8. आया तेरे दरबार में
9. आये तेरे द्वार
10. आयो आयो रे हमारो
11. एक तुम्हीं आधार हो
12. ओ जगत के शांति दाता
13. कभी वीर बनके
14. कर लो जिनवर का गुणगान
15. करता हूं तुम्हारा सुमिरन
16. करुणा सागर भगवान
17. केसरिया केसरिया
18. कोई इत आओ जी
19. गा रे भैया
20. घडी घडी पल पल
21. चंद्रानन
22. चरणों में आया हूं
23. चवलेश्वर पारसनाथ
24. चाह मुझे है दर्शन की
25. छोटा सा मंदिर
26. जगदानंदन
27. जब कोई नहीं आता मेरे बाबा
28. जयवंतो जिनबिम्ब
29. जिनवर आनन भान
30. जिनवर दरबार तुम्हारा
31. झीनी झीनी उडे रे
32. तिहारे ध्यान की मूरत
33. तुझे प्रभु वीर कहते हैं
34. तुम जैसा मैं भी
35. तुमसे लागी लगन
36. तुम्हारे दर्श बिन स्वामी
37. तुम्ही हो ज्ञाता
38. तू ज्ञान का सागर है
39. तेरी शांत छवि
40. तेरी शीतल शीतल मूरत
41. तेरी सुंदर मूरत
42. तेरे दर्शन से मेरा
43. तोरी पल पल
44. दरबार तुम्हारा मनहर है
45. दिन रात स्वामी तेरे गीत
46. देखो जी आदिश्वर स्वामी
47. धन्य धन्य आज घडी
48. नाथ तुम्हारी पूजा
49. नाम तुम्हारा तारणहारा
50. निरखत जिन चंद्रवदन

51. निरखी निरखी मनहर
52. निरखो अंग अंग
53. नेमि जिनेश्वर
54. पंचपरम परमेष्ठी
55. पद्मासद्म
56. पारस प्यारा लागो
57. पारस प्रभु का दर्शन
58. प्रभु दर्शन कर जीवन की
59. प्रभु हम सब का एक
60. प्रभुजी अब ना भटकेंगे
61. बाहुबली भगवान
62. भटके हुए राही को
63. भव भव रुले हैं
64. भावना की चूनरी
65. मन भाये चित हुलसाये
66. मनहर तेरी मूरतियाँ
67. महाराजा स्वामी
68. महावीर स्वामी
69. मिलता है सच्चा सुख केवल
70. मेरे मन मंदिर में आन
71. मेरे सर पर रख दो भगवन
72. मैं तेरे ढिंग आया रे
73. म्हारा आदीश्वर जी
74. रंगमा रंगमा
75. रोम रोम पुलकित हो जाये
76. रोम रोम में नेमिकुंवर के
77. रोम रोम से न
78. वन्दों अद्भुत चन्द्रवीर जिन
79. वर्तमान को वर्धमान की
80. वर्धमान ललना से
81. वीतरागी देव
82. वीर प्रभु के ये बोल
83. शुद्धात्मा का श्रद्धान
84. शौरीपुर वाले
85. श्री अरिहंत छवि लखिके
86. श्री जिनवर पद ध्यावें जे नर
87. सीमंधर स्वामी
88. स्वामी तेरा मुखडा
89. हम यही कामना करते हैं
90. हरो पीर मेरी
91. हे प्रभो चरणों में

शास्त्र

92. आज मैं परम पदारथ
93. ओंकारमयी वाणी तेरी
94. करता हूं मैं अभिनंदन
95. चरणों में आ पडा हूं
96. जब एक रत्न अनमोल
97. जिनवाणी अमृत रसाल
98. जिनवाणी की सुनै सो
99. जिनवाणी जग मैया
100. जिनवाणी माँ जिनवाणी माँ
101. जिनवाणी माता दर्शन की
102. जिनवाणी माता रत्नत्रय निधि
103. जिनवैन सुनत, मोरी भूल भगी
104. धन्य धन्य जिनवाणी माता शरण
105. धन्य धन्य वीतराग वाणी

106. महिमा है अगम
107. माँ जिनवाणी तेरो नाम
108. माँ जिनवाणी बसो हृदय में
109. माता तू दया करके
110. म्हारी मां जिनवाणी
111. शरण कोई नहीं जग में
112. शांती सुधा बरसाये
113. सांची तो गंगा
114. सीमंधर मुख से
115. सुनकर वाणी जिनवर की
116. हे जिनवाणी माता तुमको लाखों
117. हे शारदे मां

गुरु

118. ऐसा योगी क्यों न अभयपद पावै
119. ऐसे मुनिवर देखें
120. ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं
121. कबधौं मिलै मोहि श्रीगुरु
122. गुरु रत्नत्रय के धारी
123. धन धन जैनी साधु...
124. धनि मुनि जिन यह
125. धनि मुनि निज आतमहित कीना
126. धन्य मुनिराज हमारे हैं
127. धन्य मुनीश्वर आतम हित में
128. नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ
129. निर्ग्रंथों का मार्ग
130. परम गुरु बरसत ज्ञान झरी
131. परम दिगम्बर मुनिवर देखे
132. परम दिगम्बर यती
133. मुनिवर आज मेरी कुटिया में
134. मुनिवर को आहार
135. म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर आया
136. वे मुनिवर कब मिली हैं उपगारी
137. वेष दिगम्बर धार
138. शान्ति सुधा बरसा गये
139. शुद्धातम तत्व विलासी रे
140. श्री मुनि राजत समता संग
141. संत साधु बन के विचरूँ
142. सिद्धों की श्रेणी में आने वाला
143. है परम-दिगम्बर मुद्रा जिनकी
144. होली खेलें मुनिराज शिखर वन में

धर्म

145. आजा अपने धर्म की तू राह में
146. उठे सब के कदम
147. जय जिनेन्द्र बोलिए
148. जहाँ रागद्वेष से रहित निराकुल
149. जैन धर्म के हीरे मोती
150. बडे भाग्य से हमको मिला जिन
151. भावों में सरलता रहती है
152. मैं महापुण्य उदय से जिनधर्म
153. ये धरम है आतम ज्ञानी का
154. लहर लहर लहराये, केसरिया झंडा
155. लहरायेगा-लहरायेगा झंडा
156. श्रीजिनधर्म सदा जयवन्त
157. सब जैन धर्म की जय बोलो

तीर्थ

158. ऊंचे ऊंचे शिखरों वाला 1
159. ऊंचे ऊंचे शिखरों वाला 2
160. ऊंचे शिखरों पे बसा है
161. गगन मंडल में उड जाऊं
162. चलो सब मिल सिधगिरी
163. जीयरा...जीयरा...जीयरा
164. मधुबन के मंदिरों में
165. रे मन भज ले प्रभु का नाम
166. विश्व तीर्थ बडा प्यारा
167. सम्मेद शिखर पर मैं जाऊंगा
168. सांवरिया पारसनाथ शिखर पर

कल्याणक

169. आज तो बधाई राजा
170. आनंद अवसर आज सुरगण
171. आया पंच कल्याणक महान
172. कल्पद्रुम यह समवसरण है
173. कुडंलपुर वाले कुडंलपुर वाले वीरजी
174. गर्भ कल्याणक आ गया
175. गावो री बधाईयां
176. गिरनारी पर तप कल्याणक
177. घर घर आनंद छायो
178. चन्द्रोज्वल अविकार स्वामी जी
179. झुलाय दइयो पलना
180. तेरे पांच हुये कल्याण प्रभु
181. दिन-आयो दिन-आयो
182. दिव्य ध्वनि वीरा खिराई
183. नाचे रे इन्दर देव
184. पंखिड़ा तू उड़ के जाना स्वर्ग
185. पंखिडा रे उड के आओ कुंडलपुर में
186. पंचकल्याण मनाओ मेरे साथी
187. पालकी उठाने का हमें अधिकार है
188. बाजे कुण्डलपुर में बधाई
189. मणियों के पलने में
190. महावीरा झूले पलना
191. मेरा पलने में झूले
192. ये महामहोत्सव पंच कल्याणक
193. रोम रोम में नेमिकुंवर के
194. लिया आज प्रभु जी ने जनम सखी
195. लिया प्रभू अवतार जयजयकार
196. लिया रिषभ देव अवतार
197. विषयों की तृष्णा को छोड
198. सुरपति ले अपने शीश
199. हो संसार लगने लगा अब

महामंत्र

200. करना मन ध्यान महामंत्र
201. जप जप रे नवकार मंत्र
202. जय जय जय कार परमेष्ठी
203. जो मंगल चार जगत में हैं
204. णमोकार नाम का ये कौन मंत्र
205. णमोकार मन्त्र को प्रणाम हो
206. नमन हमारा अरिहंतों को
207. पंच परम परमेष्ठी देखे
208. बने जीवन का मेरा आधार रे
209. मंत्र जपो नवकार मनुवा
210. मंत्र नवकार हमें प्राणों से प्यारा
211. मंत्र नवकारा हृदय में धर

अध्यात्म

212. अपनी सुधि पाय आप
213. अपनी सुधि भूल आप
214. अपने में अपना परमातम
215. अब गतियों में नाहीं रुलेंगे
216. अब मेरे समकित सावन
217. अरे जिया जग धोखे की टाटी
218. आओ रे आओ रे ज्ञानानंद की
219. आतम रूप अनूपम अद्भुत
220. ऐसा मोही क्यों न अधोगति जावै
221. ओ जीवड़ा तू थारी
222. और अबै न कुदेव सुहावै
223. कबधौं सर पर धर डोलेगा
224. कबै निरग्रंथ स्वरूप धरूंगा
225. करलो आतम ज्ञान परमातम
226. कहा मानले ओ मेरे भैया
227. काहे पाप करे काहे छल
228. कैसो सुंदर अवसर आयो है
229. क्यूं करे अभिमान जीवन
230. गाडी खडी रे खडी रे तैयार
231. चेतन अपनो रूप निहारो
232. चेतन तूँ तिहुँ काल अकेला
233. जब चले आत्माराम
234. जिया कब तक उलझेगा
235. जीव! तू भ्रमत सदीव अकेला
236. जीवन के किसी भी पल में
237. जैन धरम के हीरे मोती
238. जो अपना नहीं उसके अपनेपन
239. जो आज दिन है वो, कल ना
240. जो जो देखी वीतराग
241. ज्ञाता दृष्टा राही हूं
242. तन पिंजरे के अन्दर बैठा
243. तू जाग रे चेतन देव तुझे जिनदेव
244. तू जाग रे चेतन प्राणी
245. तोड़ विषियों से मन जोड़
246. देखा जब अपने अंतर को
247. धोली हो गई रे काली कामली
248. ध्यान धर ले प्रभू को
249. निजपुर में आज मची रे होरी
250. निजपुर में आज मची होरी
251. पाना नहीं जीवन को
252. पाप मिटाता चल ओ बंधू
253. भजन बिन यौंही जनम गमायो
254. भाया थारी बावली जवानी
255. भूल के अपना घर
256. मन महल में दो दो भाव जगे
257. ममता की पतवार ना तोडी
258. माया में फ़ंसे इंसान
259. मेरे कब ह्वै वा दिन की सुघरी
260. मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूं
261. मैं दर्शन ज्ञान स्वरूपी हूं
262. मैं हूँ आतमराम
263. मोक्ष पद मिलता है धीरे धीरे
264. मोह की महिमा देखो
265. मोहे भावे न भैया थारो देश
266. ये शाश्वत सुख का प्याला

267. वीर भज ले रे भाया

268. शास्त्रों की बातों को मन

269. संसार महा अघसागर

270. सजधज के जिस दिन

271. सिद्धों से मिलने का मार्ग

272. सुन रे जिया चिरकाल गया

273. सुनो जिया ये सतगुरु की बातैं

274. सोते सोते ही निकल

275. हम तो कबहुँ न निज घर आये

276. हम तो कबहुँ न निजगुन भाये

277. हम तो कबहूँ न हित उपजाये

278. हम न किसीके कोई न हमारा

अशरीरी सिद्ध भगवान

अशरीरी-सिद्ध भगवान, आदर्श तुम्हीं मेरे
अविरुद्ध शुद्ध चिद्घन, उत्कर्ष तुम्हीं मेरे ॥टेक॥

सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञान, अगुरुलघु अवगाहन
सूक्ष्मत्व वीर्य गुणखान, निर्बाधित सुखवेदन ॥
हे गुण! अनन्त के धाम, वन्दन अगणित मेरे ॥१॥

रागादि रहित निर्मल, जन्मादि रहित अविकल
कुल गोत्र रहित निष्कुल, मायादि रहित निश्छल ॥
रहते निज में निश्चल, निष्कर्म साध्य मेरे ॥२॥

रागादि रहित उपयोग, ज्ञायक प्रतिभासी हो
स्वाश्रित शाश्वत-सुख भोग, शुद्धात्म-विलासी हो ॥
हे स्वयं सिद्ध भगवान, तुम साध्य बनो मेरे ॥३॥

भविजन तुम-सम निज-रूप, ध्याकर तुम-सम होते
चैतन्य पिण्ड शिव-भूप, होकर सब दुख खोते ॥
चैतन्यराज सुखखान, दुख दूर करो मेरे ॥४॥

आ गया... आ गया...

आगया.. आगया... आगया...

आगया शरण तिहारी आगया... आगया... आगया..

सुनकर बिरद तुम्हारा, तेरी शरण में आया

तुमसा न देव मैंने, कोई कहीं है पाया

सर्वज्ञ वीतरागी सच्चे हितोपदेशक २

दर्शन से नाथ तेरे कटते हैं पाप बेशक ॥ आगया..॥

चारों गति के दुख जो, मैंने भुगत लिये हैं

तुमसे छिपे नहीं हैं, जो जो करम किये हैं

अब तो जनम मरण की काटो हमारी फ़ांसी २

वरना हंसेगी दुनिया, बिगडेगी बात खासी ॥ आगया..॥

अंजन से चोर को भी, तुमने किया निरंजन

श्रीपाल कोडि की भी, काया बना दी कंचन

मेंढक सा जीव भी जब, तेरे नाम से तिरा है २

पंकज ये सोच तेरे, चरणों में आ गिरा है ॥ आगया..॥

आओ जिनमंदिर में आओ

आओ जिन मंदिर में आओ, श्री जिनवर के दर्शन पाओ
जिन शासन की महिमा गाओ,
आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥टेक॥

हे जिनवर तव शरण में, सेवक आया आज
शिवपुर पथ दरशाय के, दीजे निज पद राज ॥
प्रभु अब शुद्धातम बतलाओ, चहुँगति दु:ख से शीघ्र छुड़ाओ
दिव्य-ध्वनि अमृत बरसाओ, आया-प्यासा मैं सेवक आनन्द का॥१॥

जिनवर दर्शन कीजिए, आतम दर्शन होय
मोह महातम नाशि के, भ्रमण चतुर्गति खोय ॥
शुद्धातम को लक्ष्य बनाओ, निर्मल भेद-ज्ञान प्रकटाओ,
अब विषयों से चित्त हटाओ, पाओ-पाओ रे मारग निर्वाण का ॥२॥

चिदानन्द चैतन्यमय, शुद्धातम को जान
निज स्वरूप में लीन हो, पाओ केवलज्ञान ॥
नव केवल लब्धि प्रकटाओ, फिर योगों को नष्ट कराओ,
अविनाशी सिद्ध पद को पाओ, आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥३॥

आज मैं महावीर जी

आज मैं महावीर जी आया तेरे दरबार में,
कब सुनाई होगी मेरी आपकी सरकार में ।

तेरी किरपा से है माना लाखों प्राणी तिर गये
क्यों नहीं मेरी खबर लेते मैं हुं मंझधार में ।१।

काट दो कर्मों को मेरे है ये इतनी आरजू
हो रहा हूं ख्वार मैं दुनिया के मायाचार में ।२।

आप का सुमिरन किया जब मानतुंगाचार्य ने
खुल गयी थी बेडियां झट उनकी कारागार में ।३।

बन गया सूली से सिंहासन सुदर्शन के लिये
हो रहा गुणगान है उस सेठ का संसार में ।४।

मुश्किलें आसान कर दो अपने भक्तों की प्रभो
यह विनय 'पंकज' की है बस आपके दरबार में ।५।

आज सी सुहानी

आज सी सुहानी सु घड़ी इतनी,
कल ना मिलेगी ढूँढ़ो चाहे जितनी ॥टेक॥

आया कहाँ से है जाना कहाँ,
सोचो तुम्हारा ठिकाना कहाँ ।
लाये थे क्या है कमाया यहाँ,
ले जाना तुमको है क्या-२ वहाँ ॥

धारे अनेकों है तूने जनम,
गिनावें कहाँ लो है आती शरम ।
नरदेह पाकर अहो पुण्य धन,
भोगों में जीवन क्यों करते खतम ॥

प्रभू के चरण में लगा लो लगन,
वही एक सच्चे हैं तारणतरण ।
छूटेगा भव दु:ख जामन मरण,
'सौभाग्य' पावोगे मुक्ति रमण ॥

आज हम जिनराज

आज हम जिनराज! तुम्हारे द्वारे आये
हाँ जी हाँ हम, आये-आये ॥टेक॥

देखे देव जगत के सारे, एक नहीं मन भाये
पुण्य-उदय से आज तिहारे, दर्शन कर सुख पाये ॥१॥

जन्म-मरण नित करते-करते, काल अनन्त गमाये
अब तो स्वामी जन्म-मरण का, दु:खड़ा सहा न जाये ॥२॥

भवसागर में नाव हमारी, कब से गोता खाये
तुमही स्वामी हाथ बढ़ाकर, तारो तो तिर जाये ॥३॥

अनुकम्पा हो जाय आपकी, आकुलता मिट जाये
'पंकज' की प्रभु यही वीनती, चरण-शरण मिल जाये ॥४॥

आया कहां से

आया कहां से, कहां है जाना, ढूंढ ले ठिकाना चेतन ढूंढ ले ठिकाना

इक दिन चेतन गोरा तन यह, मिट्टी में मिल जाएगा
कुटुम्ब कबीला पडा रहेगा, कोई बचा ना पायेगा
नहीं चलेगा कोई बहाना...॥ ढूंढ ले ठिकाना...।१।

बाहर सुख को खोज रहा है, बनता क्यों दीवाना रे
आतम ही सुख खान है प्यारे, इसको भूल ना जाना रे
सारे सुखों का ये है खजाना...॥ ढूंढ ले ठिकाना... ।२।

जब तक तन में सांस रहेगी, सब तुझको अपनायेंगे
जब न रहेंगे प्राण जो तन में, सब तुझसे घबरायेंगे
तुझको पडेगा प्यारे है जाना...॥ ढूंढ ले ठिकाना...।३।

दौलत के दीवानों सुन लो, इक दिन ऐसा आयेगा
धन दौलत और रूप खजाना, पडा यहीं रह जायेगा
कन्धा लगायेगा सारा जमाना...॥ ढूंढ ले ठिकाना...।४।

गुरुचरणों के ध्यान से चेतन, भवसागर तिर जायेगा
सम्यग्दर्शन ज्ञान से प्यारे, दुख तेरा मिट जायेगा
सारे सुखों का है ये खजाना...॥ ढूंढ ले ठिकाना...।५।

आया तेरे दरबार में

आया, आया, आया तेरे दरबार में त्रिशला के दुलारे
अब तो लगा मझदार से यह नाव किनारे ॥

अथा संसार सागर में फ़ंसी है नाव यह मेरी
फ़ंसी है नाव यह मेरी
ताकत नहीं है और जो पतवार संभारे ॥ अब तो...

सदा तूफ़ान कर्मों का नचाता नाच है भारी
नचाता नाच है भारी
सहे दुख लाख चौरासी नहीं वो जाते उचारे ॥ अब तो...

पतित पावन तरण तारण, तुम्हीं हो दीन दुख भन्जन
तुम्हीं हो दीन दुख भन्जन
बिगडी हजारों की बनी है तेरे सहारे ॥ अब तो...

तेरे दरबार में आकर न खाली एक भी लौटा
न खाली एक भी लौटा
मनोरथ पूर दें 'सौभाग्य' देता ढोक तुम्हारे ॥ अब तो...

आये तेरे द्वार

आये तेरे द्वार सुन ले भक्तों की पुकार
त्रिशला लाल रे ॥टेक॥

कुण्डलपुर में जनम लियो तब, बजने लगी थी शहनाई,
दीपावली को मुक्ति पाई तब मन में सबके तहनाई,
तुम पा गये मुक्ति धाम
हम भी पायें निज का धाम...त्रिशला लाल रे ॥१॥

सुन्दर स्याद्वाद की सरगम, जब तुमने थी बरसाई,
भव्यजनों को आनंदकारी, अमृत धारा बरसाई,
भविजन तुमको निजसम जान
कर गये आतम का कल्याण...त्रिशला लाल रे ॥२॥

नीर क्षीर सम तन चेतन को, भिन्न सदा ही बताया है,
जिन चेतन के दर्शन पा, निज चेतन दर्शन पाया है,
मैं पाऊं निज का धाम
वही सच्चा जिन का धाम...त्रिशला लाल रे ॥३॥

आयो आयो रे हमारो

आयो आयो रे हमारो बडो भाग, कि हम आये पूजन को,
पूजन को प्रभु दर्शन को, पावन प्रभु पद दर्शन को ॥

जिनवर की अंतर्मुख मुद्रा आतम दर्श कराती,
मोह महातम प्रक्षालन कर शुद्ध स्वरूप दिखाती ॥

भव्य अकृत्रिम चैत्यालय की जग में शोभा भारी,
मंगल ध्वज ले सुरपति आये शोभा जिनकी न्यारी ॥

अनेकांत मय वस्तु समझ जिन शासन ध्वज लहरावें,
स्याद्वाद शैली से प्रभुवर मुक्ति मार्ग समझावें ॥

एक तुम्हीं आधार हो

एक तुम्हीं आधार हो जग में, ए मेरे भगवान
कि तुमसा और नहीं बलवान ॥
सँभल न पाया गोते खाया, तुम बिन हो हैरान.
कि तुमसा और नहीं बलवान ॥टेक॥

आया समय बड़ा सुखकारी, आतम-बोध कला विस्तारी
मैं चेतन, तन वस्तुमन्यारी, स्वयं चराचर झलकी सारी ॥
निज अन्तर में ज्योति ज्ञान की अक्षयनिधि महान,
कि तुमसा और नहीं बलवान ॥१॥

दुनिया में इक शरण जिनंदा, पाप-पुण्य का बुरा ये फंदा
मैं शिवभूप रूप सुखकंदा, ज्ञाता-दृष्टा तुम-सा बंदा ॥
मुझ कारज के कारण तुम हो, और नहीं मतिमान,
कि तुमसा और नहीं बलवान ॥२॥

सहज स्वभाव भाव दरशाऊँ, पर परिणति से चित्त हटाऊँ
पुनि-पुनि जग में जन्म न पाऊँ, सिद्धसमान स्वयं बन जाऊँ ॥
चिदानन्द चैतन्य प्रभु का है `सौभाग्य' प्रधान,
कि तुमसा और नहीं बलवान ॥३॥

ओ जगत के शांति दाता

ओ जगत के शान्तिदाता, शान्ति जिनेश्वर,
जय हो तेरी॥टेक॥

मोह माया में फ़ंसा, तुझको भी पहिचाना नही
ज्ञान है ना ध्यान दिल में धर्म को जाना नहीं
दो सहारा, मुक्तिदाता, शान्ति जिनेश्वर,
जय हो तेरी.....॥

बनके सेवक हम खडे हैं, आज तेरे द्वार पे
हो कृपा जिनवर तो बेडा, पार हो संसार से
तेरे गुण स्वामी मैं गाता, शान्ति जिनेश्वर,
जय हो तेरी.....॥

किसको मैं अपना कहूं, कोई नजर आता नहीं
इस जहां में आप बिन कोई भी मन भाता नहीं
तुम ही हो त्रिभुवन विधाता, शान्ति जिनेश्वर,
जय हो तेरी.....॥

कभी वीर बनके

कभी वीर बनके महावीर बनके चले आना, दरस हमें दे जाना ॥

तुम ऋषभ रूप में आना, तुम अजित रूप में आना
संभवनाथ बनके, अभिनंदन बनके चले आना ॥ दरस ॥

तुम सुमति रूप में आना, तुम पदमरूप में आना
सुपार्श्वनाथ बनके चंदाप्रभु बनके चले आना ॥ दरस ॥

तुम पुष्प रूप में आना, शीतलनाथ रूप में आना
श्रेयांसनाथ बनके वासुपूज्य बनके चले आना ॥ दरस ॥

तुम विमल रूप में आना, तुम अनंत रूप में आना
धर्मनाथ बनके शांतिनाथ बनके चले आना ॥ दरस ॥

तुम कुंथु रूप में आना, अरहनाथ रूप में आना
मल्लिनाथ बनके मुनिसुव्रत बनके चले आना ॥ दरस ॥

नमिनाथ रूप में आना, नेमिनाथ रूप में आना
पार्श्वनाथ बनके वर्द्धमान बनके चले आना ॥ दरस ॥

कर लो जिनवर का गुणगान

करलो जिनवर का गुणगान, आई मंगल घड़ी
आई मंगल घड़ी, देखो मंगल घड़ी ॥करलो ॥१॥

वीतराग का दर्शन पूजन भव-भव को सुखकारी
जिन प्रतिमा की प्यारी छविलख मैं जाऊँ बलिहारी ॥२॥

तीर्थंकर सर्वज्ञ हितंकर महा मोक्ष के दाता
जो भी शरण आपकी आता, तुम सम ही बन जाता ॥३॥

प्रभु दर्शन से आर्त रौद्र परिणाम नाश हो जाते
धर्म ध्यान में मन लगता है, शुक्ल ध्यान भी पाते ॥४॥

सम्यक्दर्शन हो जाता है मिथ्यातम मिट जाता
रत्नत्रय की दिव्य शक्ति से कर्म नाश हो जाता ॥५॥

निज स्वरूप का दर्शन होता, निज की महिमा आती
निज स्वभाव साधन के द्वारा स्वगति तुरत मिल जाती॥६॥

करता हूं तुम्हारा सुमिरन

करता हूँ तुम्हारा सुमरण उद्धार करो जी,
मंझधार में हूँ अटका, बेडा पार करो जी,
हे रिषभ जिनंदा, हे रिषभ जिनंदा ॥

आया हूँ बड़ी आशा से तुम्हारे दरबार में,
ना पाया कभी भी चेना, इस दुखमय संसार में,
देते हैं कर्म दुःख इनका, संहार करो जी ॥

करता हूँ चरण प्रक्षालन, आरतियाँ उतारूं,
शत शत मैं करूं पड़ वंदन, तन मन हैं सभी वारूँ,
पद में हो ठिकाना मेरा, तरण तार करो जी ॥

जल, चंदन, अक्षत, उज्जवल,ये सुमन चरु लीन,
ये दीप धुप फल सभी प्रभु अरपन है कीने,
मल पाप छुडा कर तुमसा, अविकार करो जी ॥

नाभि राजा के नंदन, मरू देवी दुलारे,
आए जो शरण में उनको प्रभु आपने तारे,
शिव तक पहुंचा कर मुझको, उपकार करो जी ॥

करुणा सागर भगवान

करुणा सागर भगवान, भव पार लगा देना
तूफ़ां है बहुत भारी, मेरी नाव बचा देना

मोही बनकर मैंने अब तक जीवन खोया
अपने ही हाथों से काटों का बीज बोया
अब शरण तेरी आया, दुख जाल हटा देना
करुणा सागर भगवान...

मैंs ने चहुंगतियों में बहु कष्ट उठाया है
लख चौरासी फ़िरते सुख चैन न पाया है
दुखिया हूं भटक रहा प्रभु लाज बचा देना
करुणा सागर भगवान...

भगवन तेरी भक्ति से संकट टल जाते हैं
अज्ञान तिमिर मिटता सुख अमृत पाते हैं
चरणों में खडा प्रभुजी मुझे राह बता देना
करुणा सागर भगवान...

केसरिया केसरिया

केसरिया, केसरिया, आज हमारो मन केसरिया ॥

तन केसरिया, मन केसरिया, पूजा के चावल केसरिया
भक्ति में हम सब केसरिया॥ केसरिया...॥

हम केसरिया, तुम केसरिया, अष्ट द्रव्य सब हैं केसरिया
मंदिर की है ध्वजा केसरिया, भक्ति में हम सब केसरिया॥ केसरिया...॥

इन्द्र केसरिया, इन्द्राणि केसरिया, सिद्धों की पूजन केसरिया
पूजा के सब भाव केसरिया, भक्ति में हम सब केसरिया॥ केसरिया...॥

वीर प्रभु की वाणी केसरिया, अहिंसा परमो धर्म केसरिया
जीयो जीने दो केसरिया, भक्ति में हम सब केसरिया॥ केसरिया...॥

पीछी केसरिया, कमण्डल केसरिया, दिगम्बर साधु भी केसरिया
शत शत वंदन है केसरिया, भक्ति में हम सब केसरिया॥ केसरिया...॥

स्वर्णिम रथ देखो केसरिया, स्वर्ण वरण प्रभुजी केसरिया
छत्र चंवर ध्वज सब केसरिया, भक्ति में हम सब केसरिया॥ केसरिया...॥

कोई इत आओ जी

कोई इत आओ जी, वीतराग ध्याओ जी,
जिनगुण की आरती संजोय लाओ जी॥

दया का हो दीपक, क्षमा की हो ज्योत,
तेल सत्य संयम में, ज्ञान का उद्योत,
मोहतम नशाओ जी, वीतराग ध्याओ जी॥

संयम की आरती में, समकित सुगंध,
दर्श ज्ञान चारित्र की, हृदय में उमंग,
भेद ज्ञान पाओ जी, वीतराग ध्याओ जी॥

निर-तन को पाय कर, भूलयो मती,
बन जा दिगम्बर, महाव्रत यती,
भावना ये भावो जी, वीतराग ध्याओ जी॥

जिनगुण की आरती में, ध्यान की कला,
भव भव के लागे सब, कर्म लो गला,
भवभ्रमण मिटाओ जी, वीतराग ध्याओ जी॥

गा रे भैया

गा रे भैया, गा रे भैया, गा रे भैया गा,
प्रभु गुण गा तू समय ना गवां॥

किसको समझे अपना प्यारे, स्वारथ के हैं रिश्ते सारे
फ़िर क्यों प्रीत लगाये, ओ भैया जी॥ गा रे भैया...॥

दुनियां के सब लोग निराले, बाहर उजले अंदर काले
फ़िर क्यों मोह बढाये, ओ बाबू जी॥ गा रे भैया...॥

मिट्टी की यह नश्वर काया, जिसमें आतम राम समाया
उसका ध्यान लगा ले, ओ दादा जी॥ गा रे भैया...॥

स्वारथ की दुनियां को तजकर, निश दिन प्रभु का नाम जपाकर
समयग्दर्शन पाले, ओ काका जी॥ गा रे भैया...॥

शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर, निर्मल भेदज्ञान प्रगटाकर
मुक्ति वधू को पाले, ओ लाला जी॥ गा रे भैया...॥

घडी घडी पल पल

घड़ि-घड़ि पल-पल छिन-छिन निशदिन,
प्रभुजी का सुमिरन करले रे ॥

प्रभु सुमिरेतैं पाप कटत हैं,
जनममरनदुख हरले रे ॥१॥

मनवचकाय लगाय चरन चित,
ज्ञान हिये विच धर ले रे ॥२॥

'दौलतराम' धर्मनौका चढ़ि,
भवसागर तैं तिर ले रे ॥३॥

चंद्रानन

चन्द्रानन जिन चन्द्रनाथ के, चरन चतुर-चित ध्यावतुमहैं
कर्म-चक्र-चकचूर चिदातम, चिनमूरत पद पावतुमहैं ॥टेक॥

हाहा-हूहू-नारद-तुंबर, जासु अमल जस गावतुमहैं
पद्मा सची शिवा श्यामादिक, करधर बीन बजावतुमहैं ॥

बिन इच्छा उपदेश माहिं हित, अहित जगत दरसावतुमहैं
जा पदतट सुर नर मुनि घट चिर, विकट विमोह नशावतुमहैं ॥

जाकी चन्द्र बरन तनदुतिसों, कोटिक सूर छिपावतुमहैं
आतमजोत उदोतमाहिं सब, ज्ञेय अनंत दिपावतुमहैं ॥

नित्य-उदय अकलंक अछीन सु, मुनि-उडु-चित्त रमावतुमहैं
जाकी ज्ञानचन्द्रिका लोका-लोक माहिं न समावतुमहैं ॥

साम्यसिंधु-वर्द्धन जगनंदन, को शिर हरिगन नावतुमहैं
संशय विभ्रम मोह `दौल' के, हर जो जगभरमावतुमहैं ॥

चरणों में आया हूं

चरणों में आया हूं, उद्धार जिनंद कर दो
निज रीति निभाकर के, उपकार जिनंद कर दो॥

संसार की नश्वरता, मैंने अब जानी है,
मंगलकारी जब ही, सुनी जिनवर वाणी है
चारित्र की नाव चढा, भवपार जिनंद कर दो॥ निज...॥

ना चाहत भोगों की, ना जग का कोई बंधन,
गर ध्यान करूं कोई, तो देखूं केवल जिन
तम दूर हटा मन का, उजियार जिनंद कर दो॥ निज...॥

कर्मों ने जनम जनम, मेरा पीछा नहीं छोडा,
भरमाया यूंही प्रभू से, नाता ना कभी जोडा
करुणा कर अब इनसे, निस्तार जिनंद कर दो॥ निज...॥

चवलेश्वर पारसनाथ

चँवलेश्वर पारसनाथ , म्हारी नैया पार लगाजो

म्हें सुन सुन अतिशय सारा, आया दर्शन हित सारा
होजी म्हाने पार करो मंझधार, म्हारी नैया पार लगाजो ॥

ऊंचा पर्वत गहरी झाडी, नीचे बह रही नदियां भारी
होजी थांका दर्शन पर बलिहार , म्हारी नैया पार लगाजो ॥

थे चिंतामणि रतन कहावो, दुखिया रा दुख मिटाओ
म्हाके अंतर ज्योति जगार, म्हारी नैया पार लगाजो ॥

तोडी मान कमठ की माला, त्यारा नाग नागिन काला
बन गया देव कृपा तब धार, म्हारी नैया पार लगाजो ॥

म्हैं भी अजयमेरुं सुं आया, थांका दर्शन कर हरषाया
जावां दर्शन पर बलिहार म्हारी नैया पार लगाजो ॥

थांको नाम मंत्र जो ध्यावे, ब्याकां सगला दुख मिट जावे
प्रगटे शील आत्मबल सार, म्हारी नैया पार लगाजो ॥

चाह मुझे है दर्शन की

चाह मुझे है दर्शन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥टेक॥

वीतराग-छवि प्यारी है, जगजन को मनहारी है
मूरत मेरे भगवन की, वीर के चरण स्पर्शन की ॥१॥

कुछ भी नहीं श्रृंगार किये, हाथ नहीं हथियार लिये
फौज भगाई कर्मन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥२॥

समता पाठ पढ़ाती है, ध्यान की याद दिलाती है
नासादृष्टि लखो इनकी, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥३॥

हाथ पे हाथ धरे ऐसे, करना कुछ न रहा जैसे
देख दशा पद्मासन की, वीर के चरण स्पर्शन की ॥४॥

जो शिव-आनन्द चाहो तुम, इन-सा ध्यान लगाओ तुम
विपत हरे भव-भटकन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥५॥

छोटा सा मंदिर

छोटा सा मंदिर बनायेंगे, वीर गुण आयेंगे
वीर गुण गायेंगे, महावीर गुण गायेंगें ॥

कंधों पे लेके चांदी की पालकी, प्रभु जी का विहार करायेंगें

हाथों में लेकर सोने के कलशा, प्रभुजी का न्हवन करायेंगे

हाथों में लेकर द्रव्य की थाली, पूजन विधान रचायेंगे

हाथों में लेकर ताल-मजीरा, प्रभुजी की भक्ति रचायेंगे

हाथों में लेकर श्री जिनवाणी, पढेंगें और सबको पढायेंगे

श्रद्धा में लेकर वस्तुस्वरूप, आतम का अनुभव करायेंगे

चारित्र में लेकर शुद्धोपयोग, मुक्तिपुरी को जायेंगें

जगदानंदन

जगदानंदन जिन अभिनंदन, पदअरविंद नमूं मैं तेरे ॥टेक॥

अरुणवरन अघताप हरन वर, वितरन कुशल सु शरन बडेरे
पद्मासदन मदन-मद-भंजन, रंजन मुनिजन मन अलिकेरे ॥

ये गुन सुन मैं शरनै आयो, मोहि मोह दुख देत घनेरे
ता मदभानन स्वपर पिछानन, तुम विन आन न कारन हेरे ॥

तुम पदशरण गही जिनतैं ते, जामन-जरा-मरन-निरवेरे
तुमतैं विमुख भये शठ तिनको, चहुँ गति विपत महाविधि पेरे ॥

तुमरे अमित सुगुन ज्ञानादिक, सतत मुदित गनराज उगेरे
लहत न मित मैं पतित कहों किम,किन शशकन गिरिराज उखेरे ॥

तुम बिन राग दोष दर्पनज्यों, निज निज भाव फलैं तिनकेरे
तुम हो सहज जगत उपकारी, शिवपथ-सारथवाह भलेरे ॥

तुम दयाल बेहाल बहुत हम, काल-कराल व्याल-चिर-घेरे
भाल नाय गुणमाल जपों तुम, हे दयाल, दुखटाल सबेरे ॥

तुम बहु पतित सुपावन कीने, क्यों न हरो भव संकट
भ्रम-उपाधि हर शम समाधिकर, 'दौल' भये तुमरे अब चेरे ॥

जब कोई नहीं आता मेरे बाबा

जब कोई नहीं आता मेरे बाबा आते है...(२)
मेरे दुःख के दिनों में वो बड़े काम आते है...(२)

मेरी नैयाँ चलती है, पतवार नहीं चलती,
किसी और की अब मुझको, दरकार नहीं होती,
मैं डरता नहीं जग से जब बाबा साथ में है...(२) । मेरे ।

जो याद करें उनको दुःख हलका हो जाये,
जो भक्ति करे उनकी वे उनके हो जाये,
ये बिन बोले कुछ भी पहचान जाते है...(२) । मेरे ।

ये इतने बड़े होकर भक्तों से प्यार करे
अपने भक्तों के दुःख पलभर में दूर करे
सब भक्तो का कहना प्रभु मान जाते है...(२) । मेरे ।

मेरे मन के मंदिर में बाबा का वास रहे
कोइ पास रहे न रहे बाबा मेरे पास रहे
मेरे व्याकुल मन को ये जान जाते है...(२) । मेरे ।

जयवंतो जिनबिम्ब

जयवन्तो जिनबिम्ब जगत में, जिन देखत निज पाया है ॥

वीतरागता लखि प्रभुजी की, विषय दाह विनशाया है
प्रगट भयो संतोष महागुण, मन थिरता में आया है ॥

अतिशय ज्ञान षरासन पै धरि, शुक्ल ध्यान शरवाया है
हानि मोह अरि चंड चौकडी, ज्ञानादिक उपजाया है ॥

वसुविधि अरि हर कर शिवथानक, थिरस्वरूप ठहराया है
सो स्वरूप रुचि स्वयंसिद्ध प्रभु, ज्ञानरूप मनभाया है ॥

यद्यपि अचित तदपि चेतन को, चितस्वरूप दिखलाया है
कृत्य कृत्य जिनेश्वर प्रतिमा, पूजनीय गुरु गाया है ॥

जिनवर आनन भान

जिनवर-आनन-भान निहारत, भ्रमतम घान नसाया है ॥टेक॥

वचन-किरन-प्रसरनतैं भविजन, मनसरोज सरसाया है
भवदुखकारन सुखविसतारन, कुपथ सुपथ दरसाया है ॥१॥

विनसाई कज जलसरसाई, निशिचर समर दुराया है
तस्कर प्रबल कषाय पलाये, जिन धनबोध चुराया है ॥२॥

लखियत उडुग न कुभाव कहूँ अब, मोह उलूक लजाया है
हँस कोक को शोक नश्यो निज, परनतिचकवी पाया है ॥३॥

कर्मबंध-कजकोप बंधे चिर, भवि-अलि मुंचन पाया है
`दौल' उजास निजातम अनुभव,उर जग अन्तर छाया है ॥४॥

जिनवर दरबार तुम्हारा

जिनवर दरबार तुम्हारा, स्वर्गों से ज्यादा प्यारा
वीतराग मुद्रा से परिणामों में उजियारा
ऐसा तो हमारा भगवन है, चरणों में समर्पित जीवन है ॥

समवसरण के अंदर, स्वर्ण कमल पर आसन,
चार चतुष्टय धारी, बैठे हो पद्मासन
परिणामों में निर्मलता, तुमको लखने से आये,
फ़िर वीतरागता बढती, जो जिनवर दर्शन पाये ॥ ऐसा ॥

त्रैलोक्य झलकता भगवन, कैवल्य कला में,
तीनों ही कालों में कब क्या होगा कैसे
जग के सारे ज्ञेयों को, तुम एक समय में जानो,
निज में ही तन्मय रहते, उनको न अपना मानो ॥ ऐसा ॥

दिव्यध्वनि के द्वारा, मोक्ष मार्ग दर्शाया,
प्रभु अवलंबन लेकर, मैंने भी निजपद पाया
मैं भी तुमसा बनने को, अब भेदज्ञान प्रगटाऊं,
निज परिणति में ही रमकर, अब सम्यकदर्शन पाऊं ॥ ऐसा ॥

झीनी झीनी उडे रे

झीनी झीनी उडे रे गुलाल, चालो रे मंदरिया में
चालो रे मंदरिया में, चालो रे मंदरिया में ॥

म्हारा तो गुरुजी आतमज्ञानी,
ज्ञान की जिसने ज्योत जगा दी
ज्ञान का भरा रे भंडार, चालो रे मंदरिया में ॥

वीर प्रभु जी दया के सागर,
महावीर प्रभु जी दया के सागर
शीश झुकाऊं बारम्बार, चालो रे मंदरिया में ॥

वीर प्रभु के चरणों में आये,
आकर चरणों में शीश नवाये
हो रही जयजयकार, चालो रे मंदरिया में ॥

तिहारे ध्यान की मूरत

तिहारे ध्यान की मूरत, अजब छवि को दिखाती है
विषय की वासना तज कर, निजातम लौ लगाती है ॥टेक॥

तेरे दर्शन से हे स्वामी! लखा है रूप मैं तेरा
तजूँ कब राग तन-धन का, ये सब मेरे विजाती हैं ॥१॥

जगत के देव सब देखे, कोई रागी कोई द्वेषी
किसी के हाथ आयुध है, किसी को नार भाती है ॥२॥

जगत के देव हठग्राही, कुनय के पक्षपाती हैं
तू ही सुनय का है वेत्ता, वचन तेरे अघाती हैं ॥३॥

मुझे कुछ चाह नहीं जग की, यही है चाह स्वामी जी
जपूँ तुम नाम की माला, जो मेरे काम आती है ॥४॥

तुम्हारी छवि निरख स्वामी, निजातम लौ लगी मेरे
यही लौ पार कर देगी, जो भक्तों को सुहाती है ॥५॥

तुझे प्रभु वीर कहते हैं

तुझे प्रभु वीर कहते हैं, और अतिवीर कहते हैं
अनेकों नाम तेरे पर, अधिक महावीर कहते हैं ॥

अनंतो गुणों का तू धारी, तेरा यशगान हम गायें,
हे युग के नाथ निर्माता, तुझे नत शीश नवायें,
दया होवे प्रभू ऐसी, कि हम सब भव से पार हों, भव से पार हों,
भव से पार हों॥ तुझे प्रभु वीर ...॥

युगों से जीव यह मेरा, देह का योग है पाता,
मोह के जाल में फ़ंसकर, आत्म निज ओर नहीं जाता,
पिला अध्यात्म रस स्वामी, ज्ञान की क्षुधा धार हो, क्षुधा धार हो,
क्षुधा धार हो॥ तुझे प्रभु वीर ...॥

सत्य श्रद्धान हो मेरे, कि सम्यक ज्ञान हो मेरे,
यही विनती मेरे स्वामी, रहूं चरणों में नित तेरे,
कभी फ़िर मोक्ष मिल जाए, कि वृद्धि सुख अपार हो, सुख अपार हो,
सुख अपार हो॥ तुझे प्रभु वीर ...॥

तुम जैसा मैं भी

तुम जैसा मैं भी बन जाऊं, ऐसा मैंने सोचा है,
तुम जैसी समता पा जाऊं, ऐसा मैंने सोचा है ।

भव वन में भटक रहा भगवन, ऐसी चिन्मूरत न पाई है
तेरे दर्शन से निज दर्शन की,सुधि अपने आप ही आई है
शांति प्रदाता मंगलदाता, मुश्किल से मैंने खोजा है,
तुम जैसी समता पा जाऊं.... ।१।

कितनी प्रतिकूल परिस्थिति में, मुझको वैराग्य न आता है
संसार असार नहीं लगता, मन राग रंग में जाता है
विषय वासना की जड गहरी, काटो नाथ भरोसा है,
तुम जैसी समता पा जाऊं....।२।

हे जिनधर्म के प्रेमी सुन लो, कह गये कुंद कुंद स्वामी
भव सागर से तिरने में फ़िर,कल्याणी माँ श्री जिनवाणी
रूप तुम्हारा सबसे न्यारा, करना सिर्फ़ भरोसा है,
तुम जैसी समता पा जाऊं....।३।

तुमसे लागी लगन

तुमसे लागी लगन ले लो अपनी शरण--पारस प्यारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा।
निशदिन तुमको जपूं पर से नेहा तजूं--जीवन सारा,
तेरे चरणों में बीते हमारा॥ तुमसे लागी...॥

अश्वसेन के राज दुलारे, वामा देवी के सुत प्राण प्यारे
सबसे नेहा तोडा जग से मुख को मोडा--संयम धारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा॥ तुमसे लागी...॥

इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये
आशा पूरो सदा, दुख नहीं पावे कदा--सेवक थारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा॥ तुमसे लागी...॥

जग के दुख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है
मेटो जामन मरण होवे ऐसा जतन--तारण हारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा॥ तुमसे लागी...॥

लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊं, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊं
पंकज व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया--लागे खारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा॥ तुमसे लागी...॥

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, मुझे नहीं चैन पड़ती है
छवि वैराग्य तेरी सामने आँखों के फिरती है ॥
तुम्हारे दर्श बिन स्वामी...

निराभूषण विगतदूशन, परम आसन, मधुर भाषण
नजर नैंनो की आशा की अनि पर से गुजरती है ॥तुम्हारे॥

नहीं कर्मों का डर हमको, कि जब लगे ध्यान चरनन में
तेरे दर्शन से सुनते है करम रेखा बदलती है ॥तुम्हारे॥

मिले गर स्वर्ग की संपत्ति, अचंभा कौन सा इसमें
तुम्हें जो नयन भर देखें, गति दुर्गति ही टलती है ॥तुम्हारे॥

हजारों मूर्तियाँ हमने बहुत सी अन्य मत देखी
शांति मूरत तुम्हारी सी नहीं नजरों में चढ़ती है ॥तुम्हारे॥

जगत सिरताज हो जिनराज सेवक को दरश दीजे
तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी सुधरती है ॥तुम्हारे॥

तुम्ही हो ज्ञाता

तुम ही हो ज्ञाता, दृष्टा तुम्ही हो,
तुम ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो ॥

तुम ही हो त्यागी, तुम ही वैरागी, तुम ही हो धर्मी, सर्वज्ञ स्वामी
हो कर्म जेता, तीरथ प्रणेता, तुम ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो ॥

तुमही हो निश्चल, निष्काम भगवन, निर्दोष तुम हो, हे विश्वभूषण
तुम्हें त्रिविध है वन्दन हमारी,तुम ही जगोत्तम,शरण तुम्ही हो ॥

तुमही सकल हो, तुमही निकल हो, तुमहीं हजारों हो नामधारी
कोई ना तुमसा हितोपकारी, तुम ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो ॥

जो तिर सके ना भव सिंधु मांही, किया क्षणों में है पार तुमने
बैरी है पावन मुक्तिरमा को, तुम ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो ॥

जो ज्ञान निर्मल है नाथ तुममें, वही प्रगट हो वीरत्व हममें
मिले परमपद सौभाग्य हमको, तुम ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो ॥

तू ज्ञान का सागर है

तर्ज : तू प्यार का सागर

तू ज्ञान का सागर है, आनंद का सागर है
उसी आनंद के प्यासे हम,
निज ज्ञान सुधा चाखे, प्रभु अब तेरी कृपा से हम ॥तू॥

विषय भोग में तन्मय होकर, खोया है जीवन वृथा,
खोया है जीवन वृथा,
बात प्रभु तेरी एक ना मानी, अपनी ही धुन में रहा-२
जाना है किधर हमको-२ और आये हैं कहां से हम

आतम अनुभव अमृत तज के, पिया विषय जड का,
पिया विषय जड का,
मोह नशे में पागल होकर, किया ना तत्व विचार-२
नैया है मेरी मझधार-२, इसी से प्रभु को बुलाते हम ॥तू॥

भूल रहे हैं राह वतन की, भटक रहे संसार,
भटक रहे संसार,
भीख मांगते दर दर भ्रमते, घर में भरा है भंडार-२
निजधाम हमारा है-२, जहां है स्वदेस यहां से हम ॥तू॥

तेरी शांत छवि

तेरी शांति छवि पे मैं बलि बलि जाऊँ
खुले नयन मारग आ दिल मैं बिठाऊँ ॥

लेखा ना देखा, धर्म पाप जोड़ा,
बना भोग लिप्सा कि चाहों में दौड़ा,
सहे दुख जो जो कहा लो सुनाऊँ ॥तेरी॥

तेरा ज्ञान गौरव जो गणधर ने गाया,
वही गीत पावन मुझे आज भाया,
उसी के सुरों में सुनो मैं सुनाऊँ ॥तेरी॥

जगी आत्म ज्योति सम्यक्त्व तत्त्व की,
घटी है घटा शाम मिथ्या विकल की,
निजानन्द 'सौभाग्य' सेहरा सजाऊँ-२ ॥तेरी॥

तेरी शीतल शीतल मूरत

तर्ज : तेरी प्यारी प्यारी सूरत को

तेरी शीतल-शीतल मूरत लख,
कहीं भी नजर ना जमें, प्रभू शीतल ।
सूरत को निहारें पल पल तब,
छबि दूजी नजर ना जमें ॥प्रभू शीतल॥

भव दुःख दाह सही है घोर, कर्म बली पर चला न जोर
तुम मुख चन्द्र निहार मिली अब,
परम शान्ति सुख शीतल ढोर ।
निज पर का ज्ञान जगे घट में भव बंधन भीड़ थमें ॥प्रभू॥

सकल ज्ञेय के ज्ञायक हो, एक तुम्ही जग नायक हो
वीतराग सर्वज्ञ प्रभू तुम,
निज स्वरूप शिवदायक हो ।
'सौभाग्य' सफल हो नर जीवन, गति पंचम धाम धमे ॥प्रभू॥

तेरी सुंदर मूरत

तर्ज : तेरी प्यारी प्यारी सूरत को

तेरी सुन्दर मूरत देख प्रभो,
मैं जीवन दुख सब भूल गया ।
यह पावन प्रतिमा देख प्रभो ॥टेक॥

ज्यों काली घटायें आती हैं, त्यों कोयल कूक मचाती है
मेरा रोम रोम त्यों हर्षित है, हाँ हर्षित है ॥
यह चन्द्र छवि जिन देख प्रभो ॥१॥

ओ...दोष के हरनेवाले हो,ओ... मोक्ष के वरनेवाले हो
मेरा मन भक्ति में लीन हुआ, हाँ, लीन हुआ ॥
इसको तो निभाना देख प्रभो ॥२॥

हर श्वांस में तेरी ही लय हो, कर्मों पे सदा विजय भी हो
यह जीवन तुझसा जीवन हो, हाँ जीवन हो ॥
'सौभाग्य' यह ही लिख लेख प्रभो ॥३॥

तेरे दर्शन से मेरा

तेरे दर्शन से मेरा दिल खिल गया
मुक्ति के महल का सुराज्य मिल गया
आतम के सुज्ञान का सुभान हो गया,
भव का विनाशी तत्त्वज्ञान हो गया ॥टेर॥

तेरी सच्ची प्रीत की यही है निशानी
भोगों से छूट बने आतम सुध्यानी ।
कर्मों की जीत का सुसाज मिल गया ॥मुक्ति के॥

तेरी परतीत हरे व्याधियाँ पुरानी
जामन मरण हर दे शिवरानी
प्रभो सुख शान्ति सुमन आज खिल गया ॥मुक्ति के॥

ज्ञानानन्द अतुल धन राशी
सिद्ध समान वरूँ अविनाशी
यही 'सौभाग्य' शिवराज मिल गया ॥मुक्ति के॥

तोरी पल पल

तोरी पल पल निरखें मूरतियाँ,
आतम रस भीनी यह सूरतियाँ ॥टेर॥

घोर मिथ्यात्व रत हो तुम्हें छोड़कर,
भोग भोगे हैं जड़ से लगन जोड़कर ।
चारों गति में भ्रमण, कर कर जामन मरण,
लखि अपनी न सच्ची सूरतियाँ ॥१॥

तेरे दर्शन से ज्योति जगी ज्ञान की,
पथ पकड़ी है हमने स्वकल्याण की ।
पद तुझसा महान, लगा आतम का ध्यान,
पावे 'सौभाग्य' पावन शिव गतियाँ ॥२॥

दरबार तुम्हारा मनहर है

दरबार तुम्हारा मनहर है, प्रभु दर्शन कर हर्षाये हैं
दरबार तुम्हारे आये हैं, दरबार तुम्हारे आये हैं ॥टेक॥

भक्ति करेंगे चित से तुम्हारी, तृप्त भी होगी चाह हमारी
भाव रहें नित उत्तम ऐसे, घट के पट में लाये हैं ॥१॥

जिसने चिंतन किया तुम्हारा, मिला उसे संतोष सहारा
शरणे जो भी आये हैं, निज आतम को लख पाये हैं ॥२॥

विनय यही है प्रभू हमारी, आतम की महके फुलवारी
अनुगामी हो तुम पद पावन, 'वृद्धि' चरण सिर नाये हैं ॥३॥

दिन रात स्वामी तेरे गीत

दिन रात स्वामी तेरे गीत गाऊं,
भावों की कलियां चरणे खिलाऊं॥

तेरी शांत मूरत मुझे भा गई है,
मेरे नैनों में नजर आ गई है,
मैं अपने में अपने को कैसे समाऊं, भावों की कलियां...

मैं सारे जहां में कहीं सुख ना पाया,
है गम का भरा गहरा दरिया है छाया,
ये जीवन नैया मैं कैसे तिराऊं, भावों की कलियां...

निगोदावस्था से मानव गति तक,
तुझे लाख ढूंढा न पाया मैं अब तक,
कहां मेरी मंजिल तुझे कैसे पाऊं, भावों की कलियां..

यही आस जिनवर शरण पाऊं तेरी,
मिट जाय मेरी ये भव भव की फ़ेरी,
शरण दो तुम्हें नाथ शीश नवाऊं, भावों की कलियां...

देखो जी आदिश्वर स्वामी

देखो जी आदीश्वर स्वामी कैसा ध्यान लगाया है
कर ऊपरि कर सुभग विराजै, आसन थिर ठहराया है ॥टेक॥

जगत-विभूति भूतिसम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है
सुरभित श्वासा, आशा वासा, नासादृष्टि सुहाया है ॥१॥

कंचन वरन चलै मन रंच न, सुरगिर ज्यों थिर थाया है
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जातिविरोध नसाया है ॥२॥

शुध उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है
श्यामलि अलकावलि शिर सोहै, मानों धुआँ उड़ाया है ॥३॥

जीवन-मरन अलाभ-लाभ जिन, तृन-मनिको सम भाया है
सुर नर नाग नमहिं पद जाकै, 'दौल' तास जस गाया है ॥४॥

धन्य धन्य आज घडी

धन्य-धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है
सिद्धों का दरबार है ये सिद्धों का दरबार है ॥

खुशियाँ अपार आज हर दिल में छाई हैं
दर्शन के हेतु देखो जनता अकुलाई है
चारों ओर देख लो भीड़ बेशुमार है ॥१॥

भक्ति से नृत्य-गान कोई है कर रहे
आतम सुबोध कर पापों से डर रहे
पल-पल पुण्य का भरे भण्डार है ॥२॥

जय-जय के नाद से गूँजा आकाश है
छूटेंगे पाप सब निश्चय यह आज है
देख लो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्ति द्वार है ॥३॥

नाथ तुम्हारी पूजा

नाथ तुम्हारी पूजा में सब, स्वाहा करने आया
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया ॥

पंचेन्द्रिय का लक्ष्य करूँ मैं, इस अग्नि में स्वाहा
इन्द्र-नरेन्द्रों के वैभव की, चाह करूँ मैं स्वाहा
तेरी साक्षी से अनुपम मैं यज्ञ रचाने आया ॥१॥

जग की मान प्रतिष्ठा को भी, करना मुझको स्वाहा
नहीं मूल्य इस मन्द भाव का, व्रत-तप आदि स्वाहा
वीतराग के पथ पर चलने का प्रण लेकर आया ॥२॥

अरे जगत के अपशब्दों को, करना मुझको स्वाहा
पर लक्ष्यी सब ही वृत्ती को, करना मुझको स्वाहा
अक्षय निरंकुश पद पाने और पुण्य लुटाने आया ॥३॥

तुमहो पूज्य पुजारी मैं, यह भेद करूँगा स्वाहा
बस अभेद में तन्मय होना, और सभी कुछ स्वाहा
अब पामर भगवान बने, यह सीख सीखने आया ॥४॥

नाम तुम्हारा तारणहारा

नाम तुम्हारा तारणहारा, कब तेरा दर्शन होगा
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा ॥

सुर नर मुनिजन तुम चरणों में, नितदिन शीश नवाते हैं
जो गाते हैं तेरी महिमा, मनवांछित फल पाते हैं
धन्य घडी समझुंगा उस दिन, जब तेरा दर्शन होगा ॥१-नाम॥

दीन दयाला करुणासागर, जग में नाम तुम्हारा है
भटके हुए हम भक्तों का प्रभु, तू ही एक सहारा है
भव से पार उतरने को तेरे गीतों का सरगम होगा ॥२-नाम॥

निरखत जिन चंद्रवदन

निरखत जिनचन्द्र-वदन, स्वपदसुरुचि आई ॥टेक॥

प्रगटी निज आनकी, पिछान ज्ञान भानकी
कला उदोत होत काम, जामिनी पलाई ॥१॥

शाश्वत आनन्द स्वाद, पायो विनस्यो विषाद
आन में अनिष्ट इष्ट, कल्पना नसाई ॥२॥

साधी निज साधकी, समाधि मोह व्याधिकी
उपाधि को विराधिकैं, आराधना सुहाई ॥३॥

धन दिन छिन आज सुगुनि, चिंतें जिनराज अबै
सुधरे सब काज 'दौल', अचल ऋद्धि पाई ॥४॥

निरखी निरखी मनहर

निरखी निरखी मनहर मूरत तोरी हो जिनन्दा,
खोई खोई आतम निधि निज पाई हो जिनन्दा ॥

ना समझी से अबलो मैंने पर को अपना मान के - २
माया की ममता में डोला, तुमको नहीं पिछान के - २
अब भूलों पर रोता यह मन, मोरा हो जिनन्दा ॥१॥

भोग रोग का घर है मैंने, आज चराचर देखा है - २
आतम धन के आगे जग का झूँठा सारा लेखा है - २
अपने में घुल मिल जाऊँ, वर पावूँ जिनन्दा ॥२॥

तू भवनाशी मैं भववासी, भव से पार उतरना है - २
शुद्ध स्वरूपी होकर तुमसा, शिवरमणी को वरना है - २
ज्ञानज्योति 'सौभाग्य' जगे घट, मोरे हो जिनन्दा ॥३॥

निरखो अंग अंग

निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार

चरण-कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार
पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्मतत्त्व ही सार
यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥१॥

हस्त-युगल जिनवर कहें, पर का कर्ता होय
ऐसी मिथ्याबुद्धि से ही, भ्रमण चतुरगति होय
यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥२॥

लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार
पर दु:खमय गति चतुर में, ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार
यातैं नाशादृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥३॥

अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरशाय
जिनदर्शन कर निजदर्शन पा, सत्गुरु वचन सुहाय
यातैं अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥४॥

नेमि जिनेश्वर

नेमि जिनेश्वर...

नेमि जिनेश्वर तेरी जय जयकार करे हम सारे ॥

भव भय हारी, मम हित कारी, तुम हो ज्ञाता, तुम हो दृष्टा

प्राणी मात्र के प्रभु आपने सारे कष्ट निवारे ।

नेमि जिनेश्वर...

विघ्न विनाशक,स्व-पर प्रकाशक,तुम्हीं महन्ता,तुम भगवन्ता

तीन जगत के ज्ञेयाकार निहारे ।

नेमि जिनेश्वर...

ज्ञेय प्रकाशक, हेय विनाशा, उपादेय निज, तुम दर्शाया

इंद्र सुरेन्द्र नरेन्द्र तुम्हारी आरती उतारें ।

नेमि जिनेश्वर...

पंचपरम परमेष्ठी

पंच परम परमेष्ठी देखे हृदय हर्षित होता है, आनन्द उल्लसित होता है ।
हो ऽऽऽ सम्यग्दर्शन होता है ॥टेक॥

दर्श-ज्ञान-सुख-वीर्य स्वरूपी गुण अनन्त के धारी हैं
जग को मुक्तिमार्ग बताते, निज चैतन्य विहारी हैं
मोक्षमार्ग के नेता देखे, विश्व तत्त्व के ज्ञाता देखे ॥ हृदय - १॥

द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, जो सिद्धालय के वासी हैं
आतम को प्रतिबिम्बित करते, अजर अमर अविनाशी हैं
शाश्वत सुख के भोगी देखे, योगरहित निजयोगी देखे ॥ हृदय - २॥

साधु संघ के अनुशासक जो, धर्मतीर्थ के नायक हैं
निज-पर के हितकारी गुरुवर, देव-धर्म परिचायक हैं
गुण छत्तीस सुपालक देखे, मुक्तिमार्ग संचालक देखे ॥ हृदय - ३॥

जिनवाणी को हृदयंगम कर, शुद्धातम रस पीते हैं
द्वादशांग के धारक मुनिवर, ज्ञानानन्द में जीते हैं
द्रव्य-भाव श्रुत धारी देखे, बीस-पाँच गुणधारी देखे ॥ हृदय - ४॥

निजस्वभाव साधनरत साधु, परम दिगम्बर वनवासी
सहज शुद्ध चैतन्यराजमय, निजपरिणति के अभिलाषी
चलते-फिरते सिद्धप्रभु देखे, बीस-आठ गुणमय विभु देखे ॥ हृदय - ५ ॥

पद्मासद्म

पद्मसद्म पद्मापद पद्मा, मुक्तिसद्म दरशावन है
कलि-मल-गंजन मन अलि रंजन, मुनिजन शरन सुपावन है

जाकी जन्मपुरी कुशंबिका, सुर नर-नाग रमावन है
जास जन्मदिनपूरब षटनव, मास रतन बरसावन है

जा तपथान पपोसागिरि सो, आत्म-ज्ञान थिर थावन है
केवलजोत उदोत भई सो, मिथ्यातिमिर-नशावन है

जाको शासन पंचाननसो, कुमति मतंग नशावन है
राग बिना सेवक जन तारक, पै तसु रुषतुष भाव न है

जाकी महिमा के वरननसों, सुरगुरु बुद्धि थकावन है
'दौल' अल्पमति को कहबो जिमि, शशक गिरिंद धकावन है

पारस प्यारा लागो

पारस प्यारा लागो, चँवलेश्वर प्यारा लागो
थांकी बांकडली झाड़्यां में, गैलो भूल्यो जी म्हारा पारस जी,
म्हैं रस्तो कियां पावांला ॥ पारस प्यारा ... ॥

अब डर लागे छै म्हाने, हर बार पुकारां थांने
थांका पर्वत रा जंगल में, सिंह धड़ूके हो चँवलेश्वर जी,
म्हैं रस्तो कियां पावांला ॥ पारस प्यारा ... ॥

थे राग द्वेष न त्यागा, म्है आया भाग्या भाग्या
थांका पर्वत री भाटा की, ठोकर लागी हो चँवलेश्वर जी,
म्हैं रस्तो कियां पावांला ॥ पारस प्यारा ... ॥

म्हे अजमेर शहर से चाल्या, थांका ऊंचा देख्या माला
म्हाने पेड़्या पेड़्या चढवो, प्यारो लागे हो चँवलेश्वर जी,
म्हैं रस्तो कियां पावांला ॥ पारस प्यारा ... ॥

थांका विशाल दर्शन पाया, जद तन मन से हरषाया
थांकी छतरी की तो शोभा, न्यारी लागे हो चँवलेश्वर जी,
म्हैं रस्तो कियां पावांला ॥ पारस प्यारा ... ॥

थे झूंठ बोलबो छोडो, और धर्म सूं नातो जोडो
म्हारी बांकडली झाड़्यां में, गैलो पावो जी म्हारा सेवक जी,
थे सीधो रस्तो पावोला ॥ पारस प्यारा ... ॥

पारस प्रभु का दर्शन

तर्ज - रिमझिम बरसता सावन

पारस प्रभु का दर्शन होगा, चरणों में उनके तन मन होगा
ऐसा सुन्दर, उज्जवल, अपना जीवन होगा ॥टेक॥

पारस प्रभु को भजूं, नित सांझ और सवेरे
मोह तृष्णा को तजूं, तब ही कुछ काम बने रे
दश विधि धर्म का पालन होगा,
चरणों में उनके तन मन होगा ॥ऐसा॥

फ़िर तो दुनिया के सब ही, झमेले छूट जायेंगे
कर्मों के बन्धन भी सारे, अवश्य छूट जायेंगे
केवल ज्ञान का दर्शन होगा,
चरणों में उनके तन मन होगा ॥ऐसा॥

प्रभु दर्शन कर जीवन की

प्रभु दर्शन कर जीवन की, भीड़ भगी मेरे कर्मन की ॥टेर॥

भव बन भ्रमता हारा था पाया नहीं किनारा था
घड़ी सुखद आई सुमरण की ॥भीड़॥

शान्त छबी मन भाई है, नैनन बीच समाई है
दूर हटूँ नहीं पल छिन भी ॥भीड़॥

निज पद का 'सौभाग्य' वरूं, अरु न किसी की चाह करूँ
सफल कामना हो मन की ॥भीड़॥

प्रभु हम सब का एक

प्रभु हम सब का एक, तू ही है, तारणहारा रे ।
तुम को भूला, फिरा वही नर, मारा मारा रे ॥टेक॥

बड़ा पुण्य अवसर यह आया, आज तुम्हारा दर्शन पाया ।
फूला मन यह हुआ सफल, मेरा जीवन सारा रे ॥१॥

भक्ति में अब चित्त लगाया, चेतन में तब चित ललचाया ।
वीतरागी देव! करो अब, भव से पारा रे ॥२॥

अब तो मेरी ओर निहारो, भवसमुद्र से नाव उबारो ।
'पंकज' का लो हाथ पकड़, मैं पाऊँ किनारा रे ॥३॥

जीवन में मैं नाथ को पाऊँ, वीतरागी भाव बढ़ाऊँ ।
भक्तिभाव से प्रभु चरणन में, जाऊँ-जाऊँ रे ॥४॥

प्रभुजी अब ना भटकेंगे

प्रभु जी अब ना भटकेंगे संसार में,
अब अपनी खबर हमें हो गयी ॥

भूल रहे थे निज वैभव को, पर को अपना माना ।
विष सम पंचेंद्रिय विषयों में, ही सुख हमने जाना ।
पर से भिन्न लखूं निज चेतन ... मुक्ति निश्चित होगी ॥
प्रभु जी अब...

महा पुण्य से हे जिनवर अब, तेरा दर्शन पाया ।
शुद्ध अतीन्द्रिय आनंद रस पीने को,चित्त ललचाया ।
निर्विकल्प निज अनुभूति से ... मुक्ति निश्चित होगी ॥
प्रभु जी अब...

निज को ही जाने पहिचाने, निज में ही रम जाये ।
द्रव्य भाव नोकर्म रहित हो, शाश्वत शिवपद पाये ।
रत्नत्रय निधियां प्रगटाएं .... मुक्ति निश्चित होगी॥
प्रभु जी अब...

बाहुबली भगवान

बाहुबली भगवान का मस्तकाभिषेक,
बारह वर्षों से हम इसकी राह रहे थे टेक,
धन्य धन्य वे लोग यहां जो आज रहे सिर टेक॥ बाहुबली...॥
मस्तकाभिषेक.... महामस्तकाभिषेक

बीते वर्ष सहस्त्र मूर्ति ये तप की गढी हुई,
खडे तपस्वी का प्रतीक बन तब से खडी हुई
श्री चामुण्डराय की माता, इसका श्रेय उन्हीं को जाता
उनके लिये गढी प्रतिमा से लाभान्वित प्रत्येक॥ धन्य...॥

ऋषभ देव पितु मात सुनंदा भ्राता भरत समान,
घुट्टी में श्री बाहुबली को मिला धर्म का ज्ञान
चक्रवर्ती का शीश झुकाकर प्रभुता छोडी प्रभुता पाकर
विजय गर्व से पहले प्रभु ने धरा दिगम्बर वेश॥ धन्य..॥

पर्वत पर नर नारी चले कलशों में नीर भरे,
होड लगी अभिषेक प्रभु का पहले कौन करे
नीर क्षीर की बहती धारा, फ़िर भी ना भीगा तन सारा
ऐसी अन्य विशाल मूर्ति का कहीं नहीं उल्लेख॥ धन्य...॥

ऐसा ध्यान लगाया प्रभु को रहा ना ये भी ध्यान,
किस किस ने चरणार्बिन्दु में बना लिया है स्थान
बात उन्हें ये भी ना पता थी तन लिपटी माधवी लता थी
ये लाखों में एक नहीं हैं, दुनिया भर में एक॥ धन्य...॥

महक रहे चंदन केशर पुष्पों की झडी लगी,
देखन को यह दृश्य भीड यहां कितनी बडी लगी
ऐसी छटा लगे मनभावन, फ़ागुन बन बरसे क्यूं सावन
आज यहां वे जुडे जिन्होंने जोडे पुण्य अनेक॥ धन्य...॥

अपने गुरुवर सहित पधारे मुनि श्री विद्यानंद,
चारु कीर्ति की सौम्य छवि लख हर्षित श्रावक वृंद
नगर नगर से घूम घुमाकर आया मंगल कलश यहां पर
एक सभी की भक्ति भावना लक्ष्य सभी का एक॥ धन्य...॥

गोमटेश का है संदेश धारो अपरिग्रह-वाद,
सब कुछ होते सब कुछ त्यागो वो भी बिना विषाद
भौतिक बल पर मत इतराओ, दया क्षमा की शक्ति बढाओ
आतम हित के हेतु हृदय में जागृत करो विवेक॥ धन्य...॥

भटके हुए राही को

भटके हुए राही को प्रभु राह बता देना,
इस डगमग नैया की प्रभु की लाज बचालेना॥

जग की माया ने मुझे, पथ से भटकाया है,
भोगों की पिपासा ने भव वन में भ्रमाया है,
करुणासागर भगवान, सत पथ दिखला देना ॥

बाहर के वैभव में, मैं ख़ुद को भूल गया,
ममता और माया के, झूले में झूल गया,
अब शरण तेरी आया, गफलत से बचा देना॥

दुःख का दावानल है, चहुँ ओर अंधेरा है,
बोझल इस जीवन में, चौरासी का फेरा है,
बुझते हुए दीपक की, प्रभु ज्योत जगा देना ॥

भव भव रुले हैं

भव भव रुले हैं, न पाया कोई पार है ।
तेरा ही आधार है तेरा ही आधार है ॥

जीवन की नाव यह कर्मों के मार से,
उलझी है बीच बीच गतियों की मार से,
रही सही पतिका तू ही पतवार है ।
तेरा ही आधार है...

सीता के शील को तुने दिपाया है,
सूली से सेठ को आसन बिठाया है,
खिली खिली कलि सा किया नाग हार है ।
तेरा ही आधार है...

महिमा का पार जब सुर नर ना पा सके,
'सौभाग्य' प्रभु गुण तेरे क्या गा सके,
बार बार आपको सादर नमस्कार है ।
तेरा ही आधार है...

भावना की चूनरी

भावना की चुनरी ओढ के जिनमन्दिर में आवजो रे
आवजो आवजो आवजो रे, सारी नगरी बुलावजो रे ॥
भावना की चुनरी...

श्रद्धा के रंग से रंग लो चुनरियां, ज्ञान गुणों से जडी
मंगल उत्सव आज दिवस का, होगी प्रभावना बडी
हो ... लेके श्रद्धा अपार आप आवजो रे,
आप आवजो आवजो आवजो रे, सारी नगरी बुलावजो रे
भावना की चुनरी...

वीतरागता उर में धारी, वेश दिगम्बर लिया
जग को मुक्ति मार्ग बताया, जग का कल्याण किया
हो ... लेके भक्ति अपार आप आवजो रे,
आप आवजो आवजो आवजो रे, सारी नगरी बुलावजो रे
भावना की चुनरी...

मन भाये चित हुलसाये

तर्ज - मन डोले मेरा तन

मन भाये चित हुलसाये मेरे छाया हर्ष अपार रे -
लख वीर तुम्हारी मूरतियां ॥

देख लिया मैंने जग सारा तुमसा नजर ना आये,
वीतराग मुद्रा तुम धारे बैठे ध्यान लगाय-
प्रभू तुम बैठे ध्यान लगाय,
सुरपति आवे, मंगल गावे, नाचे दे दे ताल रे ॥लख॥

अष्ट कर्म को जीत प्रभू तुम पाया केवलज्ञान,
दे उपदेश बहुत जन तारे कहां तक करूं बखान-
प्रभू मैं कहां तक करूं बखान,
भय जाये,मेरे रोग ना आये, मेरे सुधरे काम हजार रे ॥लख॥

राग द्वेष में लिप्त हुआ मैं सत को नहीं पिछाना,
पर वस्तुमको अपना समझा , झूंठे मत को माना-
प्रभू जी उलटे मत को माना,
अब तुम पाये भरम नशाये, 'पंकज' होगा पार रे ॥लख॥

मनहर तेरी मूरतियाँ

मनहर तेरी मूरतियां, मस्त हुआ मन मेरा
तेरा दर्श पाया, पाया, तेरा दर्श पाया ॥

प्यारा प्यारा सिंहासन अति भा रहा, भा रहा
उस पर रूप अनूप तिहारा, छा रहा, छा रहा
पद्मासन अति सोहे रे, नयना उमगे हैं मेरे
चित्त ललचाया, पाया । तेरा दर्श पाया..

तव भक्ति से भव के दुख मिट जाते हैं, जाते हैं
पापी तक भी भव सागर तिर जाते हैं, तिर जाते हैं
शिव पद वह ही पाये रे, शरणा आगत में तेरी
जो जीव आया, पाया । तेरा दर्श पाया..

सांच कहूं कोइ निधि मुझको मिल गयी,मिल गयी
जिसको पाकर मन की कलियां खिल गयी,खिल गयी
आशा पूरी होगी रे, आश लगा के वृद्धि
तेरे द्वार आया, पाया । तेरा दर्श पाया..

महाराजा स्वामी

महाराजा स्वामी हो जी हो जिनराजा स्वामी
थे तो म्हानै त्यारो म्हाका राज
थे तो म्हानै त्यारो म्हाका राज जी, महाराजा स्वामी...॥

थे ही तारन तरण छोजी, थे छो गरीबनवाज
अधम उधारन जान के जी, शरणैं आया री लाज जी ॥

जीव अनंता त्यारिया जी, जाको अंत न पार
अधम उदधि तिर्यंच के जी, बहुत किये भवपार जी ॥

ऐसी सुणकर साख तिहारी, आयो छूं दरबार
भवदधि डूबत काढ मोकूं, सरणैं आया की लाज जी ॥

अर्ज करूं कर जोड के जी, विनवूं बारंबार
'बलदेव' प्रभू है दास तिहारो, दीजो शिवपुर वास जी ॥

महावीर स्वामी

महावीर स्वामी तुम्हारा सहारा,
बिना आपके कौन जग में हमारा ॥

जगत संकटों को, सदा आप हरते-२
तथा शांति संतोष, सुखपूर्ण करते-२
तुम्हीं कल्पतरू, कामधेनु तुम्हीं हो, सभी कामना पूर्ण कर्त्ता तुम्हीं हो ॥

तुम्हीं रत्न चिंतामणी स्वर्णदाता-२
तुम्हीं पाप हर्त्ता तुम्हीं विघ्नधाता-२
तुम्हीं समदर्शी तुम्हीं वीतरागी, तुम्हीं सत्यवक्ता तुम्हीं सर्वत्यागी ॥

तुम्हीं बुद्ध ब्रह्मा महेश्वर व शंकर-२
महादेव ईश्वर अशुभ के शयंकर-२
सती अंजना द्रौपदी सीता माता, मनोरम बनीली हुई जग विख्याता ॥

सुदर्शन श्रीपाल तुम नाम ध्याया-२
सबों के दुखों को क्षणिक में मिटाया-२
नहीं आज शरणा प्रभुजी तुम्हारी, रहेंगे जगत में क्या फ़िर भी दुखारी ॥

परम पूज्य श्रद्धेय तुमको जो ध्यावे, वही इन्द्र भगवान पदवी को पावे

मिलता है सच्चा सुख केवल

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में
मेरी विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

चाहे बैरी कुल संसार रहे, मेरा जीवन मुझ पर भार रहे
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो
पर चित्त न मेरा डगमग हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

चाहे अग्नि में भी जलना हो, चाहे कांटों पे भी चलना हो
चाहे छोड के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

जिव्हा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे
बस काम ये आठों धाम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

मेरे मन मंदिर में आन

मेरे मन-मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान ॥टेक॥

भगवन तुम आनन्द सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर
निशि-दिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान ॥१॥

सुर किन्नर गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते
गाते सब तेरा यशगान, पधारो महावीर भगवान ॥२॥

जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया
तुम हो दयानिधि भगवान, पधारो महावीर भगवान ॥३॥

भगत जनों के कष्ट निवारें, आप तरें हमको भी तारें
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान ॥४॥

आये हैं हम शरण तिहारी, भक्ति हो स्वीकार हमारी
तुमहो करुणा दयानिधान, पधारो महावीर भगवान ॥५॥

रोम-रोम पर तेज तुम्हारा, भू-मण्डल तुमसे उजियारा
रवि-शशि तुमसे ज्योतिर्मान, पधारो महावीर भगवान ॥६॥

मेरे सर पर रख दो भगवन

मेरे सर पर रख दो भगवन, अपने ये दोनों हाथ,
देना हो तो दीजिये, जनम-जनम का साथ ॥

सूना है हमने शरणागत को अपने गले लगाते हो
ऐसा हमने क्या माँगा जो, देने से घबराते हो
चाहे सुख में रख या दुःख में, बस थामें रखियो हाथ ॥१॥

झुलस रहे हैं गम की धुप में, प्यार की छैंया कर दे तू
बिन मांझी के नाव चले ना, अब पतवार पकड़ ले तू
मेरा रास्ता रौशन कर दो, छाई अंधियारी रात ॥२॥

इसी जनम में सेवा देकर, बहुत बड़ा एहसान किया
तू ही मांझी तू ही खिवैया, मैंने तुझे पहचान लिया
रहे सात जनम, जन्मों तक बस रख लो इतनी बात ॥३॥

मैं तेरे ढिंग आया रे

मैं तेरे ढिंग आया रे, पद्म तेरे ढिंग आया ।
मुख मुख से जब सुनी प्रशंसा, चित मेरा ललचाया।
चित मेरा ललचाया रे, पद्म तेरे ढिंग आया ॥

चला मैं घर से तेरे दरश को, वरणूं क्या वरणूं क्या,
वरणूं क्या मैं मेरे हरष को,
मैं क्षण क्षण में नाम तिहारा, रटता रट्ता आया
रटता रट्ता आया रे ...पद्म तेरे ढिंग आया ॥

पथ में मैंने पूछा जिसको, पाया तेरा, पाया तेरा,
पाया तेरा दर्शक उसको,
यह सुन सुन मन हुआ विभोरित, मग नहीं मुझे अघाया
मग नही मुझे अघाया रे ... पद्म तेरे ढिंग आया ॥

सन्मुख तेरे भीड लगी है, भक्ति की, भक्ति की,
भक्ति की इक उमंग जगी है,
सब जय जय का नाद उचारे, शुभ अवसर यह पाया,
शुभ अवसर यह पाया रे ...पद्म तेरे ढिंग आया ॥

सफ़ल कामना कर प्रभू मेरी, पाऊं मैं, पाऊं मैं,
पाऊं मैं चरण रज तेरी,
होगी पुण्य वृद्धि आशा है, दरश तिहारा पाया,
दरश तिहारा पाया रे...पद्म तेरे ढिंग आया ॥

म्हारा आदीश्वर जी

म्हारा आदीश्वर जी की सुन्दर मूरत
....म्हारे मन भाई जी
म्हारे मन भाई म्हारे चित चाही,
....म्हारे मन भाई जी ।

तीन छत्र वांके सिर सोहे,
चौंसठ चंवर ढुराई जी, म्हारे....

रत्न सिंहासन आप विराजो,
नासा दृष्टि लगाई जी, म्हारे....

सेवक अर्ज करे कर जोडे,
आवागमन मिटाओ जी, म्हारे...

रंगमा रंगमा

रंग मा रंग मा रंग मा रे
प्रभु थारा ही रंग मा रंग गयो रे।

आया मंगल दिन मंगल अवसर,
भक्ति मा थारी हूं नाच रह्यो रे॥ प्रभु थारा..

गावो रे गाना आतम राम का,
आतम देव बुलाय रह्यो रे॥ प्रभु थारा..

आतम देव को अंतर में देखा,
सुख सरोवर उछल रह्यो रे॥ प्रभु थारा..

भाव भरी हम भावना ये भायें,
आप समान बनाय लियो रे॥ प्रभु थारा..

समयसार में कुन्दकुन्द देव,
भगवान कही न बुलाय रह्यो रे॥ प्रभु थारा..

आज हमारो उपयोग पलट्यो,
चैतन्य चैतन्य भासि रह्यो रे॥ प्रभु थारा..

रोम रोम पुलकित हो जाये

रोम रो्म पुलकित हो जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय ॥टेक॥
ज्ञानानन्द कलियाँ खिल जायँ, जब जिनवर के दर्शन पाय
जिन-मन्दिर में श्री जिनराज, तन-मन्दिर में चेतनराज
तन-चेतन को भिन्न पिछान, जीवन सफल हुआ है आज ॥

वीतराग सर्वज्ञ-देव प्रभु, आये हम तेरे दरबार
तेरे दर्शन से निज दर्शन, पाकर होवें भव से पार
मोह-महातम तुरत विलाय, जब जिनवर के दर्शन पाय ॥१॥

दर्शन-ज्ञान अनन्त प्रभु का, बल अनन्त आनन्द अपार
गुण अनन्त से शोभित हैं प्रभु, महिमा जग में अपरम्पार
शुद्धातम की महिमा आय, जब जिनवर के दर्शन पाय ॥२॥

लोकालोक झलकते जिसमें, ऐसा प्रभु का केवलज्ञान
लीन रहें निज शुद्धातम में, प्रतिक्षण हो आनन्द महान
ज्ञायक पर दृष्टि जम जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय ॥३॥

प्रभु की अन्तर्मुख-मुद्रा लखि, परिणति में प्रकटे समभाव
क्षण-भर में हों प्राप्त विलय को, पर-आश्रित सम्पूर्ण विभाव
रत्नत्रय-निधियाँ प्रकटाय, जब जिनवर के दर्शन पाय ॥४॥

रोम रोम में नेमिकुंवर के

रोम रोम में नेमि कुंवर के, उपशम रस की धारा...
उपशम रस की धारा
राग द्वेष के बंधन तोडे, वेष दिगम्बर धार ॥ रोम ॥

ब्याह करन को आये, संग बराती लाये
पशुओं को बंधन में देखा, दया सिन्धु लहराये
धिक धिक जग की स्वार्थ वृत्ति, रहे न सुख की धारा॥रोम॥

राजुल अति अकुलाये, नो भव की याद दिलाये
नेमि कहें जग में न किसी का, कोई कभी हो पाय
राग रूप अंगारों द्वारा, चलता है जग सारा ॥ रोम ॥

नो भव का सुमिरण करने में, आतम तत्व विचारें
शाश्वत ध्रुव चैतन्य राज की, महिमा चित में धारें
लहराता वैराग्य सिंधु अब, भायें भावना बारा ॥ रोम ॥

रोम रोम से निकले

रोम रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा, हां नाम तुम्हारा
ऐसी भक्ति करूं प्रभु जी, पाऊं न जन्म दुबारा ॥

जिनमंदिर में आया, जिनवर दर्शन पाया,
अंतर्मुख मुद्रा को देखा, आतम दर्शन पाया
जनम जनम तक ना भूलूंगा, यह उपकार तुम्हारा ॥

अरहंतों को जाना, आतम को पहिचाना,
द्रव्य और गुण पर्यायों से, जिन सम निज को माना
भेद ज्ञान ही महामंत्र है, मोह तिमिर क्षयकारा ॥

पंच महाव्रत धारूं, समिति गुप्ति अपनाऊं,
निर्ग्रंथों के पथ पर चलकर, मोक्ष महल में आऊं
पुण्य पाप की बंध श्रृंखला, नष्ट करूं दुखकारा ॥

देव-शास्त्र-गुरु मेरे, हैं सच्चे हितकारी,
सहज शुद्ध चैतन्य राज की, महिमा जग से न्यारी
भेदज्ञान बिन नहीं मिलेगा, भव का कभी किनारा ॥

वन्दों अद्भुत चन्द्रवीर जिन

वन्दों अद्भुत चन्द्रवीर जिन, भविचकोर चित हारी
चिदानन्द अंबुधि अब उछर्यो भव तप नाशन हारी ॥टेक॥

सिद्धारथ नृप कुल नभ मण्डल, खण्डन भ्रम-तम भारी
परमानन्द जलधि विस्तारन, पाप ताप छय कारी ॥१॥

उदित निरन्तर त्रिभुवन अन्तर, कीरत किरन पसारी
दोष मलंक कलंक अखकि, मोह राहु निरवारी ॥२॥

कर्मावरण पयोध अरोधित, बोधित शिव मगचारी
गणधरादि मुनि उड्गन सेवत, नित पूनम तिथि धारी ॥३॥

अखिल अलोकाकाश उलंघन, जासु ज्ञान उजयारी
'दौलत' तनसा कुमुदिनि मोदन, ज्यों चरम जगतारी ॥४॥

वर्तमान को वर्धमान की

हर आत्मा दुखी है, सुख शांति खो चुकी है,
परदृष्टि होके व्याकुल, महावीर पे रुकी है
महावीर... महावीर...महावीर...महावीर...
हिंसा पीडित विश्व राह महावीर की तकता है,
वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है
पापों के दलदल में फ़ंसकर धर्म सिसकता है, वर्तमान...

हिंसा के बादल छायें संसार पर,
सर्वनाश के दुनिया खडी कगार पर
नहीं शास्त्रों में अब शस्त्रों में होड है,
मानवता रोती है अपनी हार पर
महावीर ही पथभूलों को समझा सकता है, हिंसा पीडित ...॥१॥

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भ्रान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तौऽन्तरहिता।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रगटन-परो-भानुरिव यो,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी-भवतुममे॥

बांधो प्रभु को भक्ति भाव की डोर से,

करो प्रार्थना सब जीवों की ओर से
वीतराग व्यथितों के दुख पर ध्यान दें,
हमको करे कृतार्थ कृपा की कोर से
प्रभु के नयनों से करुणा का नीर झलकता है, हिंसा पीडित ... ॥२॥

वर्धमान के आदर्शों पर ध्यान दो,
हितोपदेशों को अंतर में स्थान दो।
तुम जिसके वंशज जिसकी संतान हो,
होकर एक उसे पूरा सम्मान दो।
मिलकर जीने में ही जीवन की सार्थकता है, हिंसा पीडित... ॥३॥

महामोहांतक-प्रशमनःप्राकस्मिक-भिषङ,
निरापेक्षो बन्धुर्विदित-महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां भव भयभृतामुत्तमगुणो,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी-भवतुममे॥

वह आये तो हर संकट को प्राण हो,
अभय सुरक्षित सर्व सुखी हर प्राण हो।
जियो और जीने दो के महामंत्र से,
विश्व शांति पाये सबका कल्याण हो।
प्रभु की मृदु वाणी में आध्यामिक मादकता है,, हिंसा पीडित ... ॥४॥

वर्धमान ललना से

वर्धमान ललना से कहे त्रिशला माता
लाल मेरे शादी क्यों नहीं रचाता...॥टेक॥

बोले मुस्कुराते वीरा, सुनो मेरी माई,
कितनी ही बार मैने शदियां रचाई, शादियां रचाई फ़िर भी हो sss
शादियां रचाई फ़िर भी, पाई नहीं साता, इसीलिये माता...॥१॥

बोले मुस्कुराते वीरा, जगत के सहारे,
नेमिनाथ हैं ये सच्चे साथी हमारे,
उन मूक प्राणियों का हो sss
उन मूक प्राणियों का हो, रुदन है बुलाता, इसीलिये माता...॥२॥

बोले मुस्कुराते वीरा, सुनो मेरी माई,
नरभव में उम्र हमने थोडी कमाई, भव-भव का दुख भैया हो sss
भव-भव का दुख भैया, सहा नहीं जाता, इसीलिये माता...॥३॥

सुनो मैया आतम का, बन के पुजारी,
तोडूंगा कर्मों की जंजीर सारी, राजपाट वैभव ये हो sss
राजपाट वैभव ये, कुछ न सुहाता, इसीलिये माता...॥४॥

वीतरागी देव

वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहां
मार्ग बताया है जो जग को, कह न सके कोई और यहां ॥टेक॥

हैं सब द्रव्य स्वतंत्र जगत में, कोई न किसी का कार्य करे
अपने अपने स्वचतुष्टय में, सभी द्रव्य विश्राम करे
अपनी अपनी सहज गुफ़ा में, रहते पर से मौन यहां ॥वीतरागी॥

भाव शुभाशुभ का भी कर्ता, बनता जो दीवाना है
ज्ञायक भाव शुभाशुभ से भी, भिन्न न उसने जाना है
अपने से अनजान तुझे, भगवान कहें जिनदेव यहां ॥वीतरागी॥

पुण्य भाव भी पर आश्रित है, उसमें धर्म नही होता
ज्ञान भाव में निज परिणति से बंधन कर्म नहीं होता
निज आश्रय से ही मुक्ति है, कहते हैं जिनदेव यहां ॥वीतरागी॥

वीर प्रभु के ये बोल

वीर प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु! तुझ ही में डोले
तुझ ही में डोले, हाँ तुझ ही में डोले
मन की तू घुंडी को खोल, खोल-खोल-खोल
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥टेक॥

क्यों जाता गिरनार, क्यों जाता काशी, घट ही में है तेरे घट-घट का वासी
अन्तर का कोना टटोल ॥१॥

चारों कषायों को तूने है पाला, आतम प्रभु को जो करती है काला
इनकी तो संगति को छोड़ ॥२॥

पर में जो ढूँढा न भगवान पाया, संसार को ही है तूने बढ़ाया
देखो निजातम की ओर ॥३॥

मस्तों की दुनिया में तू मस्त हो जा, आतम के रंग में ऐसा तू रँग जा
आतम को आतम में घोल ॥४॥

भगवान बनने की ताकत है तुझमें, तू मान बैठा पुजारी हूँ बस मैं
ऐसी तू मान्यता को छोड़ ॥५॥

शुद्धात्मा का श्रद्धान

शुद्धात्मा का श्रद्धान होगा, निज आत्मा तब भगवान होगा
निज में निज, पर में पर भासक, सम्यकज्ञान होगा ॥

नव तत्वों में छुपी हुई जो, ज्योति उसे प्रगटाऐंगे
पर्यायों से पार त्रिकाली, ध्रुव को लक्ष्य बनाऐंगे
शुद्ध चिदानंद रसपान होगा, निज आत्मा तब भगवान होगा ॥१॥
निज में निज....

निज चैतन्य महा हिमगिरि से, परिणति घन टकराऐंगे
शुद्ध अतीन्द्रिय आनंद रसमय, अमृत जल बरसायेंगे
मोह महामल प्रक्षाल होगा, निज आत्मा तब भगवान होगा ॥२॥
निज में निज ....

आत्मा के उपवन में, रत्नत्रय पुष्प खिलायेंगे
स्वानुभूति की सौरभ से, निज नंदन वन महकायेंगे
संयम से सुरभित उद्यान होगा, निज आत्मा तब भगवान होगा ॥३॥
निज में निज ....

शौरीपुर वाले

शौरीपुर वाले शौरीपुर वाले नेमिजी हमारे शौरीपुर वाले
नेमिजी हमारे शौरीपुर वाले ॥

शिवादेवी घर जन्म लियो है, माता की कोख को धन्य कियो है
अंतिम जन्म हुआ प्रभुजी का, जन्म मरण को नाश कियो है
समुद्रविजय के आंखों के तारे...नेमिजी हमारे शौरीपुर वाले ॥

स्वर्ग पुरी से सुरपति आये, ऐरावत हाथी ले आये
पांडुक शिला पर प्रभु को बिठाये, क्षीरोदधि से न्हवन कराये
रतन बरसाये हां न्हवन कराये...नेमिजी हमारे शौरीपुर वाले ॥

देखो भैया इन्द्र भी आये, पंचकल्याणक का उत्सव कराये
प्रभु दर्शन कर अति हरषाये, मंगल तांडव नृत्य रचाये
सभी हरषाये हां खुशियां मनाये...नेमिजी हमारे शौरीपुर वाले ॥

तन से भिन्न निजातम निरखे, निज अंतर का वैभव परखे
भेद ज्ञान की ज्योति जलावे, संयम की महिमा चित लावे
गये गिरनारे गये गिरनारे...नेमिजी हमारे शौरीपुर वाले ॥

श्री अरिहंत छवि लखिके

श्री अरहंत छबि लखि हिरदै, आनन्द अनुपम छाया है ॥टेक॥

वीतराग मुद्रा हितकारी, आसन पद्म लगाया है
दृष्टि नासिका अग्रधार मनु, ध्यान महान बढ़ाया है ।१।

रूप सुधाकर अंजलि भरभर, पीवत अति सुख पाया है
तारन-तरन जगत हितकारी, विरद सचीपति गाया है ।२।

तुम मुख-चन्द्र नयन के मारग, हिरदै माहिं समाया है
भ्रमतम दु:ख आताप नस्यो सब, सुखसागर बढ़ि आया है ।३।

प्रकटी उर सन्तोष चन्द्रिका, निज स्वरूप दर्शाया है
धन्य-धन्य तुम छवि 'जिनेश्वर', देखत ही सुख पाया है ।४।

श्री जिनवर पद ध्यावें जे नर

श्री जिनवर पद ध्यावें जे नर, श्री जिनवर पद ध्यावें हैं ॥

तिनकी कर्म कालिमा विनशे, परम ब्रह्म हो जावें हैं
उपल-अग्नि संयोग पाय जिमि, कंचन विमल कहावें हैं ॥

चन्द्रोज्ज्वल जस तिनको जग में, पण्डित जन नित गावें हैं
जैसे कमल सुगन्ध दशों दिश, पवन सहज फैलावें हैं ॥

तिनहि मिलन को मुक्ति सुन्दरी, चित अभिलाषा लावें हैं
कृषि में तृण जिमि सहज उपजियो, स्वर्गादिक सुख पावें हैं ॥

जनम-जरा-मृत दावानल ये, भाव सलिल तैं बुझावें हैं
'भागचंद' कहाँ तांई वरने, तिनहि इन्द्र शिर नावें हैं ॥

सीमंधर स्वामी

सीमंधर स्वामी, मैं चरनन का चेरा ॥टेक॥
इस संसार असार में कोई, और न रक्षक मेरा ॥सीमंधर॥

लख चौरासी जोनी में मैं, फ़िरि फ़िरि कीनों फ़ेरा
तुम महिमा जानी नहीं प्रभु, देख्या दु:ख घनेरा ॥सीमंधर ॥

भाग उदयतैं पाइया अब, कीजे नाथ निवेरा
बेगी दया करी दीजिये मुझे, अविचल थन-बसेरा ॥सीमंधर॥

नाम लिये अघ ना रहै ज्यों, ऊगें भान अंधेरा
'भूधर' चिंता क्या रही ऐसी, समरथ साहिब तेरा ॥सीमंधर॥

स्वामी तेरा मुखडा

स्वामी तेरा मुखड़ा है मन को लुभाना,
स्वामी तेरा गौरव है मन को डुलाना
देखा ना ऐसा सुहाना-२ ॥स्वामी॥

ये छवि ये तप त्याग जगत का, भाव जगाता आतम बल का
हरता है नरकों का जाना-२ ॥स्वामी॥

जो पथ तूने है अपनाया, वो मन मेरे भी अति भाया
पाऊँ मैं तुम पद लुभाना-२ ॥स्वामी॥

पंचम गति का मैं वर चाहूँ, जीवन का 'सौभाग्य' दिपाऊँ
गूँजे हैं अंतर तराना-२ ॥स्वामी॥

हम यही कामना करते हैं

गोमटेश जय गोमटेश, मम हृदय विराजो-२
गोमटेश जय गोमटेश, जय जय बाहुबली

हम यही कामना करते है, कामना करते हैं,
ऐसा आने वाला कल हो, हो नगर नगर में बाहुबली,
सारी धरती धर्मस्थल हो... हम यही कामना...

हम भेदमतों के समझें पर, आपस में कोई मतभेद ना हो,
ऐसे आचरण करें जिन पर, कोई क्षोभ ना हो कोई खेद ना हो,
जो प्रेम प्रीत की शिक्षा दे, वही धर्म हमारा संबल हो ॥

आराध्य वही हो जिन सबने, मानवता का संदेश दिया,
तुम जीयो सभी को जीने दो, सबके हित यह उपदेश दिया,
उनके सिद्धान्तों को माने, और जीवन का पथ उज्जवल हो ॥

चिंतामणी की चिंता ना करें, जीवन को चिंतामणी जानें,
परिग्रह ना अनावश्यक जोडें, क्या है आवश्यक पहचानें,
क्षण भंगुर सुख के हेतु कभी, नहीं चित्त हमारा चंचल हो ॥

हम नहीं दिगम्बर श्वेताम्बर, तेरहपंथी स्थानकवासी,
सब एक पंथ के अनुयायी, सब एक देव के विश्वासी,
हम जैनी अपना धर्म जैन, इतना ही परिचय केवल हो ॥

सब णमोकार का जाप करें, और पाठ करें भक्तामर का,
नित नियमित पालें पंचशील, और त्याग करें आडम्बर का,
वो कर्म करें जिन कर्मों से, सारे संसार का मंगल हो॥

वैराग्य हुआ जिस पल प्रभु को, कोई रोक नहीं पाया मग में,
अपनी उपमा बन आप खडे, कोई और नहीं इन सा जग में,
इनके सुमिरन से प्राप्त हमें, बाहुबल हो आतम बल हो ॥

हरो पीर मेरी

हरो पीर मेरी त्रिशला के लाला,
मैं सेवक तुम्हारा बड़ा भोला भाला

मुझे ठग लिया अष्ट कर्मों ने स्वामी,
भटकता फिरा मैं बना मूढगामी,
विषय भोग ने मुझपे (हो...-२), ऐसा जादू डाला, हुआ मतवाला

मैं पर को ही अपना समझता रहा हूँ,
वृथा विकथा में उलझता रहा हूँ,
धरम क्या है मैंने कभी (हो.. -२), देखा न भाला, यूँ ही वक्त टाला

न देखा गया तुमसे जग के दुखों को ,
तजा क्षण में अपने सारे सुखों को,
अहिंसा से मेटी तुमने (हो..-२), हिंसा की ज्वाला, हुई दीपमाला

सुना है प्रभो आप सुनते हो सबकी,
आती है पंकज को वो याद तबकी,
सती चंदना का तुमने (हो..-२), संकट था टाला, यह सच है दयाला

हे प्रभो चरणों में

तर्ज : दिल के अरमां आसुओं

हे प्रभो चरणों में तेरे आ गये
भावना अपनी का फ़ल हम पा गये ॥

वीतरागी हो तुम्हीं सर्वज्ञ हो,
सप्त तत्वों के तुम्हीं मर्मज्ञ हो,
मुक्ति का मारग तुम्हीं से पा गये ॥भावना॥

विश्व सारा है झलकता ज्ञान में,
किंतु प्रभुवर लीन हैं निज ध्यान में,
ध्यान में निज ज्ञान को हम पा गये ॥भावना॥

तुमने बताया जगत के सब आत्मा,
द्रव्य दृष्टि से सदा परमात्मा,
आज निज परमात्मा पद पा गये ॥भावना॥

आज मैं परम पदारथ

आज मैं परम पदारथ पायौ
प्रभुचरनन चित लायौ ॥टेक॥

अशुभ गये शुभ प्रगट भये हैं
सहज कल्पतरु छायौ ॥१॥

ज्ञानशक्ति तप ऐसी जाकी
चेतनपद दरसायो ॥२॥

अष्टकर्म रिपु जोधा जीते
शिव अंकूर जमायौ ॥३॥

'दौलत' राम निरख निज प्रभो को उरु
आनन्द न समायो ॥४॥

ओंकारमयी वाणी तेरी

ओंकारमयी वाणी तेरी, जिनधर्म की शान है,
समवशरण देखके, शांत छवि देखके, गणधर भी हैरान हैं ॥

स्वर्ण कमल पर, आसन है तेरा, सौ इंद्र कर रहे गुणगान है,
दृष्टि है तेरी, नासा के ऊपर, सर्वज्ञता ही तेरी शान है,
चाँद सितारों में, लाख हजारों में, तेरी यहां कोई मिसाल नहीं है,
चार मुख दिखते, समोशरण मे, स्वर्ग में भी ऐसा कमाल नही है,
हमको भी मुक्ति मिले हम सब का अरमान है ॥समवशरण॥

सारे जहां में, फ़ैली ये वाणी, गणधर ने गूंथी इसे शास्त्र में,
सच्ची विनय से, श्रद्धा करे तो, ले जाती है मुक्ति के मार्ग में,
कषाय मिटाय, राग को भगाये, इसके श्रवण से ये शांति मिलि है,
सुख का ये सागर, आत्म में रमणकर,
आतम की बगिया में मुक्ति खिलि है,
हम सब भी तुमसा बनें ऐसा ये वरदान है ॥समवशरण॥

मैं हूं त्रिकाली, ज्ञान स्वभावी, दिव्य ध्वनि का यही सार है.,
शक्ति अनंत का, पिण्ड अखंड, पर्याय का भी ये आधार है,
ज्ञेय झलकते हैं, ज्ञान की कला में, ऐसा ये अद्भुत कलाकार है,
सृष्टि को पीता, फ़िर भी अछूता, तुझमें ये ऐसा चमत्कार है,
जग में है महिमा तेरी गूंज रहा नाम है ॥समवशरण॥

करता हूं मैं अभिनंदन

करता हूं मैं अभिनन्दन, स्वीकार करो माँ,
शरणागत अपने बालक का, उद्धार करो माँ।
हे माँ जिनवाणी, हे माँ जिनवाणी॥

मिथ्यात्व वश रुल रहा हूं माँ, अशरण संसार में,
पुण्योदय से आ गया हूं माँ, तेरे दरबार में।
सम्यक हो मेरी बुद्धि, उपकार करो माँ ॥शरणागत...॥

इस पंचम काल में तीर्थंकर, दर्शन हैं नहीं,
सच्चे ज्ञानी गुरु दुर्लभ, मिलते कभी कभी।
अतएव मुझ निराधार की, आधार तुम्हीं माँ ॥शरणागत...॥

जीवादि सात तत्वों का माँ, मर्म बताया,
स्याद्वाद अनेकांत ले, निजरूप जताया।
निजरूप को लखकर माँ निज में लीन रहूं माँ ॥शरणागत...॥

भोगों से उदासीन निज पर की धारूं करुणा,
सम्यक श्रद्धा पूर्वक कषाय परिहरना।
रत्नत्रय पथ पर चलकर शिवनारी वरूं माँ ॥शरणागत...॥

चरणों में आ पडा हूं

चरणों में आ पड़ा हूँ, हे द्‌वादशांग वाणी
मस्तक झुका रहा हूँ, हे द्‌वादशांग वाणी ॥टेक॥

मिथ्यात्व को नशाया, निज तत्त्व को प्रकाशा
आपा-पराया-भासा, हो भानु के समानी ॥१॥

षट्‌ द्रव्य को बताया, स्याद्‌वाद को जताया
भवफन्द से छुड़ाया, सच्ची जिनेन्द्र वाणी ॥२॥

रिपु चार मेरे मग में, जंजीर डाले पग में
ठाड़े हैं मोक्ष-मग में, तकरार मोसों ठानी ॥३॥

दे ज्ञान मुझको माता, इस जग से तोड़ूँ नाता
होवे 'सुदर्शन' साता, नहिं जग में तेरी सानी ॥४॥

जब एक रत्न अनमोल

जब एक रतन अनमोल है तो, रत्नाकर फ़िर कैसा होगा,
जिसकी चर्चा ही है सुन्दर तो, वो कितना सुन्दर होगा,

इसके दीवाने हैं ज्ञानी, हर धुन में वही सवार रहे,
बस एक लक्ष्य अरु एक प्रक्ष्य, हर श्वांस उसी के लिये रहे,
जिसको पाकर सब कुछ पाया, उससे भी बढकर क्या होगा ॥टेक॥

जो वाणी के भी पार कहा, मन भी थक कर के रह जाये,
इन्द्रिय गोचर तो दूर अतीन्द्रिय के भी कल्प में ना आये
अनुभव गोचर कुछ नाम नहीं निर्नाम भी क्या अद्भुत होगा ॥टेक॥

सप्त भंग पढे नौ पूर्व रटे, पर उस का स्वाद नहीं आये,
उनसे ग्रसीते अनपढ भी ले स्वाद सफ़ल होकर जाये,
जड पुद्गल तो अनजान स्वयं, वो ज्ञान तुझे कैसे देगा ॥टेक॥

जिसकी महिमा प्रभु की वाणी, जाती मन मोह को लहराये,
जो साम्य गुणों के रत्नाकर सब हे परमेश्वर फ़रमाये
तू माने या ना भी माने, परमात्मपना सम ना होगा ॥टेक॥

जिनवाणी अमृत रसाल

जिनवाणी अमृत रसाल, रसिया आवो जी सुणवा ॥टेक॥

छह द्रव्यों का ज्ञान करावे, नव तत्त्वों का रहस्य बतावे
आतम तत्त्व है महान रसिया आवोजी ॥१॥

विषय कषाय का नाश करावे, निज आतम से प्रीति बढ़ावे
मिथ्यात्व का होवे नाश रसिया आवोजी ॥२॥

अनेकान्तमय धर्म बतावे, स्याद्वाद शैली कथन में आवे
भवसागर से होवे पार रसिया आवोजी ॥३॥

जो जिनवाणी सुन हरषाए, निश्चय ही वह भव्य कहावे
स्वाध्याय तप है महान् रसिया आवोजी ॥४॥

जिनवाणी की सुनै सो

जिनवाणी के सुनै सो मिथ्यात मिटै,
मिथ्यात मिटै समकित प्रगटै
जैसे प्रात होत रवि ऊगत, रैन तिमिर सब तुरत फ़टै ॥

अनादिकाल की भूल मिटावै, अपनी निधि घट घट मैं उघटै
त्याग विभाव सुभाव सुधारै, अनुभव करतां करम कटै ॥

और काम तजि सेवो वाकौं, या बिन नाहिं अज्ञान घटै
'बुधजन' या भव परभव मांहि, बाकी हुंडी तुरत पटैं ॥

जिनवाणी जग मैया

जिनवाणी जग मैया, जनम दुख मेट दो
जनम दुख मेट दो, मरण दुख मेट दो ॥

बहुत दिनों से भटक रहा हूं, ज्ञान बिना हे मैया
निर्मल ज्ञान प्रदान सु कर दो, तू ही सच्ची मैया ॥

गुणस्थानों का अनुभव हमको, हो जावे जगमैय्या
चढैं उन्हीं पर क्रम से फ़िर, हम होवें कर्म खिपैया ॥

मेट हमारा जन्म मरण दुख, इतनी विनती मैया
तुमको शीश त्रिलोकी नमावे, तू ही सच्ची मैया ॥

वस्तु एक अनेक रूप है, अनुभव सबका न्यारा
हर विवाद का हल हो सकता, स्यादवाद के द्‌वारा ॥

जिनवाणी माँ जिनवाणी माँ

जिनवाणी माँ जिनवाणी माँ, जयवन्तो मेरी जिनवाणी माँ ॥

शुद्धातम का ज्ञान कराती, चिदानन्द रस पान कराती,
कुन्दकुन्द से भेंट कराती, आत्मख्याति का बोध कराती,
जिनवाणी माँ...

नित्यबोधनी माँ जिनवाणी, स्व पर विवेक जगाती वाणी,
मिथ्याभ्रान्ति नशाती वाणी, ज्ञायक प्रभु दरशाती वाणी,
जिनवाणी माँ...

असताचरण नसाती वाणी, सत्य धर्म प्रगटाती वाणी,
भव दुख हरण पियूष समानी, भव दधि तारक नौका जानी,
जिनवाणी माँ...

जो हित चाहो भविजन प्राणी, पढो सुनो ध्याओ जिनवाणी,
स्वानुभूति से करो प्रमानी, शिवपथ को है यही निशानी,
जिनवाणी माँ...

जिनवाणी माता दर्शन की

जिनवाणी माता दर्शन की बलिहारियाँ ॥टेक॥

प्रथम देव अरहन्त मनाऊँ, गणधरजी को ध्याऊँ
कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, तिनको शीश नवाऊँ ॥१॥

योनि लाख चौरासी माहीं, घोर महादु:ख पायो
ऐसी महिमा सुनकर माता, शरण तुम्हारी आयो ॥२॥

जानै थाँको शरणो लीनों, अष्ट कर्म क्षय कीनो
जनम-मरण मिटा के माता, मोक्ष महापद दीनो ॥३॥

ठाड़े श्रावक अरज करत हैं, हे जिनवाणी माता
द्‌वादशांग चौदह पूरव का, कर दो हमको ज्ञाता ॥४॥

जिनवाणी माता रत्नत्रय निधि

जिनवाणी माता रत्नत्रय निधि दीजिये ॥टेक॥

मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चरण में, काल अनादि घूमे,
सम्यग्दर्शन भयौ न तातैं, दु:ख पायो दिन दूने ॥१॥

है अभिलाषा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण दे माता
हम पावैं निजस्वरूप आपनो, क्यों न बनैं गुणज्ञाता ॥२॥

जीव अनन्तानन्त पठाये, स्वर्ग-मोक्ष में तूने
अब बारी है हम जीवन की, होवे कर्म विदूने ॥३॥

भव्यजीव हैं पुत्र तुम्हारे, चहुँगति दु:ख से हारे
इनको जिनवर बना शीघ्र अब, दे दे गुण-गण सारे ॥४॥

औगुण तो अनेक होत हैं, बालक में ही माता
पै अब तुम-सी माता पाई, क्यों न बने गुणज्ञाता ॥५॥

क्षमा-क्षमा हो सभी हमारे दोष अनन्ते भव के
शिव का मार्ग बता दो माता, लेहु शरण में अबके ॥६॥

जयवन्तो जिनवाणी जग में, मोक्षमार्ग प्रवर्तो
श्रावक 'जयकुमार' बीनवे, पद दे अजर अमर तो ॥७॥

जिनवैन सुनत, मोरी भूल भगी

जिनवैन सुनत, मोरी भूल भगी ॥टेक॥
कर्मस्वभाव भाव चेतनको,
भिन्न पिछानन सुमति जगी ॥

निज अनुभूति सहज ज्ञायकता,
सो चिर रुष तुष मैल-पगी
स्यादवाद-धुनि-निर्मल-जलतैं,
विमल भई समभाव लगी ॥१॥

संशयमोहभरमता विघटी,
प्रगटी आतमसोंज सगी
'दौल' अपूरब मंगल पायो,
शिवसुख लेन होंस उमगी ॥२॥

धन्य धन्य जिनवाणी माता शरण

धन्य धन्य जिनवाणी माता, शरण तुम्हारी आये,
परमागम का मंथन करके, शिवपुर पथ पर धाये,
माता दर्शन तेरा रे, भविक को आनंद देता है, हमारी नैया खेता है ॥

वस्तु कथंचित नित्य अनित्य, अनेकांतमय शोभे,
परद्रव्यों से भिन्न सर्वथा, स्वचतुष्टयमय शोभे,
ऐसी वस्तु समझने से, चतुर्गति फ़ेरा कटता है, जगत का फ़ेरा मिटता है ॥

नयनिश्चय व्यवहार निरूपण, मोक्ष मार्ग का करती,
वीतरागता ही मुक्ति पथ, शुभ व्यवहार उचरती,
माता तेरी सेवा से, मुक्ति का मार्ग खुलता है, महा मिथ्यातम धुलता है ॥

तेरे अंचल में चेतन की, दिव्य चेतना पाते,
तेरी अनुपम लोरी क्या है, अनुभव की बरसाते,
माता तेरी वर्षा मे, निजानंद झरना झरता है, अनुपमानंद उछलता है ॥

नव तत्वॊ मे छुपी हुई जो, ज्योति उसे बतलाती,
चिदानंद चैतन्य राज का, दर्शन सदा कराती,
माता तेरे दर्शन से, निजातम दर्शन होता है, सम्यकदर्शन होता है ॥

धन्य धन्य वीतराग वाणी

धन्य धन्य वीतराग वाणी, अमर तेरी जग में कहानी
चिदानन्द की राजधानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥टेक॥

उत्पाद व्यय और ध्रौव्य स्वरूप, वस्तु बखानी सर्वज्ञ भूप
स्याद्वाद तेरी निशानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥१॥

नित्य अनित्य अरू एक अनेक, वस्तु कथंचित भेद अभेद
अनेकान्त रूपा बखानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥२॥

भाव शुभाशुभ बंध स्वरूप, शुद्ध चिदानन्दमय मुक्ति रूप
मारग दिखाती है वाणी, अमर तेरी जग में कहानी ॥३॥

चिदानन्द चैतन्य आनन्दधाम, ज्ञान स्वभावी निजातम राम
स्वाश्रय से मुक्ति बखानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥४॥

महिमा है अगम

महिमा है, अगम जिनागम की ॥टेक॥

जाहि सुनत जड़ भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतम की ॥१॥

रागादिक दुःख कारन जानैं, त्याग बुद्धि दीनी भ्रम की ॥२॥

ज्ञान-ज्योति जागी उर अन्तर, रुचि बाढ़ी पुनि शम-दम की ॥३॥

कर्मबंध की भई निरजरा, कारण परम पराक्रम की ॥४॥

'भागचन्द' शिव-लालच लाग्यो, पहुँच नहीं है जहँ जम की ॥५॥

माँ जिनवाणी तेरो नाम

माँ जिनवाणी तेरो नाम, सारे जग में धन्य है,
तेरी उतारे आरती माँ, तेरो नाम धन्य है ॥

ज्ञान की ज्योति तू ही जलाती,
भक्तों को भगवान तू ही बनाती,
अमृत पिलाती, मार्ग दिखाती, तेरो नाम धन्य है ॥माँ॥

अरिहन्त भासित जिनवाणी प्यारी,
गणधर रची और मुनियों ने धारी,
जीवन की नैया को तू तार दे माँ, तेरो नाम धन्य है ॥माँ॥

तेरे श्रवण से महिमा समाई,
चैतन्य चैतन्य की ध्वनि आई,
सन्तों के हृदय को, ईश्वर के गृह को तेरे गुंजाते छन्द हैं ॥माँ॥

सुनने से संसार का रंग शिथिल हो,
सुनने से ज्ञायक का मंगल मिलन हो,
तुझको नमन है, तुझको नमन है, तेरो नाम धन्य है ॥माँ॥

माँ जिनवाणी बसो हृदय में

माँ जिनवाणी बसो हृदय में, दुख का हो निस्तारा
नित्यबोधनी जिनवर वाणी, वन्दन हो शतवारा ॥टेक॥

वीतरागता गर्भित जिसमें, ऐसी प्रभु की वाणी
जीवन में इसको अपनाएँ, बन जाए सम्यक्ज्ञानी
जनम-जनम तक ना भूलूँगा, यह उपकार तुम्हारा ॥१॥

युग युग से ही महादुखी है, जग के सारे प्राणी
मोहरूप मदिरा को पीकर, बने हुए अज्ञानी
ऐसी राह बता दो माता, मिटे मोह अंधियारा ॥२॥

द्रव्य और गुणपर्यायों का, ज्ञान आपसे होता
चिदानन्द चैतन्यशक्ति का, भान आपसे होता
मैं अपने में ही रम जाऊँ, यही हो लक्ष्य हमारा ॥३॥

भटक भटक कर हार गए अब, तेरी शरण में आए
अनेकांत वाणी को सुनकर, निज स्वरूप को ध्याएँ
जय जय जय माँ सरस्वती, शत शत नमन हमारा ॥४॥

माता तू दया करके

माता तू दया करके, कर्मों से छुड़ा देना
इतनी सी विनय तुमसे, चरणों में जगह देना ॥

माता मैं भटका हूं, माया के अंधेरे में,
कोई नहीं मेरा है, इस कर्मों के रेले में
कोई नहीं मेरा है तुम धीर बंधा देना ॥ माता...॥

जीवन के चौराहे पर मैं सोच रहा कब से,
जाऊं तो किधर जाऊं, यह पूछ रहा मन से
पथ भूल गया हूं मैं, तुम राह दिखा देना ॥ माता...॥

लाखों को उबारा है, मुझको भी उबारो तुम,
मंझधार में नैया है, उसको भी तिरा दो तुम
मंझधार में अटका हूं, उस पार लगा देना ॥ माता...॥

म्हारी मां जिनवाणी

म्हारी माँ जिनवाणी थारी हो जयजयकार ॥

चरणां में राखी लीजो, भव से अब तारी लीजो
कर दीज्यो इतनो उपकार ॥म्हारी॥

कुंदकुंद सा थारा बेटा , दुखडा सब जग का मेटा
कर दीज्यो इतनो उपकार ॥म्हारी॥

जिनवाणी सुन हरषाये, निश्चित ही भव्य कहावे
हो जावे भव से पार ॥म्हारी॥

तत्त्वों का सार बतावे, ज्ञायक से भेंट करावे
कियो अनंत उपकार ॥म्हारी॥

ये शाश्वत सुख का प्याला

ये शाश्वत सुख का प्याला, कोई पियेगा अनुभव वाला॥

ध्रुव अखंड है, आनंद कंद है, शुद्ध बुद्ध चैतन्य पिण्ड है
ध्रुव की फ़ेरो माला ॥कोई॥

मंगलमय है मंगलकारी, सत चित आनंद का है धारी
ध्रुव का हो उजियारा ॥कोई॥

ध्रुव का रस तो ज्ञानी पावे, जन्म मरण का दुःख मिटावे
ध्रुव का धाम निराला ॥कोई॥

ध्रुव की धुनी मुनी रमावे, ध्रुव के आनंद में रम जावे
ध्रुव का स्वाद निराला ॥कोई॥

ध्रुव के रस में हम रम जावें, अपूर्व अवसर कब यह आवे
ध्रुव का हो मतवाला ॥कोई॥

शरण कोई नहीं जग में

शरण कोई नहीं जग में, शरण बस है जिनागम का
जो चाहो काज आतम का, तो शरणा लो जिनागम का ॥

जहाँ निज सत्व की चर्चा, जहाँ सब तत्त्व की बातें
जहाँ शिवलोक की कथनी, तहाँ डर है नहीं यम का ॥१॥

इसी से कर्म नसते हैं, इसी से भरम भजते हैं
इसी से ध्यान धरते हैं, विरागी वन में आतम का ॥२॥

भला यह दाव पाया है, जिनागम हाथ आया है
अभागे दूर क्यों भागो, भला अवसर समागम का ॥३॥

जो करना है सो अब करलो, बुरे कामों से अब डरलो
कहे 'मुलतान' सुन भाई, भरोसा है न इक पल का ॥४॥

शांती सुधा बरसाये

शांति सुधा बरसाए जिनवाणी
वस्तुस्वरूप बताए जिनवाणी ॥टेक॥

पूर्वापर सब दोष रहित है, वीतराग मय धर्म सहित है
परमागम कहलाए जिनवाणी ॥१॥

मुक्ति वधू के मुख का दरपण, जीवन अपना कर दें अरपण
भव समुद्र से तारे जिनवाणी ॥२॥

रागद्वेष अंगारों द्वारा, महाक्लेश पाता जग सारा
सजल मेघ बरसाए जिनवाणी ॥३॥

सात तत्त्व का ज्ञान करावे, अचल विमल निज पद दरसावे
सुख सागर लहराए जिनवाणी ॥४॥

सांची तो गंगा

सांची तो गंगा यह वीतरागवानी
अविच्छन्न धारा निज धर्मकी कहानी ॥टेक॥

जामें अति ही विमल अगाध ज्ञानपानी
जहाँ नहीं संशयादि पंककी निशानी ॥१॥

सप्तभंग जहँ तरंग उछलत सुखदानी
संतचित मरालवृंद रमैं नित्य ज्ञानी ॥२॥

जाके अवगाहनतैं शुद्ध होय प्रानी
'भागचन्द' निहचै घटमाहिं या प्रमानी ॥३॥

सीमंधर मुख से

सीमंधर मुख से फ़ुलवा खिरे, जाकी कुन्दकुन्द गूंथें माल रे
जिनजी की वाणी भली रे ॥

वाणी प्रभू मन लागे भली, जिसमें सार समय शिरताज रे ॥टेक॥

गूंथा पाहुड अरु गूंथा पंचास्ति, गूंथा जो प्रवचनसार रे ॥टेक॥

गूंथा नियमसार, गूंथा रयणसार, गूंथा समय का सार रे ॥टेक॥

स्याद्वादरूपी सुगन्धी भरा जो, जिनजी का ओंकारनाद रे ॥टेक॥

वन्दू जिनेश्वर, वन्दू मैं कुन्दकुन्द, वन्दू यह ओंकार नाद रे ॥टेक॥

हृदय रहो, मेरे भावे रहो, मेरे ध्यान रहो जिनबैन रे ॥टेक॥

जिनेश्वर देव की वाणी की गूंज, गूंजती रहो दिन रात रे ॥टेक॥

सुनकर वाणी जिनवर की

सुनकर वाणी जिनवर की म्हारे हर्ष हिये ना समाय जी ॥

काल अनादि की तपन बुझानी, निज निधि मिली अथाह जी
सुनकर वाणी जिनवर की म्हारे हर्ष हिये ना समाय जी ॥

संशय भ्रम और विपर्यय नाशा, सम्यक बुद्धि उपजाय जी
सुनकर वाणी जिनवर की म्हारे हर्ष हिये ना समाय जी ॥

नरभव सफ़ल भयो अब मेरो, बुधजन भेंटत पाय जी
सुनकर वाणी जिनवर की म्हारे हर्ष हिये ना समाय जी ॥

हे जिनवाणी माता तुमको लाखों प्रणाम

हे जिनवाणी माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम
शिवसुखदानी माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥

तू वस्तु-स्वरूप बतावे, अरु सकल विरोध मिटावे
हे स्याद्वाद विख्याता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥

तू करे ज्ञान का मण्डन, मिथ्यात कुमारग खण्डन
हे तीन जगत की माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥

तू लोकालोक प्रकाशे, चर-अचर पदार्थ विकाशे
हे विश्वतत्त्व की ज्ञाता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥

शुद्धातम तत्त्व दिखावे, रत्नत्रय पथ प्रकटावे
निज आनन्द अमृतदाता! तुमको लाखों प्रणाम,तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥

हे मात! कृपा अब कीजे, परभाव सकल हर लीजे
'शिवराम' सदा गुण गाता तुमको लाखों प्रणाम,तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥

हे शारदे मां

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें तार दे माँ॥

मुनियों ने समझी, गुणियों ने जानी,
शास्त्रों की भाषा, आगम की वाणी।
हम भी तो जानें, हम भी तो समझें,
विद्या का फ़ल तो हमें माँ तू देना॥

तू ज्ञानदायी हमें ज्ञान दे दे,
रत्नत्रयों का हमें दान दे दे।
मन से हमारे मिटा दे अंधेरा,
हमको उजालों का शिवद्वार दे माँ॥

तू मोक्ष दायी ये संगीत तुझपे,
हर शब्द तेरा है हर भाव तुझमें।
हम हैं अकेले हम हैं अधूरे,
तेरी शरण माँ हमें तार देना॥

ऐसा योगी क्यों न अभयपद पावै

ऐसा योगी क्यों न अभयपद पावै, सो फेर न भवमें आवै ॥

संशय विभ्रम मोह-विवर्जित, स्वपर स्वरूप लखावै
लख परमातम चेतनको पुनि, कर्मकलंक मिटावै ॥१॥

भवतनभोगविरक्त होय तन, नग्न सुभेष बनावै
मोहविकार निवार निजातम-अनुभव में चित लावै ॥२॥

त्रस-थावर-वध त्याग सदा, परमाद दशा छिटकावै
रागादिकवश झूठ न भाखै, तृणहु न अदत गहावै ॥३॥

बाहिर नारि त्यागि अंतर, चिद्‌ब्रह्म सुलीन रहावै
परमाकिंचन धर्मसार सो, द्‌विविध प्रसंग बहावै ॥४॥

पंच समिति त्रय गुप्ति पाल, व्यवहार-चरनमग धावै
निश्चय सकल कषाय रहित ह्वै, शुद्धातम थिर थावै ॥५॥

कुंकुम पंक दास रिपु तृण मणि, व्याल माल सम भावै
आरत रौद्र कुध्यान विडारे, धर्मशुकलको ध्यावै ॥६॥

जाके सुखसमाज की महिमा, कहत इन्द्र अकुलावै
'दौल' तासपद होय दास सो, अविचलऋद्धि लहावै ॥७॥

ऐसे मुनिवर देखें

ऐसे मुनिवर देखें वन में, जाके राग दोष नहिं मन में ॥टेक॥

ग्रीष्म ऋतुशिखर के ऊपर, [वो तो] मगन रहे ध्यानन में ॥१॥

चातुर्मास तरू तल ठाड़े, [वो तो] बून्द सहे छिन-२ में ॥२॥

शीत मास दरिया के किनारे, [वो तो] धीरज धारे तन में ॥३॥

ऐसे गुरू को नितप्रति सेऊं, [हम तो] देत ढोक चरणन में ॥४॥

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ॥टेक॥

आप तरैं अरु पर को तारैं, निष्पृही निर्मल हैं ॥१॥

तिल तुष मात्र संग नहिं जिनके, ज्ञान-ध्यान गुण बल हैं ॥२॥

शांत दिगम्बर मुद्रा जिनकी, मन्दर तुल्य अचल हैं ॥३॥

'भागचन्द' तिनको नित चाहें, ज्यों कमलनि को अलि हैं ॥४॥

कबधौं मिलै मोहि श्रीगुरु

कबधौं मिलै मोहि श्रीगुरु मुनिवर, करि हैं भवोदधि पारा हो ॥टेक॥

भोगउदास जोग जिन लीनों, छाँडि परिग्रहभारा हो
इन्द्रिय दमन वमन मद कीनो, विषय कषाय निवारा हो ॥१॥

कंचन काँच बराबर जिनके, निंदक बंदक सारा हो
दुर्धर तप तपि सम्यक निज घर, मनवचतनकर धारा हो ॥२॥

ग्रीषम गिरि हिम सरिता तीरै, पावस तरुतल ठारा हो
करुणाभीन चीन त्रसथावर, ईर्यापंथ समारा हो ॥३॥

मार मार व्रत धार शील दृढ़, मोह महामल टारा हो
मास छमास उपास वास वन, प्रासुक करत अहारा हो ॥४॥

आरत रौद्रलेश नहिं जिनके, धर्म शुकल चित धारा हो
ध्यानारूढ़ गूढ़ निज आतम, शुधउपयोग विचारा हो ॥५॥

आप तरहिं औरनको तारहिं, भवजलसिंधु अपारा हो
'दौलत' ऐसे जैन-जतिनको, नितप्रति धोक हमारा हो ॥६॥

गुरु रत्नत्रय के धारी

तर्ज : सूरज कब दूर गगन

गुरु रत्नत्रय के धारी, निज आतम में विहारी,
वे कुन्दकुन्द अविकारी, हैं निश्चय शिवमगचारी
गुरुवर को हमारा वंदन है, चरणों में अर्चन है ॥

काया की ममता को टारे, सहते परिषह भारी,
पंच महाव्रत के हो धारी, तीन रतन भंडारी ॥
आतम निधि अविकारी, संवर भूषण के धारी,
वे कुन्दकुन्द शिवचारी, है निर्मल सुक्खकारी ॥टेक॥

तुम भेदज्ञान की ज्योति जलाकर, शुद्धातम में रमते,
क्षण क्षण में अंतर्मुख होकर, सिद्धों से बातें करते ॥
तेरे पावन चरणों में, मस्तक झुका हम देंगें,
तेरी महिमा नित गाकर, निज की महिमा पावेंगें ॥टेक॥

सम्यकदर्शन ज्ञान चरण तुम, आचारों के धारी,
मन वच तन का तज आलम्बन, निज चैतन्य विहारी ॥
गुरु जब हम तुझको ध्यायें, तेरी शरणा को पायें,
तेरा नाम जपेगा जो नित, मनवांछित फ़ल पा जायें ॥टेक॥

धन धन जैनी साधु...

धन धन जैनी साधु अबाधित, तत्त्वज्ञानविलासी हो ॥टेक॥

दर्शन-बोधमयी निजमूरति, जिनकों अपनी भासी हो
त्यागी अन्य समस्त वस्तुमें, अहंबुद्धि दुखदा-सी हो ॥१॥

जिन अशुभोपयोग की परनति, सत्तासहित विनाशी हो
होय कदाच शुभोपयोग तो, तहँ भी रहत उदासी हो ॥२॥

छेदत जे अनादि दुखदायक, दुविधि बंधकी फाँसी हो
मोह क्षोभ रहित जिन परनति, विमल मयंककला-सी हो ॥३॥

विषय-चाह-दव-दाह खुजावन, साम्य सुधारस-रासी हो
'भागचन्द' ज्ञानानंदी पद, साधत सदा हुलासी हो ॥४॥

धनि मुनि जिन यह

धनि मुनि जिन यह, भाव पिछाना ॥
तनव्यय वांछित प्रापति मानी, पुण्य उदय दुख जाना ॥धनि॥

एकविहारी सकल ईश्वरता, त्याग महोत्सव माना
सब सुखको परिहार सार सुख, जानि रागरुष भाना ॥धनि॥

चित्स्वभावको चिंत्य प्रान निज, विमल ज्ञानदृगसाना
'दौल' कौन सुख जान लह्यौ तिन, करो शांतिरसपाना ॥२॥

धनि मुनि निज आतमहित कीना

धनि मुनि निज आतमहित कीना
भव प्रसार तप अशुचि विषय विष, जान महाव्रत लीना ॥

एकविहारी परिग्रह छारी, परीसह सहत अरीना
पूरव तन तपसाधन मान न, लाज गनी परवीना ॥१॥

शून्य सदन गिर गहन गुफामें, पदमासन आसीना
परभावनतैं भिन्न आपपद, ध्यावत मोहविहीना ॥२॥

स्वपरभेद जिनकी बुधि निजमें, पागी वाहि लगीना
'दौल' तास पद वारिज रजसे, किस अघ करे न छीना ॥३॥

धन्य मुनिराज हमारे हैं

धन्य मुनिराज हमारे हैं, हमें प्राणों से प्यारे हैं - २

धन्य मुनिराज की मुद्रा, धन्य मुनिराज की निद्रा
धन्य मुनिराज की चर्या, धन्य मुनिराज की चर्चा
धन्य मुनिराज की समता, धन्य मुनिराज की क्षमता ॥१-धन्य॥

धन्य मुनिराज की गुप्ती, धन्य संसार से विरक्ति
धन्य मुनिराज की भक्ति, धन्य मुनिराज की शक्ति
धन्य मुनिराज का वैभव, धन्य मुनिराज का गौरव ॥२-धन्य॥

धन्य मुनिराज का आहार, धन्य मुनिराज का विहार
धन्य मुनिराज का संयम, धन्य मुनिराज का उद्‌यम
धन्य मुनिराज का अध्ययन, धन्य मुनिराज का चिंतन ॥३-धन्य॥

धन्य मुनिराज का सन्देश, धन्य मुनिराज का उपदेश
धन्य मुनिराज की दृष्टी, धन्य आनन्द की वृष्टि
धन्य मुनिराज का जीवन, है शत शत बार उन्हें वंदन ॥४-धन्य॥

धन्य मुनीश्वर आतम हित में

धन्य मुनीश्वर आतम हित में छोड़ दिया परिवार,
कि तुने छोड़ दिया परिवार ।
धन छोड़ा वैभव सब छोड़ा, समझा जगत असार,
कि तुमने छोड़ दिया संसार ॥टेक॥

काया की ममता को टारी, करते सहन परीषह भारी
पंच महाव्रत के हो धारी, तीन रतन के हो भंडारी ॥
आत्म स्वरूप में झुलते, करते निज आतम-उद्धार,
कि तुमने छोड़ा सब घर बार ॥१॥

राग-द्वेष सब तुमने त्यागे, वैर-विरोध हृदय से भागे
परमातम के हो अनुरागे, वैरी कर्म पलायन भागे ॥
सत् सन्देश सुना भविजन को, करते बेड़ा पार,
कि तुमने छोड़ा सब घर बार ॥२॥

होय दिगम्बर वन में विचरते, निश्चल होय ध्यान जब करते
निजपद के आनंद में झुलते, उपशम रस की धार बरसते ॥
मुद्रा सौम्य निरख कर, मस्तक नमता बारम्बार,
कि तुमने छोड़ा सब घर बार ॥३॥

नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ

नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ, परम दिगम्बर साधु
महाव्रतधारी धारी...धारी महाव्रत धारी ॥टेक॥

राग-द्वेष नहिं लेश जिन्हों के मन में है..तन में है
कनक-कामिनी मोह-काम नहिं तन में है...मन में है ॥
परिग्रह रहित निरारम्भी, ज्ञानी वा ध्यानी तपसी
नमो हितकारी...कारी, नमो हितकारी ॥१॥

शीतकाल सरिता के तट पर, जो रहते..जो रहते
ग्रीष्म ऋतु गिरिराज शिखर चढ़, अघ दहते...अघ दहते ॥
तरु-तल रहकर वर्षा में, विचलित न होते लख भय
वन अँधियारी...भारी, वन अँधियारी ॥२॥

कंचन-काँच मसान-महल-सम, जिनके हैं...जिनके हैं
अरि अपमान मान मित्र-सम, जिनके हैं..जिनके हैं ॥
समदर्शी समता धारी, नग्न दिगम्बर मुनिवर
भव जल तारी...तारी, भव जल तारी ॥३॥

ऐसे परम तपोनिधि जहाँ-जहाँ, जाते हैं...जाते हैं
परम शांति सुख लाभ जीव सब, पाते हैं...पाते हैं ॥
भव-भव में सौभाग्य मिले, गुरुपद पूजूँ ध्याऊँ
वरूँ शिवनारी... नारी, वरूँ शिवनारी ॥४॥

निर्ग्रंथों का मार्ग

निर्ग्रंथों का मार्ग हमको प्राणों से भी प्यारा है...
दिगम्बर वेश न्यारा है... निर्ग्रंथों का मार्ग....॥

शुद्धात्मा में ही, जब लीन होने को, किसी का मन मचलता है,
तीन कषायों का, तब राग परिणति से, सहज ही टलता है,
वस्त्र का धागा.... वस्त्र का धागा नहीं फ़िर उसने तन पर धारा है ॥दिग.॥

पंच इंद्रिय का, निस्तार नहीं जिसमें, वह देह ही परिग्रह है,
तन में नहीं तन्मय, है दृष्टि में चिन्मय, शुद्धात्मा ही गृह है,
पर्यायों से पार... पर्यायों से पार त्रिकाली ध्रुव का सदा सहारा है ॥दिग.॥

मूलगुण पालन, जिनका सहज जीवन, निरन्तर स्व-संवेदन,
एक ध्रुव सामान्य में ही सदा रमते, रत्नत्रय आभूषण,
निर्विकल्प अनुभव... निर्विकल्प अनुभव से ही जिनने निज को श्रंगारा है ॥

आनंद के झरने, झरते प्रदेशों से, ध्यान जब धरते हैं,
मोह रिपु क्षण में, तब भस्म हो जाता, श्रेणी जब चढते हैं,
अंतर्मुहूर्त मे... अंतर्मुहूर्त में ही जिनने अनन्त चतुष्टय धारा है ॥दिग.॥

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी
हरषि-हरषि बहु गरजि-गरजि के मिथ्या तपन हरी ॥टेक॥

सरधा भूमि सुहावनि लागी संशय बेल हरी
भविजन मन सरवर भरि उमड़े समुझि पवन सियरी ॥१॥

स्याद्वाद नय बिजली चमके परमत शिखर परी
चातक मोर साधु श्रावक के हृदय सु भक्ति भरी ॥२॥

जप तप परमानन्द बढ़्यो है, सुखमय नींव धरी
'द्यानत' पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी ॥३॥

परम दिगम्बर मुनिवर देखे

परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है
आनन्द उलसित होता है, हो-हो सम्यग्दर्शन होता है ॥

वास जिनका वन-उपवन में, गिरि-शिखर के नदी तटे
वास जिनका चित्त गुफा में, आतम आनन्द में रमे ॥१॥

कंचन-कामिनी के त्यागी, महा तपस्वी ज्ञानी-ध्यानी
काया की ममता के त्यागी, तीन रतन गुण भण्डारी ॥२॥

परम पावन मुनिवरों के, पावन चरणों में नमूँ
शान्त-मूर्ति सौम्य-मुद्रा, आतम आनन्द में रमूँ ॥३॥

चाह नहीं है राज्य की, चाह नहीं है रमणी की
चाह हृदय में एक यही है, शिव-रमणी को वरने की ॥४॥

भेद-ज्ञान की ज्योति जलाकर, शुद्धातम में रमते हैं
क्षण-क्षण में अन्तर्मुख हो, सिद्धों से बातें करते हैं ॥५॥

परम दिगम्बर यती

परम दिगम्बर यती, महागुण व्रती, करो निस्तारा
नहीं तुम बिन कौन हमारा ॥टेक॥

तुम बीस आठ गुणधारी हो, जग जीवमात्र हितकारी हो
बाईस परीषह जीत धरम रखवारा ॥१॥

तुम आतमध्यानी ज्ञानी हो, शुचि स्वपर भेद विज्ञानी हो
है रत्नत्रय गुणमंडित हृदय तुम्हारा ॥२॥

तुम क्षमाशील समता सागर, हो विश्व पूज्य वर रत्नाकर
है हितमित सत उपदेश तुम्हारा प्यारा ॥३॥

तुम प्रेममूर्ति हो समदर्शी, हो भव्य जीव मन आकर्षी
है निर्विकार निर्दोष स्वरूप तुम्हारा ॥४॥

है यही अवस्था एक सार, जो पहुँचाती है मोक्ष द्वार
'सौभाग्य' आपसा बाना होय हमारा ॥५॥

मुनिवर आज मेरी कुटिया में

मुनिवर आज मेरी कुटिया में आये हैं,
चलते फ़िरते.... चलते फ़िरते सिद्ध प्रभु आये हैं ॥

हाथ कमंडल बगल में पीछी है, मुनिवर पे सारी दुनिया रीझी है,
नगन दिगम्बर... नगन दिगम्बर मुनिवर आये हैं ॥

अत्र अत्र तिष्ठो हे मुनिवर ! भूमि शुद्धि हमने कराई है,
आहार कराके... आहार कराके नर नारी हर्षाये हैं ॥

प्रासुक जल से चरण पखारे हैं, गंधोदक पा भाग्य संवारे हैं,
शुद्ध भोजन के... शुद्ध भोजन के ग्रास बनाये हैं ॥

नगन दिगम्बर मुद्रा धारी हैं, वीतरागी मुद्रा अति प्यारी है,
धन्य हुए ये... धन्य हुए ये नयन हमारे हैं ॥

नगन दिगम्बर साधु बडे प्यारे हैं, जैन धरम के ये ही सहारे हैं,
ज्ञान के सागर... ज्ञान के सागर ज्ञान बरसाये हैं ॥

मुनिवर को आहार

आया पुण्य योग से अवसर, आये गुरुवर तेरे द्वार
अक्षय पुण्य कमाले देकर, मुनिवर को आहार ॥

गिरिवर माने हार, देख कर गुरुवर की ऊँचाई
ज्ञान के सागर के आगे, क्या सागर की गहराई ॥
मन में जिनरूप संजोये-२, करे वन वन मुनि विहार ॥१-अक्षय॥

नवधा भक्ति लिए हृदय में, तुम आहार कराना
श्रावक धर्म को ध्यान में रखना, कहीं भूल न जाना ॥
मुनिवर के रूप में जिनवर-२, करते हैं भोग स्वीकार ॥२-अक्षय॥

कर पड़गाहन, उच्चासन धर, करो पाद प्रक्षालन
पूजा और प्रणाम करो, कर शुद्ध वचन काया मन ॥
रख ध्यान कि जल और भोजन, ये शुद्ध हो सभी प्रकार ॥३-अक्षय॥

पुण्यमयी वे जीव है जो, मुनि को आहार कराते
अरे मुनिवर से वर पाकर, श्रावक भवसागर तर जाते ॥
कहे गुणी, मुनि की सेवा-२, खोले मुक्ति का द्वार ॥४-अक्षय॥

म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर आया

म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर आया, सब मिल दर्शन कर लो,
हाँ, सब मिल दर्शन कर लो
बार-बार आना मुश्किल है, भाव भक्ति उर भर लो,
हाँ, भाव भक्ति उर भर लो ॥टेक॥

हाथ कमंडलु काठ को, पीछी पंख मयूर
विषय-वास आरम्भ सब, परिग्रह से हैं दूर
श्री वीतराग-विज्ञानी का कोई, ज्ञान हिया विच धर लो, हाँ ॥१॥

एक बार कर पात्र में, अन्तराय अघ टाल
अल्प-अशन लें हो खड़े, नीरस-सरस सम्हाल
ऐसे मुनि महाव्रत धारी, तिनके चरण पकड़ लो, हाँ ॥२॥

चार गति दुःख से टरी, आत्मस्वरूप को ध्याय
पुण्य-पाप से दूर हो, ज्ञान गुफा में आय
'सौभाग्य' तरण तारण मुनिवर के, तारण चरण पकड़ लो, हाँ ॥३॥

वे मुनिवर कब मिली हैं उपगारी

वे मुनिवर कब मिली हैं उपगारी
साधु दिगम्बर, नग्न निरम्बर, संवर भूषण धारी ॥टेक॥

कंचन-काँच बराबर जिनके, ज्यों रिपु त्यों हितकारी
महल मसान, मरण अरु जीवन, सम गरिमा अरु गारी ॥१॥

सम्यग्ज्ञान प्रधान पवन बल, तप पावक परजारी
शोधत जीव सुवर्ण सदा जे, काय-कारिमा टारी ॥२॥

जोरि युगल कर 'भूधर' विनवे, तिन पद ढोक हमारी
भाग उदय दर्शन जब पाऊँ, ता दिन की बलिहारी ॥३॥

शान्ति सुधा बरसा गये

शान्ति सुधा बरसा गये गुरु तोहि बिरियां,
तत्त्वज्ञान समझा रहे गुरु तोहि बिरियां ॥

अनेकांत और स्याद्वाद पथ दरशाया,
सुनकर के सारे जग का मन हरषाया,
इन पे निछावर हीरा मोती और मणियां,
ज्ञान सुधा बरसा गये गुरु तोहि बिरिया ॥तत्त्व॥

निश्चय और व्यवहार तुम्हीं ने समझाया,
बडे बडे विद्वानों के भी मन भाया,
स्वाध्याय प्रवचन चिंतन गुरु की किरिया ॥तत्त्व॥

समयसार के गणधर बनकर तुम आये,
कर दिये अंधेरे दूर हृदय में जो छाये,
मैं पडूं हजारों बार गुरु तोरी पैया ॥तत्त्व॥

शुद्धातम तत्व विलासी रे

शुद्धातम तत्व विलासी रे, मुनि मगन नगन वनवासी रे,

क्षण क्षण में अंतर्मुख होते,नित सहज प्रत्याशी रे,
मुनि...

शांत दिगम्बर मुद्रा जिनकी, मंदर अचल प्रवासी रे,
मुनि...

ज्यों निःसंग वायु सम निर्मल, त्यों निर्लेप अकासी रे,
मुनि...

विनय शुभोपयोग की परिणति, दत्ता सहज विनाशी रे,
मुनि...

श्री मुनि राजत समता संग

श्री मुनि राजत समता संग, कायोत्सर्ग समाहित अंग ॥टेक॥

करतैं नहिं कछु कारज तातैं, आलम्बित भुज कीन अभंग
गमन काज कछु है नहिं तातैं, गति तजि छाके निज रस रंग ॥

लोचन तैं लखिवो कछु नाहीं, तातैं नाशादृग अचलंग
सुनिये जोग रह्यो कछु नाहीं, तातैं प्राप्त इकन्त-सुचंग ॥

तह मध्याह्न माहिं निज ऊपर, आयो उग्र प्रताप पतंग
कैधौं ज्ञान पवन बल प्रज्वलित, ध्यानानल सौं उछलि फुलिंग ॥

चित्त निराकुल अतुल उठत जहँ, परमानन्द पियूष तरंग
` 'भागचन्द' ऐसे श्री गुरु-पद, वंदत मिलत स्वपद उत्तंग ॥

संत साधु बन के विचरूँ

संत साधु बन के विचरूँ, वह घड़ी कब आयेगी
चल पड़ूँ मैं मोक्ष पथ में, वह घड़ी कब आयेगी ॥टेक॥

हाथ में पीछी कमण्डलु, ध्यान आतम राम का
छोड़कर घरबार दीक्षा की घड़ी कब आयेगी ॥१॥

आयेगा वैराग्य मुझको, इस दु:खी संसार से
त्याग दूँगा मोह ममता, वह घड़ी कब आयेगी ॥२॥

पाँच समिति तीन गुप्ति, बाईस परिषह भी सहूँ
भावना बारह जु भाऊँ, वह घड़ी कब आयेगी ॥३॥

बाह्य उपाधि त्याग कर, निज तत्त्व का चिंतन करूँ
निर्विकल्प होवे समाधि, वह घड़ी कब आयेगी ॥४॥

भव-भ्रमण का नाश होवे, इस दु:खी संसार से
विचरूँ मैं निज आतमा में, वह घड़ी कब आयेगी ॥५॥

सिद्धों की श्रेणी में आने वाला

सिद्धों की श्रेणी में आने वाला जिनका नाम है,
जग के उन सब मुनिराजों को मेरा नम्र प्रणाम है ॥जग..॥

मोक्ष मार्ग के अंतिम क्षण तक, चलना जिनको इष्ट है,
जिन्हें न च्युत कर सकता पथ से, कोई विघ्न अनिष्ट है,
दृढता जिनकी है अगाध और, जिनका शौर्य अगम्य है,
साहस जिनका है अबाध और, जिनका धैर्य अदम्य है,
जिनकी है निःस्वार्थ साधना, जिनका तप निष्काम है ॥जग..॥

मन में किंचित हर्ष न लाते, सुन अपना गुणगान जो,
और न अपनी निंदा सुनकर, करते हैं मुख म्लान जो,
जिन्हें प्रतीत एक सी होती, स्तुतियाँ और गालियाँ,
सिर पर गिरती सुमना-वलियाँ, चलती हुई दुनालियाँ
दोनों समय शांति में रहना, जिनका शुभ परिणाम है ॥जग..॥

हर उपसर्ग सहन जो करते, कहकर कर्म विचित्रता,
तन तज देते किंतु न तजते, अपनी ध्यान पवित्रता,
एक दृष्टि से देखा करते, गर्मी वर्षा ठंड जो,
तप्त उष्ण लू रिमझिम वर्षा, शीत तरंग प्रचण्ड जो,
जिनकी ज्यों है शीतल छाया, त्यों ही भीषण धाम है ॥जग..॥

है परम-दिगम्बर मुद्रा जिनकी

है परम-दिगम्बर मुद्रा जिनकी, वन-वन करें बसेरा
मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा ॥
शाश्वत सुखमय चैतन्य-सदन में, रहता जिनका डेरा
मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा ॥टेक॥

जहँ क्षमा मार्दव आर्जव सत् शुचिता की सौरभ महके
संयम तप त्याग अकिंचन स्वर परिणति में प्रतिपल चहके
है ब्रह्मचर्य की गरिमा से, आराध्य बने जो मेरा ॥१॥

अन्तर-बाहर द्वादश तप से, जो कर्म-कालिमा दहते
उपसर्ग परीषह-कृत बाधा, जो साम्य-भाव से सहते
जो शुद्ध-अतीन्द्रिय आनन्द-रस का, लेते स्वाद घनेरा ॥२॥

जो दर्शन ज्ञान चरित्र वीर्य तप, आचारों के धारी
जो मन-वच-तन का आलम्बन तज, निज चैतन्य विहारी
शाश्वत सुखदर्शन-ज्ञान-चरित में, करते सदा बसेरा ॥३॥

नित समता स्तुति वन्दन अरु, स्वाध्याय सदा जो करते
प्रतिक्रमण और प्रति-आख्यान कर, सब पापों को हरते
चैतन्यराज की अनुपम निधियाँ, जिसमें करें बसेरा ॥४॥

होली खेलें मुनिराज शिखर वन में

होली खेलें मुनिराज शिखर वन में, रे अकेले वन में, मधुवन में
मधुवन में आज मची रे होली, मधुवन में ॥टेक॥

चैतन्य-गुफा में मुनिवर बसते, अनन्त गुणों में केली करते
एक ही ध्यान रमायो वन में, मधुवन में ॥होली - १॥

ध्रुव धाम ध्येय की धूनी लगाई,ध्यान की धधकती अग्नि जलाई
विभाव का ईंधन जलायें वन में, मधुवन में ॥होली - २॥

अक्षय घट भरपूर हमारा, अन्दर बहती अमृत धारा
पतली धार न भाई मन में, मधुवन में ॥होली - ३॥

हमें तो पूर्ण दशा ही चहिये, सादि-अनंत का आनंद लहिये
निर्मल भावना भाई वन में, मधुवन में ॥होली - ४॥

पिता झलक ज्यों पुत्र में दिखती, जिनेन्द्र झलक मुनिराज चमकती
श्रेणी माँडी पलक छिन में, मधुवन में ॥होली - ५॥

नेमिनाथ गिरनार पे देखो, शत्रुंजय पर पाण्डव देखो
केवलज्ञान लियो है छिन में, मधुवन में ॥होली - ६॥

बार-बार वन्दन हम करते, शीश चरण में उनके धरते
भव से पार लगाये वन में, मधुवन में ॥होली - ७॥

आजा अपने धर्म की तू राह में

आजा अपने धर्म की तू राह में, वो ही करे भव पार रे...

ढेरों जनम तूने भोगों में खोये..तूने भोगों में खोये
फ़िर भी हवस तेरी पूरी न होये..तेरी पूरी न होये
तज दे तू इनकी याद हो sss ॥आजा॥

तेरा जग में साथी यही ये एक धरम है
आशा जिसकी तू करता वो एक भरम है
झूठा है जग संसार हो sss ॥आजा॥

सुख होता जग में ना तजते फ़िर तीर्थंकर
तज धन मालिक ना रचते भेष दिगम्बर
जग में नहीं कुछ सार हो sss ॥आजा॥

उठे सब के कदम

उठे सबके कदम, देखो रम-पम-पम, णमोंकार मंत्र गाया करो,
कभी खुशी कभी गम, तर रम-पम-पम, जिन मंदिर जाया करो ॥

मेरे प्यारे प्यारे भैया, मेरे अच्छे अच्छे भैया, जरा मंदिर आया करो,
कभी पूजा कभी भक्ति, कभी भक्ति कभी पूजा, सदा द्रव्य चढाया करो

मेरी प्यारी प्यारी दीदी, मेरी अच्छी अच्छी दीदी, जरा पाठ्शाला जाया करो,
भक्तामर गाना, मेरी भावना गाना, कभी दोनों ही गाया करो

मेरे प्यारे प्यारे अंकल, मेरी अच्छी अच्छी आंटी, जरा तीरथ जाया करो,
कभी मांगी कभी तुंगी, कभी, तुंगी कभी मांगी, कभी दोनों कराया करो

सम्मेद शिखर जी की टोकों से बीस तीर्थंकर निर्वाणी,
पार्श्व प्रभू की पूजा अर्चना करले रे जिन-ज्ञानी
चंपापुर, पावापुर, राजगिरी, कुंडलपु र भी जाया करो
कभी तीरथ कभी अक्षर कभी अक्षर कभी तीरथ कभी दोनों ही ध्याया करो

जय जिनेन्द्र बोलिए

जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से, अपना मौन खोलिए ॥

सुर असुर जिनेन्द्र की महिमा को नहीं गा सके
और गौतम स्वामी न महिमा को पार पा सके ॥
जय जिनेन्द्र बोलकर जिनेन्द्र शक्ति तौलिए ॥जय..॥

जय जिनेन्द्र ही हमारा एक मात्र मंत्र हो
जय जिनेन्द्र बोलने को हर मनुष्य स्वतंत्र हो ॥
जय जिनेन्द्र बोलबोल खुद जिनेन्द्र हो लिए ॥जय..॥

पाप छोड़ धर्म जोड़ ये जिनेन्द्र देशना
अष्ट कर्म को मरोड़ ये जिनेन्द्र देशना ॥
जाग, जाग, जग चेतन बहुकाल सो लिए ॥जय..॥

हे जिनेन्द्र ज्ञान दो, मोक्ष का वरदान दो
कर रहे प्रार्थना, प्रार्थना पर ध्यान दो ॥
जय जिनेन्द्र बोलकर हृदय के द्वार खोलिए ॥जय..॥

जहाँ रागद्वेष से रहित निराकुल

जहाँ रागद्वेष से रहित निराकुल, आतम सुख का डेरा
वो विश्व धर्म है मेरा, वो जैन धर्म है मेरा
जहाँ पद-पद पर है परम अहिंसा करती क्षमा बसेरा
वो विश्व धर्म है मेरा, वो जैनधर्म है मेरा ॥टेर॥

जहाँ गूंजा करते, सत संयम के गीत सुहाने पावन
जहाँ ज्ञान सुधा की बहती निशिदिन धारा पाप नशावन
जहाँ काम क्रोध, ममता, माया का कहीं नहीं है घेरा ॥१॥

जहाँ समता समदृष्टि प्यारी, सद्भाव शांति के भारी
जहाँ सकल परिग्रह भार शून्य है, मन अदोष अविकारी
जहाँ ज्ञानानंत दरश सुख बल का, रहता सदा सवेरा ॥२॥

जहाँ वीतराग विज्ञान कला, निज पर का बोध कराये
जो जन्म मरण से रहित, निरापद मोक्ष महल पधराये
वह जगतपूज्य 'सौभाग्य' परमपद, हो आलोकित मेरा ॥३॥

जैन धर्म के हीरे मोती

जैन धर्म के हीरे मोती, मैं बिखराऊं गली गली
ले लो रे कोइ प्रभु का प्यारा, शोर मचाऊं गली गली

दौलत की दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा
धन दौलत और माल खजाना, पडा यहीं रह जायेगा
सुन्दर काया मिट्टी होगी, चर्चा होगी गली गली ॥ले लो॥

क्यों करता तू तेरी मेरी, तज दे उस अभिमान को
झूंठे झगडे छोड के प्राणी, भज ले तू भगवान को
जग का मेला दो दिन का, अंत में होगी चला चली ॥ले लो॥

जिन जिन ने ये मोती लूटे, वे ही माला माल हुए
दौलत के जो बने पुजारी, आखिर में कंगाल हुए
सोने चांदी वालों सुन लो, बात कहूं मैं भली भली ॥ले लो॥

जीवन में दुख है तब तक ही, जब तक सम्यकज्ञान नहीं
ईश्वर को जो भूल गया, वह सच्चा इंसान नहीं
दो दिन को ये चमन खिला है, फ़िर मुर्झाये कली कली ॥ले लो॥

बडे भाग्य से हमको मिला जिन धर्म

बडे भाग्य से हमको मिला जिन धर्म,
हमारी कहानी है, तुम्हारी कहानी है, बडी बेरहम,

अनादि से भटके चले आ रहे हैं,
प्रभु के वचन क्यूं नहीं भा रहे हैं,
रुदन तेरा भव भव में सुने कौन जन ॥बडे॥

भगवान बनने की ताकत है मुझमें,
मैं मान बैठा पुजारी हूं बस मैं,
मेरे घट में घट घट का वासी चेतन ॥बडे॥

अणु अणु स्वतंत्र प्रभु ने ज्ञान है कराया,
विषयों का विष पी पी उसे ना सधाया,
क्षण भर को भी तो चेतन हो जा मगन ॥बडे॥

भावों में सरलता रहती है

भावों में सरलता रहती है, जहाँ प्रेम की सरिता बहती है ।
हम उस धर्म के पालक हैं, जहाँ सत्य अहिंसा रहती है ॥

जो राग में मूँछे तनते हैं, जड़ भोगों में रीझ मचलते हैं
वे भूलते हैं निज को भाई, जो पाप के सांचे ढलते हैं
पुचकार उन्हें माँ जिनवाणी, जहाँ ज्ञान कथायें कहती हैं
॥ हम उस - १॥

जो पर के प्राण दुखाते हैं, वह आप सताये जाते हैं
अधिकारी वे हैं शिव सुख के, जो आतम ध्यान लगाते हैं
'सौभाग्य' सफल कर नर जीवन, यह आयु ढलती रहती है
॥ हम उस - २॥

मैं महापुण्य उदय से जिनधर्म

मैं महापुण्य उदय से जिनधर्म पा गया

चार घाति कर्म नाशे ऐसा अरहंत है,
अनंत चतुष्टय धारी श्री भगवंत है,
मैं अरहंत देव की शरण आ गया ॥

अष्ट कर्म नाश किये ऐसे सिद्ध देव हैं,
अष्ट गुण प्रगट जिनके हुए स्वयमेव हैं,
मैं ऐसे सिद्ध देव की शरण आ गया ॥

वस्तु का स्वरूप बतावे वीतराग वाणी है,
तीन लोक के जीव हेतु महाकल्याणी है,
मैं जिनवाणी माँ की शरण में आ गया ॥

परिग्रह रहित दिगम्बर मुनिराज हैं,
ज्ञान ध्यान सिवा नहीं दूजा कोई काज है,
मैं श्री मुनिराज की शरण पा गया ॥

ये धरम है आतम ज्ञानी का

ये धरम है आतम ज्ञानी का, सीमंधर महावीर स्वामी का,
इस धर्म का भैया क्या कहना, ये धर्म है वीरों का गहना,
जय हो जय हो जय हो...

यहां समयसार का चिंतन है, यहां नियमसार का मंथन है,
यहां रहते हैं ज्ञानी मस्ती में, मस्ती है स्व की अस्ति में,
जय हो जय हो जय हो...

अस्ति में मस्ती ज्ञानी की, यह बात है भेद विज्ञानी की,
यहां झरते हैं झरने आनंद के, आनंद ही आनंद आतम है,
जय हो जय हो जय हो...

यहां बाहुबली से ध्यानी हुए, यहां कुंद्‌कुंद जैसे ज्ञानी हु ए,
यहां सतगुरुओं ने ये बोला, ये धर्म है कितना अनमोला,
जय हो जय हो जय हो...

लहर लहर लहराये, केसरिया झंडा

लहर लहर लहराये, केसरिया झंडा जिनमत का...हो जी
सबका मन हरषाये, केसरिया झंडा जिनमत का हो जी

फ़र फ़र फ़र फ़र करता झंडा, गगन शिखा पे डोले
स्वास्तिक का यह चिन्ह अनूठा, भेद हृदय के खोले
यह ज्ञान की ज्योति जगाये,
केसरिया झंडा जिनमत का... हो जी ॥

इसकी शीतल छाया में सब, पढे रतन जिनवाणी
सत्य अहिंसा प्रेम युक्त सब, बने तत्त्व श्रद्धानी
यह सत पथ पर पहुंचाये,
केसरिया झंडा जिनमत का...हो जी ॥

लहरायेगा-लहरायेगा झंडा

लहरायेगा-लहरायेगा झंडा श्री महावीर का
फहरायेगा-फहरायेगा झंडा श्री महावीर का ॥

अखिल विश्व का जो है प्यारा,
जैन जाति का चमकित तारा
हम युवकों का पूर्ण सहारा, झंडा श्री महावीर का ॥

सत्य अहिंसा का है नायक,
शांति सुधारस का है दायक
दीनजनों का सदा सहायक, झंडा श्री महावीर का ॥

साम्यभाव दर्शाने वाला,
प्रेमक्षीर बरसाने वाला
जीवमात्र हर्षाने वाला, झंडा श्री महावीर का ॥

भारत का 'सौभाग्य' बढ़ाता,
स्वावलंब का पाठ पढ़ाता
वन्दे वीरम् नाद गुंजाता, झंडा श्री महावीर का ॥

श्रीजिनधर्म सदा जयवन्त

श्रीजिनधर्म सदा जयवन्त
तीन लोक तिहुँ कालनिमाहीं, जाको नाहीं आदि न अन्त ॥श्री॥

सुगुन छियालिस दोष निवारैं, तारन तरन देव अरहंत
गुरु निरग्रंथ धरम करुनामय, उपजैं त्रेसठ पुरुष महंत ॥श्री॥

रतनत्रय दशलच्छन सोलह-कारन साध श्रावक सन्त
छहौं दरब नव तत्त्व सरधकै, सुरग मुकति के सुख विलसन्त॥श्री॥

नरक निगोद भ्रम्यो बहु प्रानी, जान्यो नाहिं धरम-विरतंत
'द्यानत' भेदज्ञान सरधातैं, पायो दरव अनादि अनन्त ॥श्री॥

सब जैन धर्म की जय बोलो

सब जैन धर्म की जय बोलो, हम गीत उसी के गाते हैं
जो विश्वशांति का प्रेरक है, हम उसकी बात सुनाते हैं॥

यह सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य का, पाठ हमें सिखलाता है
अज्ञेय परिग्रह त्याग हमें, मानव बनना सिखलाता है
ये पंच महाव्रत सार जगत-२,
ये शास्त्र-ये शास्त्र सभी बतलाते हैं ॥जो.॥

सच्ची राह बताने को चौबीस हुये अवतार यहाँ
सबने इसकी महिमा गायी, और पार हुये संसार यहाँ
सिद्धांत अमर सुखदाई है-२,
जो ध्यान-जो ध्यान धरे तिर जाते हैं ॥जो.॥

है जैन धर्म वट वृक्ष बडा, जिसकी छाया अति शीतल है
जिन वर्धमान और साधू को पा,धन्य हुआ अवनीतल है
रखने को जीवित मानवता-२
हम जैन- हम जैन ध्वजा फ़हराते हैं ॥जो.॥

ऊंचे ऊंचे शिखरों वाला

ऊंचे ऊंचे शिखरों वाला है रे, तीरथ हमारा
तीरथ हमारा हमें लागे है प्यारा ॥

श्री जिनवर से भेंट करावे, जग को मुक्ति मार्ग दिखावे
मोह का नाश करावे रे, ये तीरथ हमारा ॥

शुद्धातम से प्रीति लगावे, जड चेतन को भिन्न बतावे
भेद विज्ञान करावे रे, यह तीरथ हमारा ॥

भाव सहित वंदे जो कोई, ताहि नरक पशुगति नहिं होई
भेद विज्ञान करावे रे, ये तीरथ हमारा ॥

रंग राग से भिन्न बतावे, शुद्धातम का रूप बतावे
मुक्ति का मारग दिखावे रे, ये तीरथ हमारा ॥

ऊंचे ऊंचे शिखरों वाला 2

ऊंचे ऊंचे शिखरों वाला है ये, तीरथ हमारा
तीरथ हमारा ये जग से न्यारा
मधुबन माही बरसे रे अमरत की धारा ॥ऊंचे.॥

भाव सहित वंदे जो कोई, ताहि नरक पशु गति ना होई
उनके लिये खुल जाये रे, सीधा स्वर्ग का द्वारा ॥

जहां तीर्थंकर ने वचन उचारे, कोटि कोटि मुनि मोक्ष पधारे
पूज्य परम पद पाये रे, जन्मे ना दोबारा ॥

हरे-हरे वृक्षों की झूमे डाली, समवसरण की रचना निराली
पर्वतराज पे शीतल जरना, बहता सुप्यारा ॥

ऊंचे शिखरों पे बसा है

उचें शिखरों पे बसा है, ये जैनागम कि शान
मोक्षगिरि मधुबन में मिलता, मुक्ति का वरदान

चारों ओर फ़िजाओं में जहां गूंज रही जिनवाणी
मोक्ष दायिनी भूमि है ये भूमि है निर्वाणी
जहां कण-कण में बसते हैं, मानों जिनेन्द्र भगवान ॥१ मोक्ष॥

ऊंचे-ऊंचे पर्वत पर बैठे दरबार लगाए
वैरागी का दर्शन ही मन में वैराग्य जगाए
जहाँ तीर्थंकरों ने पाया, है अक्षय पद निर्वाण ॥२ मोक्ष॥

एक बार जो करे वंदना, खुले मोक्ष का द्वारा
नरक पशु तिर्यंच गति ना पाये वो दोबारा
प्रत्यक्ष युगों से है जो, क्या चाहे वो प्रमाण ॥३ मोक्ष॥

इस धरती का स्वर्ग कहाए अपना मधुबन प्यारा
ना जाने कितनों को इसने भव से पार उतारा
चल तू भी दर्शन करले, क्या सोच रहा नादान ॥४ मोक्ष॥

गगन मंडल में उड जाऊं

गगन मंडल में उड जाऊं
तीन लोक के तीर्थ क्षेत्र सब वंदन कर आऊं॥

प्रथम श्री सम्मेदशिखर पर्वत पर मैं जाऊं
बीस टोंक पर बीस जिनेश्वर चरण पूज ध्याऊं॥

अजित आदि श्री पार्श्वनाथ प्रभु की महिमा गाऊं
शाश्वत तीर्थराज के दर्शन करके हर्षाऊं॥

फ़िर मंदारगिरि पावापुर वासुपूज्य ध्याऊं
हुए पंचकल्याणक प्रभु के पूजन कर आऊं॥

ऊर्जयंत गिरनार शिखर पर्वत पर फ़िर जाऊं
नेमिनाथ निर्वाण क्षेत्र को वंदू सुख पाऊं॥

फ़िर पावापुर महावीर निर्वाणपुरी जाऊं
जलमंदिर में चरण पूजकर नाचूं हर्षाऊं॥

फ़िर कैलाश शिखर अष्टापद आदिनाथ ध्याऊं
ऋषभदेव निर्वाण धरा पर शुद्ध भाव लाऊं॥

पंच महातीर्थों की यात्रा करके हर्षाऊं
सिद्धक्षेत्र अतिशय क्षेत्रों पर भी मैं हो आऊं॥

तीन लोक की तीर्थ वंदना कर निज घर आऊं
शुद्धातम से कर प्रतीति मैं समकित उपजाऊं॥

फ़िर रत्नत्रय धारण करके जिन मुनि बन जाऊं
निज स्वभाव साधन से स्वामी शिवपद प्रगटाऊं॥

चलो सब मिल सिधगिरी

चलो सब मिल सिधगिरी चलिए,जहाँ आदिनाथ भगवान हैं
तिर जायेगी वहाँ तेरी आत्मा, इस तीर्थ की महिमा महान हैं॥

लाखों नर नारी यहाँ पर दर्शन करने आते हैं,
शुध मन से दर्शन जो करते,पाप कर्म कट जाते हैं,
करता प्राणी क्यों अभिमान हैं,
दो दिन का यहाँ तू मेहमान है ॥तिर॥

इस गिरी पर ध्यान लगाकर साधू अनंता सिध गए,
नंदन दशरथ श्री राम और पांडव पाँचों मोक्ष गए,
चाहता जीवन का अगर कल्याण है,
वीतराग प्रभु का कर ध्यान रे ॥तिर॥

धर्म किए बिन मोक्ष जो चाहो ऐसा कभी नहीं हो सकता,
व्रत तप संयम प्रभु भजन से, भव सागर से तिर सकता,
कहता सुभाग रस्ता आसान है,
विषयन में फंसा क्यों नादान है ॥तिर॥

जीयरा...जीयरा...जीयरा

जीवराज उड के जाओ सम्मेदशिखर में
भाव सहित वन्दन करो, पार्श्व चरण में ॥जीवराज...॥

आज सिद्धों से अपनी बात होके रहेगी,
शुद्ध आतम से मुलाकात होके रहेगी ॥
रंगरहित रागरहित भेदरहि्त जो,
मोहरहित लोभरहित शुद्ध बुद्ध जो ॥जीवराज...॥

ध्रुव अनुपम अचल गति जिनने पाई है,
सारी उपमायें जिनसे आज शरमाई है ॥
अनंतज्ञान अनंतसुख अनंतवीर्य मय,
अनंतसूक्ष्म नामरहित अव्याबाधी है ॥जीवराज...॥

अहो शाश्वत ये सिद्धधाम तीर्थराज है,
यहां आकर प्रसन्न चैतन्यराज है ॥
शुरु करें आज यहां आत्मसाधना,
चतुर्गति में हो कभी जन्म मरण ना ॥जीवराज...॥

मधुबन के मंदिरों में

मधुबन के मंदिरों में, भगवान बस रहा है
पारस प्रभु के दर से, सोना बरस रहा है ॥

अध्यात्म का ये सोना, पारस ने खुद दिया है
ऋषियों ने इस धरा से निर्वाण पद लिया है
सदियों से इस शिखर का, स्वर्णिम सुयश रहा है ॥पारस...॥

तीर्थंकरों के तप से, पर्वत हुआ है पावन
कैवल्य रश्मियों का, बरसा यहां पे सावन
उस ज्ञान अमृत जल से, पर्वत सरस रहा है ॥पारस...॥

पर्वत के गर्भ में है, रत्नों का वो खजाना
जब तक है चाँद सूरज, होगा नहीं पुराना
जन्मा है जैन कुल में, तू क्यों तरस रहा है ॥पारस...॥

नागों को भी ये पारस, राजेन्द्र सम बनाये
उपसर्ग के समय जो, धरणेन्द्र बन के आये
पारस के सिर पे देवी पद्मावती यहां है ॥पारस...॥

रे मन भज ले प्रभु का नाम

रे मन भज ले प्रभु का नाम उमरिया रह गई थोडी,
उमरिया रह गई थोडी, उमरिया रह गई थोडी ॥ रे मन...॥

कैलाशगिरि को जइयो, और आदिनाथ जी से कहियो
हो बुलालो अपने पास, उमरिया रह गई थोडी ॥ रे मन...॥

तुम पावापुरी को जइयो, और वर्द्धमान जी से कहियो ॥हो॥

तुम चम्पापुरी को जइयो, और वासुपूज्य जी से कहियो ॥हो॥

तुम हस्तिनापुर को जइयो, और शांतिनाथ जी से कहियो ॥हो॥

तुम सम्मेदशिखर जी को जइयो, और पार्श्वनाथजी से कहियो ॥हो॥

तुम तिजाराजी को जइयो और, चन्दाप्रभुजी से कहियो ॥हो॥

तुम पदमपुराजी को जइयो और, पद्मप्रभु जी से कहियो ॥हो॥

तुम गोम्मटेश्वर जइयो और, बाहुबलीजी से कहियो ॥हो॥

तुम महावीर जी को जाइयो और, वीर प्रभुजी से कहियो ॥हो॥

विश्व तीर्थ बडा प्यारा

तर्ज : गोरी तेर गांव बडा प्यारा

विश्व तीर्थ बडा प्यारा, अजब है नजारा, (आओ यहां रे) -२
यहां मंदिर बना न्यारा, देश का प्यारा, (सुनों जरा रे) -२

दूर दूर से आए मनीषी, जिन वचनामृत कहने
जड चेतन का चिन्ह बताकर, मोह अंधेरा हरने
सही शिव मार्ग बताने को, जैन ग्रंथ देखो
(गुरू कहे रे) -२ ॥विश्व-१॥

जिनवाणी के लाल बनों तुम, बन जाओ प्रभू जैसे
सम्यक श्रद्धा गर हो जाए, भटकोगे तुम कैसे
कुंदकुंद कहान के ये सपने , कैसे होंगे अपने
(सोचो जरा रे) -२ ॥विश्व-२॥

एक शुद्ध मैं, सदा अरूपी, गुरुवर का कहना है
मान ले भैया, बात प्रभू की, भवसागर तिरना है
ले लो अब आत्म का सहारा, तीर्थ बडा प्यारा
(आओ यहां रे) -२ ॥विश्व-३॥

सम्मेद शिखर पर मैं जाऊंगा

सम्मेद शिखर पर मैं जाऊंगा डोली रखदो कहारों
मैं टोंकों की वंदन को जाऊंगा डोली रखदो कहारों ॥

परस प्रभु का जो दर्शन पाऊँ,
मैं भी तो पत्थर से सोना हो जाऊं,
अपने पारस को मैं रिझाऊंगा, डोली....

चौबीस जिनराज बैठे जहाँ पे,
ऐसा सुहाना हैं मन्दिर वहाँ पे,
बैठ मन्दिर में भजन सुनाऊंगा, डोली ...

अन्दर के भावों का अर्घ बनाऊं,
पूजा की थाली चरणों मे लाऊँ,
जा के अष्ट द्रव्य को चढाऊंगा, डोली...

ऐसा ललित कूट हृदय विहंगम,
ललित कलाओं का कैसा ये संगम,
ऐसी सुंदर छवि मन मैं लावूँगा, डोली..

सांवरिया पारसनाथ शिखर पर

ऊंचे शिखरों वाला, सबसे निराला

सांवरिया पारसनाथ शिखर पर भला विराज्या जी
भला विराज्या जी ओ बाबा थे तो भला विराज्या जी ॥

वैभव काशी का ठुकराया,राज पाट तोहे बाँध ना पाया
तू सम्मेद शिखर पे मुक्ति पाने आया -२
वो पर्वत तेरे मन भाया जहाँ भीलों का वासा जी ॥

टोंक टोंक पर ध्वजा विराजे, झालर बाजे घंटा बाजे
चरण कमल जिनवर के कूट-कूट पर साजे
दूर-दूर से यात्री आए आनंद मंगल खासा जी ॥

झर-झर बहता शीतल नाला, शांत करे भव-भव की ज्वाला
गीत नही जग में इतने जिनवर वाला
वंदन करके पूरण होती भक्त जनों की आसा जी ॥

हमको अपनी भक्ति का वर दो, समताभाव से अन्तर भर दो
हे पारसमणि भगवन हमको कंचन कर दो
दो आशीष मिट जाए हमारा जनम मरण का रासा जी ॥

आज तो बधाई राजा

आज तो बधाई, राजा नाभि के दरबार में
नाभि के दरबार में, नाभि के दरबार में ॥ आज ... ॥

मरुदेवी नें ललना जायो, जायो रिषभ कुमार जी
अयोध्या में उत्सव कीनो, घर घर मंगलाचार जी ॥ आज ...॥

हाथी दीना घोडा दीना, दीना रथ भंडार जी
नगर सरीखा पट्टन दीना, दीना सब श्रृंगार जी ॥ आज ...॥

घन घन घन घन घंटा बाजे, देव करे जयकार जी
इंद्राणी मिल चौक पुराए, भर-भर मुतियन थाल जी ॥ आज ...॥

तीन लोक में दिनकर प्रकटे घर घर मंगलाचार जी
केवल-कमला रूप निरंजन आदीश्वर महाराज जी ॥ आज ...॥

हाथ जोड़ मैं करूँ वीनती, प्रभुजी यो चिरकाल जी
नाभि राज दान देवें बरसे रतन अपार जी ॥ आज ...॥

आनंद अवसर आज सुरगण

आनंद अवसर आज सुरगण आये नगर में
तीर्थंकर संग आज आनंद छाया नगर में ॥आनंद॥

स्वर्गपुरी से सुरपति आये, सुंदर स्वर्ण कलश ले आये
निर्मल जल से तीर्थंकर का, मंगलमय शुभ न्हवन कराये
परिणति शुद्ध बनाये, सुरगण आये नगर में ॥१ आनंद॥

प्रभु जी वस्त्राभूषण धारे, चेतन को निर्वस्त्र निहारे
एक अखंड अभेद त्रिकाली, च्गेतन तन से भिन्न निहारे
आनंद रस बरसाये, सुरगण आये नगर में ॥२ आनंद॥

पुण्य उदय है आज हमारे, नगरी में जिनराज पधारे
निशदिन प्रभु की सेवा करने, भक्ति सहित सुरराज पधारे
जीवन सफ़ल बनाये, सुरगण आये नगर में ॥३ आनंद॥

सुरपति स्वर्ग पुरी को जावे, भोगों में नहीं चित्त ललचावे
आनंद घन निज शुद्धातम का, रस ही परिणति में नित भावे
भेद विज्ञान सुहाये, सुरगण आये नगर में ॥४ आनंद॥

आया पंच कल्याणक महान

आया पंच कल्याणक महान, श्री नेमी बनेंगे भगवान
आनन्द रस झरता है - २

स्वर्ग-पुरी से प्रभु जब आएँगे, सुरपति गर्भ कल्याण मनाएंगे
नाचे गाएं करें गुणगान, श्री नेमी बनेंगे भगवान - ॥१॥

नेमी कुंवर का जन्म जब होएगा , पांडू-शिला पर अभिषेक होगा
प्रभु धारेंगे तिन-तीन ज्ञान, श्री नेमी बनेंगे भगवान - ॥२॥

जीवन की क्षण-भंगुरता जानकर, एक शुद्ध आतम उपादेय मानकर
फिर धारेंगे मुनिपद महान, श्री नेमी बनेंगे भगवान - ॥३॥

क्षायिक श्रेणी प्रभुजी चढ़ेंगे, क्षण में केवल-ज्ञान वरेंगे
दिव्य-ध्वनी खिरेगी महान, श्री नेमी बनेंगे भगवान - ॥४॥

प्रभु जब योग निरोध करेंगे, मुक्ति पूरी का राज्य वरेंगे
तब होगा आनन्द महान, श्री नेमी बनेंगे भगवान - ॥५॥

कल्पद्रुम यह समवसरण है

कल्पद्रुम यह समवसरण है, भव्य जीव का शरणागार,
जिनमुख घन से सदा बरसती, चिदानंद मय अमृत धार ॥

जहां धर्म वर्षा होती वह, समसरण अनुपम छविमान,
कल्पवृक्ष सम भव्यजनों को, देता गुण अनंत की खान
सुरपति की आज्ञा से धनपति, रचना करते हैं सुखकार,
निज की कृति ही भासित होती, अति आश्चर्यमयी मनहार ॥कल्प॥

निजज्ञायक स्वभाव में जमकर, प्रभु ने जब ध्याया शुक्लध्यान,
मोहभाव क्षयकर प्रगटाया, यथाख्यात चारित्र महान
तब अंतर्मुहूर्त में प्रगटा, केवलज्ञान महासुखकार,
दर्पण में प्रतिबिम्ब तुल्य जो, लोकालोक प्रकाशन हार ॥कल्प॥

गुण अनंतमय कला प्रकाशित, चेतन चंद्र अपूर्व महान,
राग आग की दाह रहित, शीतल झरना झरता अभिराम
निज वैभव में तन्मय होकर, भोगें प्रभु आनंद अपार,
ज्ञेय झलते सभी ज्ञान में, किन्तु न ज्ञेयों का आधार ॥कल्प॥

दर्शन ज्ञान वीर्य सुख से है, सदा सुशोभित चेतन राज,
चौंतिस अतिशय आठ प्रातिहार्यों से शोभित है जिनराज
अंतर्बाह्य प्रभुत्व निरखकर, लहें अनंत आनंद अपार,
प्रभु के चरण कमल में वंदन, कर पाते सुख शांति अपार ॥कल्प॥

कुडंलपुर वाले कुडंलपुर वाले वीरजी

कुडंलपुर वाले कुडंलपुर वाले वीरजी हमारे कुडंलपुर वाले
वीरजी हमारे कुडंलपुर वाले ॥

मां त्रिशला घर जन्म लियो है, माता की कोख को धन्य कियो है
अंतिम जन्म हुआ प्रभुजी का, जन्म मरण को नाश कियो है
नृप सिद्धार्थ के आंखों के तारे...वीरजी हमारे कुडंलपुर वाले ॥

स्वर्ग पुरी से सुरपति आये, ऐरावत हाथी ले आये
पांडुक शिला पर प्रभु को बिठाये, क्षीरोदधि से न्हवन कराये
रतन बरसाये हां न्हवन कराये...वीरजी हमारे कुडंलपुर वाले ॥

देखो भैया इन्द्र भी आये, पंचकल्याणक का उत्सव कराये
प्रभु दर्शन कर अति हरषाये, मंगल तांडव नृत्य रचाये
सभी हरषाये हां खुशियां मनाये...वीरजी हमारे कुडंलपुर वाले ॥

तन से भिन्न निजातम निरखे, निज अंतर का वैभव परखे
भेद ज्ञान की ज्योति जलावे, संयम की महिमा चित लावे
गये पावापुरी गये पावापुरी...वीरजी हमारे कुडंलपुर वाले ॥

गर्भ कल्याणक आ गया,

गर्भ कल्याणक आ गया,
देखो देखो जी आनंद छा गया॥

स्वर्गपुरी से देवगति को तजकर प्रभु ने नरगति पाई,
धन्य धन्य है त्रिशला माता तीर्थंकर की माँ कहलाई,
कुण्डलपुर में आनंद छा गया ॥

सोलह सपने माँ ने देखे मन में अचरज भारी है,
सिद्धार्थ नृप से फ़ल पूछा उपजा आनंद भारी है,
तीन भुवन का नाथ आ गया ॥

अंतिम गर्भ हुआ प्रभुजी का अब दूजी माता नहीं होगी,
शुद्धातम के अवलम्बन से आत्मसाधना पूरी होगी,
ज्ञान स्वभाव हमें भा गया ॥

गावो री बधाईयां

गावो री बधाईयां, बजाओ मिल सुख शहनाइयां,
जन्में हैं श्री जिनराइयां॥

धन्य मरुदेवी ने जायो है ललना,
विश्व झुलाये जिसे आज नैन पलना
जग हर पाइयां कि सूरज चांद जलाइयां॥ जन्में हैं...॥

छप्पन कुमारियों ने की मात सेवा,
रची थी अयोध्या नगरी स्वर्ग सम देवा
धनद उमगाइयां, रत्न है अपार बरसाइयां॥ जन्में हैं...॥

आज अयोध्या साये, बना शुभ नगर है,
चहका है चप्पा चप्पा, छटा मनहर है
तोरणहार सजाइयां, बंदनवार बधाइयां॥ जन्में हैं...॥

धन्य है वो नर जिन जन्मोत्सव मनाते,
पुण्य उदय से ऐसा अवसर पाते
प्रभु गुण गाइयां, शील निजभाग वराइयां॥ जन्में हैं...॥

गिरनारी पर तप कल्याणक

गिरनारी पर तप कल्याणक नेमि बनेंगे मुनिराज रे

आए लौकांतिक ब्रह्मचारी, हुए प्रसन्न देख नर नारी,
धन्य दिवस है आज रे, धन्य दिवस है आज रे ॥१॥

प्रभुजी बारह भवना भाये, परिणति में वैराग्य बढाये,
हम भी बनेंगे मुनिराज रे, हम भी बनेंगे मुनिराज रे ॥२॥

शुद्धातम रस को ही चाहे, विषय भोग विष सम ही लागे ,
राग लगे अंगार रे, राग लगे अंगार रे ॥३॥

प्रभु जी वेश दिगम्बर धारे, चेतन को निर्ग्रन्थ निहारे ,
बरसे आनंद धार रे, बरसे आनंद धार रे ॥४॥

घर घर आनंद छायो

घर घर आनंद छायो, जन्म महोत्सव मनायो- मनायो
अंतिम जन्म हुआ प्रभु जी का, मोक्ष महाफ़ल पायो जी पायो ॥

स्वर्ग पुरी से सुरपति आये, एरावत हाथी ले आये,
जीवन सफ़ल हुआ सुरपति का, जन्म मरण को शीघ्र नशाये,
मंगल महोत्सव मनायो मनायो, घर घर...॥घर..॥१॥

पुण्य उदय है आज हमारे, नगरी में जिनराज पधारे,
जिनदर्शन की प्यास जगाये, भक्ति सहित सुरराज पधारे,
आतम रस बरसायो बरसायो, घर घर...॥घर..॥२॥

धन्य धन्य तुम देवी जाओ, सर्वप्रथम दर्शन सुख पाओ,
कष्ट न किंचित हो माता को, मायामयी सुत देकर आओ,
आतम दर्शन पाओ जी पाओ, घर घर...॥घर..॥३॥

हरि ने नेत्र हजार बनाये, तो भी तृप्त नहीं हो पाये,
ज्ञान चक्षु से जिन दर्शन कर, एक अभेद स्वभाव लखाये,
जीवन सफ़ल बनायो बनायो, घर घर...॥घर..॥४॥

चन्द्रोज्वल अविकार स्वामी जी

चन्द्रोज्वल अविकार स्वामी जी, तुम गुण अपरंपार

जबै प्रभू गरभ माहिं आये, सकल सुर नर मुनि हर्षाये,
रतन नगरी में बरसाये...
ओ.... अमित अमोघ सुथार स्वामी जी...तुम गुण अपरंपार ॥

जन्म प्रभू तुमने जब लीना, न्हवन मन्दिर पर हरि कीना
भक्ति सुर शचि सहित बीना...
ओ... बोले जयजयकार स्वामी जी...तुम गुण अपरंपार ॥

अथिर जग तुमने जब जाना, आस्तवन लोकांतिक थाना
भये प्रभू जति नगन बाना....
ओ....त्यागराज को भार स्वामी जी...तुम गुण अपरंपार ॥

घातिया प्रकृति जबह नासी, लोक तरु आलोक परकासी
करी प्रभू धर्म वृष्टि खासी...
ओ... केवल ज्ञान भंडार स्वामी जी...तुम गुण अपरंपार ॥

अघातिया प्रकृति जो विघटाई, मुक्ति कांता तब ही पाई
निराकुल आनंद सुखदाई...
ओ ...तीन लोक सिरताज स्वामी जी...तुम गुण अपरंपार ॥

चरण मुनि जब तुमरे ध्यावे, पार गणधर हूं नहिं पावै, कह लग 'भागचन्द' गावे...
ओ...भवसागर से पार स्वामी जी...तुम गुण अपरंपार ॥

झुलाय दइयो पलना

झुलाय दइयो पलना धीरे धीरे... २ ॥

झिलमिल मोती झालर झूमे, मैया ललन का मुखडा चूमे
मुस्काय रहे ललना धीरे धीरे ॥

त्रिशला माता पलना झुलावे, सिद्धारथ नृप मोती लुटाये
सो जाओ रे ललना धीरे धीरे ॥

चंदन को पलना रेशम की डोरी, रतन जडे हैं चारों ओरी
उनसे किरणें निकलना धीरे धीरे ॥

मंगल गीत गाय सुरनारी, बलि बलि जावे आज पुजारी
भवदधि तरना धीरे धीरे ॥

तेरे पांच हुये कल्याण प्रभु

तेरे पांच हुये कल्याण प्रभु इक बार मेरा कल्याण कर दे
अंतर्यामी अंतर्ज्ञानी प्रभु दूर मेरा अज्ञान कर दे॥

गर्भ समय में रत्न जो बरसे, उनमें से एक रतन नहीं चाहूं
जन्म समय क्षीरोदधि से इन्द्रों ने किया वो न्हवन नहीं चाहूं॥
मैं क्या चाहूं सुनले २
जो चित्त को निर्मल शांत करे वहीं गंधोदक मुझे दान कर दे॥

धार दिगम्बर वेश किया तप तप कर विषय विकार को त्यागा
सार नहीं संसार में कोई इसीलिये संसार को त्यागा
मैं क्या चाहूं सुनले २
अपने लिये बरसों ध्यान किया मेरी ओर भी थोडा ध्यान कर दे॥

केवलज्ञान की मिल गई ज्योति लोकालोक दिखाने वाली
समवशरण में खिर गई वाणी सबकी समझ में आने वाली
मैं क्या चाहूं सुनले २
हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभु मेझे तेरा दर्श आसान कर दे॥

तीर्थंकर बनकर तू प्रगटा स्वाभाविक थी मुक्ति तेरी
मुक्ति मुझको दे तब देना भव भव की भक्ति तेरी
मैं क्या चाहूं सुनले २
निशदिन तेरे गुणगान करूं बस इतना ही भगवान कर दे॥
यहां कौन है ऐसा तेरे सिवा औरों को जो अपने समान कर दे॥

दिन-आयो दिन-आयो

दिन-आयो दिन-आयो दिन-आयो, आज जन्मकल्याणक दिन आयो।

झूमे आज नर-नारी ऐसे हरषाय, म्हारो तन मनवा प्रभु के गुण गाये,
रंग-लाग्यो रंग-लाग्यो रंग-लाग्यो,
थारी भक्ति में म्हारो प्रभु रंग-लाग्यो॥

तन भीगे मन भीगे, भीगे मोरो आतम, प्रभु ने बतायो आतम परमातम,
रंग-लाग्यो रंग-लाग्यो रंग-लाग्यो,
थारी भक्ति में म्हारो प्रभु रंग-लाग्यो॥

सोलह सपने माँ ने देखे, उनका फ़ल राजा से पूछा,
रानी तेरे गर्भ से पुत्र जन्म लेगा, तीन लोक का नाथ बनेगा,
हरषायो हरषायो हरषायो,
माता शिवा देवी को मन हरषायो॥

सौरीपुर में जन्म हुआ है, तीन भुवन आनंद हुआ है,
इंद्र इंद्राणी मिल खुशियां मनावे, मंगलकारी गीत सुनावें,
फ़ल पायो फ़ल पायो फ़ल पायो,
माता शिवादेवी ने शुभ फ़ल पायो॥

दिव्य ध्वनि वीरा खिराई

दिव्य ध्वनि वीरा खिराई आज शुभ दिन,
धन्य धन्य सावन की पहली है एकम ॥
आत्म स्वभावं परभाव भिन्नं, आपूर्ण माद्यन्त विमुक्त मेकम ॥

वैसाख दसमी को घातिया खिपाये, मेरे प्रभु विपुलाचल पर आये,
क्षण में लोकालोक लखाये, किन्तु न प्रभु उपदेश सुनाये,
काल लब्धि वाणी की आयी नही उस दिन ॥धन्य॥

इन्द्र अवधिज्ञान उपयोग लगाये, समवसरण में गणधर ना पाये,
इन्द्रभूति गौतम में योग्यता लखाये, वीर प्रभु के दर्शन को आये,
काल लब्धि लेकर के आई आज गौतम ॥धन्य॥

मेरे प्रभु ओंकार ध्वनि को खिराये, गौतम द्वादश अंग रचाये,
उत्पाद व्यय ध्रौव्य सत समझाये, तन चेतन भिन्न भिन्न बताये,
भेद विज्ञान सुहायो आज शुभ दिन ॥धन्य॥

य एव मुक्त्वा नय पक्षपातं, स्वरूप गुप्ता निवसन्ति नित्यं,
विकल्प जाल च्युत शांत चित्ता, स्तयेव साक्षातामृतं पिबन्ति,
स्वानुभूति की कला सिखाई आज शुभ दिन ॥धन्य॥

नाचे रे इन्दर देव

नाचे रे इन्दर देव रे....नाचे रे इन्दर देव रे,
जन्म कल्याण की बज रही बधैया मुक्ति में अब का देर रे।
नाचे रे इन्दर देव रे...

शिवादेवी के गर्भ में आये, देखो जी नेमिकुमार रे,
समुद्रविजय जी फ़ल बतावें, होवे खुशियां अपार रे॥
नाचे रे इन्दर देव रे...

शिवादेवी ने ललना जायो, जायो नेमिकुमार रे,
समुद्रविजय जी मुहरें लुटायें, देखो दोई दोई हाथ रे॥
नाचे रे इन्दर देव रे...

देव देवियां स्वर्ग से आये, मन में खुशियां अपार रे,
छप्पन कुमारी मंगल गावें, गावें मंगलाचार रे॥
नाचे रे इन्दर देव रे...

पंखिड़ा तू उड़ के जाना स्वर्ग

पंखिड़ा होऽऽ पंखिड़ा

पंखिड़ा तू उड़ के जाना स्वर्ग-पूरी में
कहना इन्द्र से कि चलो मध्य-लोक में

मध्य लोक में श्री जिनवारों के नाथ जन्में हैं
उनके माता पिता और तीनों लोक हर्षे हैं
हाथी लाओ घोड़ा लाओ चलो बैठ के ॥१ कहना..॥

प्रभु के जन्म-कल्याणक ख़ुशी से बढ़के कुछ नहीं
पभु के रूप सौन्दर्य से है बढ़के कुछ नहीं
स्वर्ण लाओ रत्न लाओ बांटों जनम में ॥२ कहना..॥

प्रभु का जन्म-नह्वन मेरु शिखर पर कराना है
क्षीरोदधि से इक सहस्र कलश भर के लाना है
भक्ति करो नृत्य करो प्रभु के जनम में ॥३ कहना..॥

पंखिडा रे उड के आओ कुंडलपुर

पंखिडा रे उड के आओ कुंडलपुर में,
तीर्थंकर जन्मे आज भरतक्षेत्र में॥पंखिडा..

माता त्रिशला ने देखे थे सोलह सपने,
उनका फ़ल बताया सिद्धार्थराज ने,
तेजवान बुद्धिमान लाल होएगा, ज्ञानवान तीर्थंकर बाल होएगा ॥

सिद्धार्थराज के द्वार बजती बधाई है,
प्रथम दर्शन को शची इंद्राणी आई है,
इंद्र इंद्राणी आये आज नगर में, खुशियां अपार छाई नगर नगर में ॥

प्रभु आये यहां अच्युत विमान से,
यह बालक शोभित सम्यक्त्व रिद्धि से,
मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान है, सम्यक्दर्शन ज्ञान रत्न भी महान है ॥

प्रभु पूरी करेंगे यहां आत्मसाधना,
अब धारण करेंगे कभी पुनर्जन्म ना,
वीतराग से जिनराज बनेंगे, चिदानंद चैतन्यराज वरेंगे ॥

पंचकल्याण मनाओ मेरे साथी

पंचकल्याण मनाओ मेरे साथी, जीवन सफ़ल बनाओ मेरे साथी,
आओ रे आओ आओ मेरे साथी ॥पंचकल्याण....॥

स्वर्गपुरी से प्रभुजी पधारे, मति श्रुत ज्ञान अवधि को धारे,
अंतिम गर्भ हुआ प्रभु जी का, जन्म मरण के कष्ट निवारे,
गर्भकल्याण मनाओ मेरे साथी ॥पंच-१॥

प्रथम स्वर्ग से इन्द्र पधारे, ऐरावत हाथी ले आये,
पांडु शिला पर न्हवन रचाया, सकल पाप मल क्षय कर डारे,
जन्मकल्याण कराओ मेरे साथी ॥पंच-२॥

प्रभु ने आतम ध्यान लगाया, निर्ग्रंथों का पथ अपनाया,
नग्न दिगम्बर दीक्षा धर कर, राग द्वेष को दूर भगाया,
तपकल्याण मनाओ मेरे साथी ॥पंच-३॥

शुक्ल ध्यान की अग्नि जलाकर, चार घातिया कर्म नशाया,
केवलज्ञान प्रकट कर प्रभु ने, जग को मुक्ति मार्ग बताया,
ज्ञानकल्याण मनाओ मेरे साथी ॥पंच-४॥
चरमशरीर छोडकर प्रभुजी, सिद्ध शिला पर जाय विराजे,
सादि अनंत काल तक शाश्वत, सुख निज परिणति में प्रगटाये,
मोक्ष कल्याण मनाओ मेरे साथी ॥पंच-५॥

पालकी उठाने का हमें अधिकार है

देवों और मानवों की चर्चा का सार है
पालकी उठाने का हमें अधिकार है

मनुष्य : प्रभु और हमारी गति भी समान है
गति भी समान है मति भी समान है
और.... चाहे कोई जीत कहो चाहे कोई हार है ॥पालकी॥

देव : अद्भुत शक्ति के धारी हम देव हैं
पालकी उठाके लाये किनी हमने सेव है
हमारा ही अभी तक प्यार और दुलार है ॥पालकी॥

शक्ति और वैभव तो पुद्‌गल की माया है
आतम शक्ति का बल हमने ही पाया है
और - फर्क तुम्हारे दुख होते निराधार हैं ॥पालकी॥

वैक्रियिक शरीर ये तो पुद्‌गल का खेल है
नष्ट होय एक दिन मेरा नही मेल है
और - समय नष्ट नही करो क्योंकि समयसार है ॥पालकी॥

दिव्य वस्त्राभूषण भोग अपने ही आप हैं

प्रभु का ये अतिशय है पुण्य का प्रताप है
और - कर्मों का खेल इसमें देवों पे क्या भार है ॥पालकी॥

अभिमान छोड़ दो ये वैभव ना तुम्हारा है
उग्र साधना का फल हमने ही पाया है
आतम शक्ति के आगे तीनों लोक हारा है ॥पालकी॥

जड़ रत्न बरसाए ये भी कोई जोर है
संयम रतन के आगे इसका नहीं मोल है
रत्नत्रय के आगे सब निस्सार है ॥पालकी॥

पंच कल्याणक की पूजन का भाव है
वो तो शुभ भाव है उससे क्या लाभ है
मोक्ष मार्ग में नही उसका सार है ॥पालकी॥

पुण्य और वैभव की तुम ना दुहाई दो
शक्ति वाले बनते हो तो दीक्षा तुम धार लो
संयम धारण करने को हमी तैयार हैं ॥पालकी॥

देव : मनुष्यों तुम जीत गए स्वर्ग निस्सार है
तुमको नमस्कार आज बारम्बार है
आज संयम के आगे हुई पुण्य हार है ॥पालकी॥

बाजे कुण्डलपुर में बधाई

बाजे कुण्डलपुर में बधाई
कि नगरी में वीर जन्मे, महावीर जी ॥टेक॥

जागे भाग हैं त्रिशला माँ के..
त्रिभुवन के नाथ जन्मे, महावीर जी ॥१॥

शुभ घडी जनम की आई...
कि स्वर्ग से देव आये, महावीर जी ॥२॥

तुझे देवियां झुलावे पलना..
कि मन में मगन होके, महावीर जी ॥३॥

तेरे पलने में हीरे मोती..
कि डोरियों में लाल लटके, महावीर जी ॥४॥

तेरे न्हवन करें मेरु पर..
कि इंद्र जल भर लायें, महावीर जी ॥५॥

हम तेरे दरस को आये..
कि पाप सब कट जाऐंगे, महावीर जी ॥६॥

वेष दिगम्बर धार

वेष दिगम्बर धार चले हैं मुनि दूल्हा बनके
मुक्ति-पुरी के द्वार चले हैं मुनि दूल्हा बनके ॥

पंच महाव्रत जामा सजाया, दशलक्षण का सेहरा बंधाया,
चारित्र रथ हो सवार...चले हैं मुनि दूल्हा बनके ॥

बारह भावना संग बाराती, समिति गुप्ति सब हिल मिल गाती,
हर्ष से मंगलाचार...चले हैं मुनि दूल्हा बनके ॥

राग द्वेष आतिशबाजी छूटी, क्रोध कषाय की लडियां टूटी,
समता पायल झनकार...चले हैं मुनि दूल्हा बनके ॥

शुक्ल ध्यान की अग्नि जलाकर, होम किया निज कर्म खिपाकर,
तप तेरा यशगान...चले हैं मुनि दूल्हा बनके ॥

शुभ बेला शिवरमणी वरेंगे, मुक्ति महल में प्रवेश करेंगे,
गूंजेगी ध्वनि जयकार...चले हैं मुनि दूल्हा बनके ॥

मणियों के पलने में

मणियों के पलने में स्वामी महावीर,
झूला झूले रे भैया हां हां रे झूला झूले रे भैया

पलना में रेशम की डोरी पडी है,
वा में मणियन की गुरिया जडी है
त्रिशला माता झुलाय रही रे, झूला झूले ।

कुंडलपुर वासी बोले सारे,
वीरा कुंवर की जय जयकारे
दर्शन कर चरणा छूले रे, झूला झूले ।

चुटकी बजाय रही, हंस हंस खिलाय रही
होले होले से झूला झुलाय रही
घर घर बाजे बधाई रे, झूला झूले ।

इंद्र भी आवे, इंद्राणी भी आवे,
देश विदेश के राजा भी आये
चरणों में भेंट चढाय रहो रे, झूला झूले ।

महावीरा झूले पलना

महावीरा झूले पलना, जरा हौले झोटा दीजो ॥

कौन के घर तेरो जनम भयो है,
कौन ने जायो ललना॥ जरा...॥

सिद्धारथ घर जन्म लियो है,
त्रिशला ने जायो ललना॥ जरा...॥

काहे को तेरो बन्यों पालनो,
काहे के लागे फ़ुंदना॥ जरा ...॥

अगर चंदन को बण्यों पालनो,
रेशम के लागे फ़ुंदना॥ जरा ...॥

पैरों में घुंघरू हाथ में झुंझना,
आंगन में चाले ललना॥ जरा...॥

अंदर से बाहर ले जावे, बाहर से अंदर ले जावे,
नजर ना लागे ललना॥ जरा...॥

मेरा पलने में झूले

मेरा पलने में झूले ललना... मेरा पलने में ॥

स्वर्णमयी अरु रत्न जडित यह स्वर्गपुरी से आया है,
इस पलने में बैठ झूलने सुरपति मन ललचाया है,
किन्तु पुण्य है वीर कुंवर का ... इसमें शोभे ललना ॥मेरा॥

बड़े प्यार से आज झुलाऊ अपने प्यारे लाल को,
सप्त स्वरों में गीत सुनाऊ तीर्थंकर सुत बाल को,
शुद्ध बुद्ध आनंद कंद मैं... अनुभव करता ललना ॥मेरा॥

तन मन झूमे पिताश्री का अवसर है आनंद का,
सोच रहे हैं पुत्र हमारा रसिया आनंद कंद का,
ज्ञानानंद झूले में झूले... देखो मेरा ललना ॥मेरा॥

देवों के संग क्रीडा करता सब झुले आनंद में,
किन्तु पुत्र की अंतर परिणति झुले परमानंद में,
गुणस्थान षष्टम सप्तम में ... कब झूलेगा ललना ॥मेरा॥

अंतर के आनंद में झूले जाने ज्ञान स्वभाव को,
मुझसे भिन्न सदा रहते हैं पुण्य पाप के भाव तो,
भेदज्ञान की डोरी खीचें .... देखो मा का ललना ॥मेरा॥

ज्ञान मात्र का अनुभव करता रमे नही पर ज्ञेय में,
दृष्टि सदा स्थिर रहती है चिदानंद मय ध्येय में,
निज अंतर में केलि करता ... देखो मेरा ललना ॥॥मेरा॥

ये महामहोत्सव पंच कल्याणक

ये महामहोत्सव पंच कल्याणक आया मंगलकारी...ये महामहोत्सव...

जब काललब्धिवश कोई जीव निज दर्शन शुद्धि रचाते हैं,
उसके संग में शुभ भावों की धारा उत्कृष्ट बहाते हैं।
उन भावों के द्‌वारा तीर्थंकर कर्म प्रकृति रज आते हैं,
उनके पकने पर भव्य जीव वे तीर्थंकर बन जाते हैं ॥१॥

इस भूतल पर पंद्रह महीने धनराज रतन बरसाते हैं,
सुरपति की आज्ञा से नगरी दुल्हन की तरह सजाते हैं।
खुशियां छाईं हैं दश दिश में यूं लगे कहीं शहनाई बजे,
हर आतम में परमातम की भक्ति के स्वर हैं आज सजे ॥२॥

माता ने अजब निराले अद्भुत देखे हैं सोलह सपने,
यह सुना तभी रोमांच हुआ तीर्थंकर होंगे सुत अपने।
अवतार हुआ तीर्थंकर का क्या मुक्ति गर्भ में आई है,
क्षय होगा भ्रमण चतुर्गति का मंगल संदेशा लाई है ॥३॥

जब जन्म हुआ तीर्थंकर का सुरपति ऐरावत लाते हैं,
दर्शन से तृप्त नहीं होते तब नेत्र हजार बनाते हैं।
जा पांडुशिला क्षीरोदधि जल से बालक को नहलाते हैं,
सुत माता-पिता को सांप इंद्र, तब तांडव नृत्य रचाते हैं ॥४॥

वैराग्य समय जब आता है प्रभु बारह भावना भाते हैं,
तब ब्रह्मलोक से लौकांतिक आ धन्य धन्य यश गाते हैं।

विषयों का रस फ़ीका पडता, चेतनरस में ललचाते हैं,
तब भेष दिगंबर धार प्रभु संयम में चित्त लगाते हैं ॥५॥

नवधा भक्ति से पडगाहें, हे मुनिवर यहां पधारो तुम,
हे गुरुवर अत्र अत्र तिष्ठो, निर्दोष अशन कर धारो तुम।
हे मन-वच-तन आहार शुद्ध अति भाव विशुद्ध हमारे हैं,
जन्मांतर का यह पुण्य फ़ला, श्री मुनिवर आज पधारे हैं ॥६॥

सब दोष और अंतराय रहित, गुरुवर ने जब आहार किया,
देवों ने पंचाश्चर्य किये, मुनिवर का जय-जयकार किया।
है धन्य धन्य शुभ घडी आज, आंगन में सुरतरु आया है,
अब चिदानंद रसपान हेतु, मुनिवर ने चरण बढाया है ॥७॥

प्रभु लीन हुए शुद्धातम में निज ध्यान अग्नि प्रगटाते हैं,
क्षायिक श्रेणी आरूढ हुए, तब घाति चतुष्क नशाते हैं।
प्रगटाते दर्शन-ज्ञान-वीर्य, सुख लोकालोक लखाते हैं,
ॐकारमयी दिव्य ध्वनि से प्रभु मुक्ति मार्ग बतलाते हैं ॥८॥

प्रभु तीजे शुक्लध्यान में चढ योगों पर रोक लगाते हैं,
चौथे पाये में चढ प्रभुवर गुणस्थान चौदवां पाते हैं।
अगले ही क्षण अशरीरी होकर सिद्धालय में फ़िर जाते हैं,
थिर रहें अनंतानंत काल कृत्कृत्य दशा पा जाते हैं ॥९॥

है धन्य धन्य वे महान गुरु जिनवर महिमा बतलाते हैं,
वे रंग राग से भिन्न चिदानंद का संगीत सुनाते हैं।
हे भव्य जीव आओ सब जन, अब मोहभाव का त्याग करो,
यह पंचकल्याणक उत्सव कर अब आतम का कल्याण करो ॥१०॥

रोम रोम में नेमिकुंवर के

रोम रोम में नेमिकुंवर के, उपशम रस की धारा,
राग द्वेष के बंधन तोडे, वेष दिगम्बर धारा ॥

ब्याह करन को आये, संग बराती लाये
पशुओं को बंधन में देखा, दया सिंधु लहराये
धिक धिक जग की स्वारथ वृत्ति, कहीं न सुक्ख लघारा ॥

राजुल अति अकुलाये, नौ भव की याद दिलाये
नेमि कहे जग में न किसी का, कोई कभी हो पाये
रागरूप अंगारों द्वारा, जलता है जग सारा ॥

नौ भव का सुमिरण कर नेमि, आतम तत्व विचारे
शाश्वत ध्रुव चैतन्य राज की, महिमा चित में धारे
लहराता वैराग्य सिंधु अब, भायें भावना बारा ॥

राजुल के प्रति राग तजा है, मुक्ति वधू को ब्याहें
नग्न दिगम्बर दीक्षा धर कर, आतम ध्यान लगायें
भव बंधन का नाश करेंगे, पावें सुख अपारा ॥

लिया आज प्रभु जी ने जनम सखी

लिया आज प्रभु जी ने जनम सखी,
चलो अवधपुरी गुण गावन कों ॥ लिया..॥

तुम सुन री सुहागन भाग भरी,
चलो मोतियन चौक पुरावन कों ॥ लिया..॥

सुवरण कलश धरों शिर ऊपर,
जल लावें प्रभु न्हवावन कों ॥ लिया...॥

भर भर थाल दरब के लेकर,
चालो जी अर्घ चढावन कों ॥ लिया...॥

नयनानंद कहे सुनि सजनी,
फ़ेर न अवसर आवन कों॥ लिया....॥

लिया प्रभू अवतार जयजयकार

लिया प्रभू अवतार जयजयकार जयजयकार जयजयकार
त्रिशला नंद कुमार जयजयकार जयजयकार जयजयकार ॥

आज खुशी है आज खुशी है, तुम्हें खुशी है हमें खुशी है
खुशियां अपरम्पार ॥ जयजयकार...॥
पुष्प और रत्नों की वर्षा,सुरपति करते हर्षा हर्षा
बजा दुंदुभि सार ॥ जयजयकार... ॥
उमग उमग नरनारी आते,नृत्य भजन संगीत सुनाते
इंद्र शची ले लार ॥ जयजयकार... ॥
प्रभू का अनुपम रूप सुहाया, निरख निरख छवि हरि ललचाया
कीने नेत्र हजार ॥ जयजयकार... ॥
जन्मोत्सव की शोभा भारी, देखो प्रभू की लगी सवारी
जुड रही भीड अपार ॥ जयजयकार... ॥
आओ हम सब प्रभु गुण गावें, सत्य अहिंसा ध्वज लहरायें
जो जग मंगलाचार ॥ जयजयकार... ॥
पुण्य योग सौभाग्य हमारा, सफ़ल हुआ है जीवन सारा
मिले मोक्ष दातार ॥ जयजयकार... ॥

लिया रिषभ देव अवतार

लिया रिषभ देव अवतार निरत सुरपति ने किया आके,
निरत किया आके हर्षा के प्रभूजी के नव भव कूं दरशा के,
सरर सरर कर सारंगी तंबूरा बाजे पोरी पोरी मटका के ॥लिया...॥

प्रथम प्रकासी वाने इंद्र जाल विद्या ऐसी,
आजलों जगत मैं सुनी ना कहूं देखी ऐसी,
आयो है छबीलो छटकीलो है मुकुट बंध,
छम्भ देसी कूदो मानु आ कूदो पूनम को चांद,
मन को हरत गत भरत प्रभू को..पूजै धरनी को शिर नाके ॥लिया..॥

भूजों पै चढाये हैं हज़ारों देव देवी ताने
हाथों की हथेली में जमाये हैं अखाडे तानै
ताधिन्ना ताधिन्ना तबला किट किट उनकी प्यारी लागे
धुम क्टि धुम किट बाजा बाजे नाचत प्रभू जी के आगे
सैना मै रिझावै तिरछी ऐड लगावे..उड जावे भजन गाके ॥लिया...॥

छिन मैं जाब दे वो तो नंदीश्वर द्वीप जाय,
पांचो मेर वंद आ मृदंग पै लगावे थाप,
वंदे ढाई द्वीप तेरा द्वीप के शकल चैत्य,
तीन लोक मांहि बिम्ब पूज आवे नित्य नित्य,
आबै वो झपट समही पै दोडा लेने दम..मन मोहन मुसका के ॥लिया...॥

अमृत की लगी झड बरषै रतन धारा,
सीरी सीरी चाले पोन बोलै देव जय जय कारा,
भर भर झोरी बर्षावै फ़ूल दे दे ताल, महके सुगंध चहक मुचंग षट्ताल,
जन्मे ये जिनेन्द्र यों नाभि के आनंद भयो.. गये भक्ति को बतलाके ॥लिया..॥

विषयों की तृष्णा को छोड

विषयों की तृष्णा को छोड, संयम की साधना में, चल पडे नेमि कुमार
परिग्रह की चिंता को तोडकर निज के चिंतन में, रम रहे नेमि कुमार
वेष दिगम्बर धार

यह जीव अनादि से, है मोह से हारा
चहुंगति में भटक रहा, दुख सहता बेचारा
कोई नहीं है शरण अतः, आतम ही शरणा है,
जाना जगत असार .... वेष दिगम्बर धार ॥१॥

प्रभू चल पडे वन को, ध्याये निज चेतन को
सब राग तंतु तोडे, काटे भव बंधन को
फ़िर मोह शत्रु नाशे और क्षायिक चारित्र धारे,
जिस में है आनंद अपार .... वेष दिगम्बर धार ॥२॥

कर चार घातिया क्षय, प्रगटे चतुष्ट अक्षय
सारी सृष्टि झलके, परिणति निज में तन्मय
शाश्वत शिवपद पाये और फ़िर मुक्ति वधू ब्याहें,
हो भव सागर पार .... वेष दिगम्बर धार ॥३॥

सुरपति ले अपने शीश

सुरपति ले अपने शीश, जगत के ईश गये गिरिराजा,
जा पाण्डुकशिला विराजा ॥ सुरपति...॥

शिल्पी कुबेर वहाँ आकर के, क्षीरोदधि मेरु लगा करके,
रुचि पैढि ले आये, सागर का जल ताजा,
फ़िर न्हवन कियो जिनराजा ॥ सुरपति...॥

नीलम पन्ना वैडुर्यमणि, कलशा लेकर के देवगणि,
एक सहस आठ कलशा लेकर नभराजा,
फ़िर न्हवन कियो जिनराजा ॥ सुरपति...॥

वसु योजन गहराई वाले, चउ योजन चौडाई वाले,
इक योजन मुख के कलश ढरे जिनमाथा,
नहिं जरा डिगे शिशुनाथा ॥ सुरपति...॥

सौधर्म इन्द्र अरु ईशान, प्रभु कलश करें धर युग पाना,
अरु सनत्कुमार महेन्द्र दोउ जिनराजा,
शिर चमर ढुरावें साजा ॥ सुरपति...॥
ऐरावत पुनि प्रभु लाकर के, माता की गोद बिठा करके,
अति अचरज ताण्डव नृत्य कियो दिविराजा,
स्तुति करके जिनराजा ॥ सुरपति...॥

हो संसार लगने लगा अब

तर्ज : चलो रे डोली उठाओ

हो संसार लगने लगा अब असार, निज ज्ञायक की सुधि आई
यतियों के मार्ग की महिमा अपार, द्वादश अनुप्रेक्षा मन भाई

उपशम रस की धारा बहती, अंतर परिणति ये ही कहती
जन्म मरण का अंत होएगा, अनगारियों का पंथ होएगा
लौकांतिक देवों ने की जय-जय कार, धन्य मुनिदशा मन भाई ॥हो-१॥

दशों दिशाओं की चुनरिया, ओढ चले मुक्ति डगरिया
मुक्ति नगर को चले दिगंबर, हर्षित धरा और अंबर
स्वर्गों से पुष्पों की वर्षा अपार, दिगंबर मुद्रा मन भाई ॥हो-२॥

सुरपति शिविका ले आए, पालकी में प्रभू को बैठाए
पंच मुष्टि केषलोंच करके, वस्त्राभूषण सब तजके
तिलतुष मात्र न परिग्रह धार, यथाजात मुद्रा मन भाई ॥हो-३॥

करना मन ध्यान महामंत्र

करना मन ध्यान महामंत्र णमोकार ॥

पहली बार बोले मन 'णमो अरिहंताणं'
होंगे पाप के नाश महामंत्र णमोकार ॥

दूजी बार बोले मन 'णमो सिद्धाणं'
होगा ज्ञान प्रकाश महामंत्र णमोकार ॥

तीजी बार बोले मन 'णमो आयरियाणं'
होवे ज्ञान ध्यान महामंत्र णमोकार ॥

चौथी बार बोले मन 'णमो उवज्झायाणं'
होवे आतम ज्ञान महामंत्र णमोकार ॥

पांचवी बार बोले मन 'णमो लोए सव्वसाहूणं'
होंगे भव से पार महामंत्र णमोकार ॥

जप जप रे नवकार मंत्र

जप जप रे नवकार मंत्र तू , इस भव पर भव सुख पासी,
इस भव पर भव सुख पासी ॥

अरिहंत सिद्ध आचार्य सुमरले, उपाध्याय साधु चित धर ले,
जन्म मरण थारो मिट जासी,
जन्म मरण थारो मिट जासी ॥ जप जप रे...॥

सीता सती ने इसको ध्याया, अग्नि का था नीर बनाया,
धन्य धन्य कहे जगवासी ,
धन्य धन्य कहे जगवासी ॥ जप जप रे...॥

सेठ पुत्र का जहर हटा था, श्रीपाल का कुष्ठ मिटा था,
टली सुदर्शन की फ़ांसी ,
टली सुदर्शन की फ़ांसी॥ जप जप रे...॥

महिमा इसकी कही ना जाय, पंकज जो नर इसको ध्याये,
वो भवसागर तिर जासी ,
वो भवसागर तिर जासी ॥ जप जप रे...॥

जय जय जय कार परमेष्ठी

जय जय जय जय कार परमेष्ठी, जय जय जय जय कार

जय जय भविजन बोध विधाता, जय जय आतम शुद्ध विधाता
जय भव भंजन हार परमेष्ठी...जय जय जय जय कार

जय सब संकट चूरण कर्ता, जय सब आशा पूरण कर्ता
जय जग मंगलकार परमेष्ठी...जय जय जय जय कार

तेरा जाप जिन्होने कीना, परमानन्द उन्होने लीना
कर गये खेवा पार परमेष्ठी...जय जय जय जय कार

लीना शरणा सेठ सुदर्शन, सूली से बन गया सिंहासन
जय जय करें नर नार परमेष्ठी...जय जय जय जय कार

द्रौपदी चीर सभा में हरणा, तब तेरा ही लीना शरणा
बढ गया चिर अपार परमेष्ठी...जय जय जय जय कार

सोमा ने तुम सुमरन कीना, सर्प फ़ूल माला कर दीना
वर्ते मंगलाचार परमेष्ठी...जय जय जय जय कार

अमर शरण में सम्प्रति आया, कर्मो के दुख से घबराया
शीघ्र करो उद्धार परमेष्ठी...जय जय जय जय कार

जो मंगल चार जगत में हैं

जो मंगल चार जगत में हैं, हम गीत उन्हीं के गाते हैं,
मंगलमय श्री जिन चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥

जहां राग द्वेष की गंध नहीं, बस अपने से ही नाता है,
जहां दर्शन ज्ञान अनंतवीर्य-सुख का सागर लहराता है
जो दोष अठारह रहित हुऐ, हम मस्तक उन्हें नवाते हैं ॥मंगल॥

जो द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, नित सिद्धालय के वासी हैं,
आतम को प्रतिबिम्बित करते, जो अजर अमर अविनाशी हैं
जो हम सबके आदर्श सदा, हम उनको ही नित ध्याते हैं ॥मंगल॥

जो परम दिगंबर वन वासी गुरु रत्नत्रय के धारी हैं,
आरंभ परिग्रह के त्यागी, जो निज चैतन्य विहारी हैं
चलते-फ़िरते सिद्धों से गुरु-चरणों में शीश झुकाते हैं ॥मंगल॥

प्राणों से प्यारा धर्म हमें, केवली भगवान का कहा हुआ,
चैतन्यराज की महिमामय, यह वीतराग रस भरा हुआ
इसको धारण करने वाले भव-सागर से तिर जाते हैं ॥मंगल॥

णमोकार नाम का ये कौन मंत्र

आचार्य जी से ये पूछे जग सारा,
णमोकार नाम का ये कौन मंत्र प्यारा।

बोले मुस्काते मुनिवर सुनो भाई सारे...२
अनंतानंत हैं ये पंचरंग प्यारे, पैंतिस अक्षर से शोभित, ओ...
मंत्र है निराला, इसीलिये प्यारा॥ आचार्य जी से ॥

महामंत्र कहती इसको है सारी जनता...२
पार लगाता उसको जो इसे जपता, मंत्र है ये ऐसा जिसने, ओ...
लाखों को तारा, इसीलिये प्यारा॥ आचार्य जी से ॥

पंच परमेष्ठी के गुणों को प्रचारता...२
धर्म विशेष को ये नहीं है दुलारता, ये महामंत्र है, ओ...
तारण हारा, इसीलिये प्यारा॥ आचार्य जी से ॥

मनोरमा सती का शील था बचाया...२
महामंत्र का ये वर्णन ग्रंथों ने गाया, ऐसे महामंत्र को, ओ...
वन्दन हमारा, इसीलिये प्यारा॥ आचार्य जी से ॥

णमोकार मन्त्र को प्रणाम हो

णमोकार मन्त्र को प्रणाम हो, प्रणाम हो
है अनादि महामंत्र मंगल निष्काम हो ॥टेक॥

पहला अरिहंत नाम करता है कर्म नाश
जीवों को देता है ये ज्ञान सूर्य का प्रकाश
जय हो अरहंत देव तुम्ही धर्मध्यान हो ॥१ है..॥

दूजा है सिद्ध नाम जन्म मृत्यु से विहीन
अविनाशी वीतरागी सदा स्वयं आत्मलीन
है अनंत शुद्ध सिद्ध सृष्टि के ललाम हो ॥२ है..॥

महाव्रती ज्ञानी आचार्य को नमस्कार हो
उपाध्याय ज्ञान ज्योति जहां अन्धकार हो
विनयशील वीतराग साधु ज्ञानवान हो ॥३ है..॥

सर्व साध्य मुक्ति हो महामंत्र ध्यान से
अंतर बाहर पवित्र मन्त्र नमस्कार से
नमस्कार मन्त्र मुक्ति सिद्धि निधान हो ॥४ है..॥

नमन हमारा अरिहंतों को

नमन हमारा अरिहंतों को, जो जग के सब पाप मिटाते,
जिनकी पावन चरण धूलि पर, पग पग पर तीरथ हो जाते ॥नमन॥

नमन हमारा सिद्ध प्रभु को, तोड़ चुके जो भव की कारा,
जिनके ज्योतिर्मय चिंतन से, कर्मन से होवे उजियारा ॥नमन॥

नमन हमारा आचार्यों को, विश्ववन्द्य जो आचरणों से,
सहज मुक्ति लिपटी रहती है, जिनके मंगलमय चरणों से ॥नमन॥

फिर हैं नमन उपाध्यायों को, जो जग में निर्ग्रंथ कहाते,
ज्ञानज्योति से तिमिर हटाकर, पथभूलों को राह दिखाते ॥नमन॥

नमन हमारा साधुजनों को, जो परहित के हैं अवतारी,
कोटिजनों के लिए बनी है, जिनकी पावन निधिया सारी ॥नमन॥

पञ्च नमन ये पुण्य विधायक, इनसे होता पाप शमन,
सर्व मंगलो में मंगलमय, यही प्रथम मंगलाचरण है ॥नमन॥

पंच परम परमेष्ठी देखे

पंच परम परमेष्ठी देखे, हृदय हर्षित होता है,
आनंद उल्लसित होता है, हो... सम्यग्दर्शन होता है॥

दर्शन-ज्ञान-सुख वीर्य स्वरूपी, गुण अनंत के धारी हैं,
जग को मुक्ति मार्ग बताते, निज चैतन्य विहारी हैं,
मोक्ष मार्ग के नेता देखे, विश्व तत्व के ज्ञाता देखे। हृदय॥

द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, जो सिद्धालय के वासी हैं,
आतम को प्रतिबिम्बित करते, अजर अमर अविनाशी हैं,
शाश्वत सुख के भोगी देखे, योगरहित निज योगी देखे ॥हृदय॥

साधु संघ के अनुशासक जो, धर्म तीर्थ के नायक हैं,
निजपर के हितकारी गुरुवर, देव धर्म परिचायक हैं,
गुण छत्तीस सुपालक देखे, मुक्ति मार्ग संचालक देखे ॥हृदय॥

जिनवाणी को हृदयंगम कर, शुद्धातम रस पीते हैं,
द्वादशांग के धारक मुनिवर, ज्ञानानंद में जीते हैं,
द्रव्य-भाव श्रुत धारी देखे, बीस-पांच गुणधारी देखे ॥हृदय॥

निजस्वभाव साधन रत साधु, परम दिगंबर वनवासी,
सहज शुद्ध चैतन्य राजमय, निजपरिणति के अभिलाषी,
चलते-फ़िरते सिद्ध प्रभु देखे, बीस-आठ गुणमय विभु देखे ॥हृदय॥

बने जीवन का मेरा आधार रे

बने जीवन का मेरा आधार रे,
णमोकार णमोकार णमोकार रे॥

पहली शरण अरिहंतों की जाना,
हो जाओगे भव से पार रे ॥१॥ णमोकार...

दूजी शरण श्री सिद्धों की जाना,
मुक्ति का अंतिम द्वार रे ॥२॥ णमोकार...

तीजी शरण आचार्यों की जाना,
करते हैं सबका उद्धार रे ॥३॥ णमोकार...

चौथी शरण उपाध्यायों की जाना,
देते जिनवाणी का ज्ञान रे ॥४॥ णमोकार...

पांचवी शरण सर्व साधु की जाना,
जिन पथ पे चलते वो शान से ॥५॥ णमोकार...

मंत्र जपो नवकार मनुवा

मंत्र जपो नवकार मनुवा, मंत्र जपो नवकार,
पंचप्रभु को वंदन कर लो, परमेष्ठी सुखकार॥

अरहंतों का दर्शन करलो, शुद्धातम का परिचय कर लो
शिवसुख साधनहार, मनुवा, मंत्र जपो नवकार॥

सब सिद्धों का ध्यान लगालो, सिद्ध समान ही निज को ध्यालो
मंगलमय सुखकार मनुवा, मंत्र जपो नवकार॥

आचार्यों को शीश नवाओ, निर्ग्रंथों का पथ अपनाओ
मुक्ति मार्ग आराध मनुवा, मंत्र जपो नवकार॥

उपाध्याय से शिक्षा लेकर, द्‌वादशांग को शीश नवाकर
जिनवाणी उर धार मनुवा, मंत्र जपो नवकार॥

सर्व साधु को वंदन कर लो, रत्नत्रय आराधन कर लो
जन्म मरण क्षयकार मनुवा, मंत्र जपो नवकार॥

मंत्र नवकार हमें प्राणों से प्यारा

मंत्र नवकार हमें प्राणों से प्यारा,
ये है वो जहाज जिसने लाखों को तारा

अरिहंतों को नमन हमारे, अशुभ कर्म अरि हनन करे
सिद्धों के सुमिरन से आत्मा, सिद्ध क्षेत्र को गमन करे
भव भव में नहीं जन्में दुबारा ॥मंत्र नवकार...॥१॥

आचार्यों के आचारों से, निर्मल निज आचार करें
उपाध्याय का ध्यान धरें हम, संवर का सत्कार करें
सर्व साधु को नमन हमारा ॥मंत्र नवकार...॥२॥

इसी मंत्र से नाग नागिनी, पद्मावती धरणेन्द्र हुए
सेठ सुदर्शन को सूली से, मुक्ति मिलि राजेन्द्र हुए
अंजन चोर का कष्ट निवारा ॥मंत्र नवकार...॥३॥

सोते उठते चलते फ़िरते, इसी मंत्र का जाप करो
आप कमाये पाप तो उनका, क्षय भी अपने आप करो
इस महामंत्र का ले लो सहारा ॥मंत्र नवकार...॥४॥

मंत्र नवकारा हृदय में धर

मंत्र नवकारा हृदय में धर लिया,
उसने जीते कर्म शिव को वर लिया ॥

मंत्र मे अरिहन्त सिद्धों को नमन,
उसने आतम सिद्ध अपना कर लिया॥ उसने जीते ..॥

भाव से आचार्य को वंदन किया,
ज्ञान मोती से ये दामन भर लिया॥ उसने जीते ..॥

भक्ति से उवज्झाय को कीना नमन,
उसने जडता का अंधेरा हर लिया॥ उसने जीते ..॥

सर्व साधु तारने को नाव है,
जो चढा इस नाव पे भव तर लिया॥ उसने जीते ..॥

मंत्र तीनो लोक में ऐसा नहीं,
जिन जपा जीवन सफ़ल प्रभु कर लिया॥ उसने जीते ..॥

अपनी सुधि पाय आप

अपनी सुधि पाय आप, आप यों लखायो ॥टेक॥

मिथ्यानिशि भई नाश, सम्यक रवि को प्रकाश
निर्मल चैतन्य भाव, सहजहिं दर्शायो ॥

ज्ञानावर्णादि कर्म, रागादि मेटे भर्म
ज्ञानबुद्धि तें अखंड, आप रूप थायो ॥

सम्यकदृग ज्ञान चरण, कर्त्ता कर्मादि करण
भेदभाव त्याग के, अभेद रूप पायो ॥

शुक्लध्यान खड्ग धार, वसु अरि कीने संहार
लोक अग्र सुथिर वास, शाश्वत सुख पायो ॥

अपनी सुधि भूल आप

अपनी सुधि भूल आप, आप दुख उपायौ,
ज्यौं शुक नभचाल विसरि नलिनी लटकायो ॥

चेतन अविरुद्ध शुद्ध, दरश बोधमय विशुद्ध
तजि जड़-रस-फरस रूप, पुद्गल अपनायौ ॥१॥

इन्द्रियसुख दुख में नित्त, पाग राग रुख में चित्त
दायकभव विपति वृन्द, बन्धको बढ़ायौ ॥२॥

चाह दाह दाहै, त्यागौ न ताहि चाहै
समतासुधा न गाहै जिन, निकट जो बतायौ ॥३॥

मानुषभव सुकुल पाय, जिनवर शासन लहाय
'दौल' निजस्वभाव भज, अनादि जो न ध्यायौ ॥४॥

अपने में अपना परमातम

अपने में अपना परमातम, अपने से ही पाना रे
अपने को पाने अपने से, दूर कहीं नहीं जाना रे ॥

अपनी निधि अपने में होगी, अपने को अपनेपन दे,
अपनी निधि की विधि अपने में, अपना साधन आतम रे,
अपना अपना रहा सदा ही, परिचय ही को पाना रे,
अपने को पाने अपने से...

अपने जैसे जीव अनन्ते, अपने बल से सेते हुए,
अपनी प्रभुता की प्रभुता ही, पहचानी प्रसेते हुए,
अपनी प्रभुता नहीं बनाना, अपने से है पाना रे,
अपने को पाने अपने से...

अब गतियों में नाहीं रुलेंगे

अब गतियों में नाहीं रुलेंगे, निजानंद पान करेंगे ॥

अब भव भव का नाश करेंगें, निजानंद पान करेंगे
खुद की खुद में ही खोज करेंगें, निजानंद पान करेंगे ॥
अब गतियों में...

मैं मुझ में पर पर में रहता, निज रस के आनंद में रहता,
अब केवल ज्ञान करेंगें, निजानंद पान करेंगे ॥
अब गतियों में...

मैं ज्ञायक ज्ञायक ही न जाना, मैं तो हूं बस सिद्ध के समाना,
अब सिद्धों के बीच रहेंगें, निजानंद पान करेंगे ॥
अब गतियों में...

अब मेरे समकित सावन

तर्ज : आज मैं परम पदारथ

अब मेरे समकित सावन आयो ॥टेक॥
बीति कुरीति मिथ्या मति ग्रीषम, पावस सहज सुहायो ॥

अनुभव दामिनि दमकन लागी, सुरति घटा घन छायो
बोलै विमल विवेक पपीहा, सुमति सुहागिनि भायो ॥१ अब.॥

गुरुधुनि गरज सुनत सुख उपजै, मोर सुमन विहसायो
साधक भाव अंकूर उठे बहु, जित तित हरष सवायो ॥२ अब.॥

भूल धूल कहिं भूल न सूझत, समरस जल झर लायो
'भूधर' को निकसै अब बाहिर, निज निरचू घर पायो ॥३ अब.॥

अरे जिया जग धोखे की टाटी

अरे जिया जग धोखे की टाटी॥

झूठा उद्‌यम लोक करत है, जामें निशदिन घाटी
जानबूझ कर अंध बने हैं, आंखन बांधी पाटी ॥

निकस जायें प्राण छिनक में, पडी रहेगी माटी
दौलतराम समझ मन अपने, दिल की खोल कपाटी ॥

आओ रे आओ रे ज्ञानानंद की डगरिया

आओ रे आओ रे ज्ञानानंद की डगरिया,
तुम आओ रे आओ, गुण गाओ रे गाओ,
चेतन रसिया, आनंद रसिया ॥

बडा अचंभा होता है, क्यों अपने से अनजान रे,
पर्यायों के पार देख ले, आप स्वयं भगवान रे ॥

दर्शन ज्ञान स्वभाव में, नहीं ज्ञेय का लेश रे,
निज में निज को जानकर, तजो ज्ञेय का वेश रे ॥

मैं ज्ञायक मैं ज्ञान हूं, मैं ध्याता मैं ध्येय रे,
ध्यान ध्येय में लीन हो, निज ही निज का ज्ञेय रे ॥

आतम रूप अनूपम अद्भुत

आतम रूप अनूपम अद्भुत, याहि लखैं भव सिंधु तरो ॥टेक॥

अल्पकाल में भरत चक्रधर, निज आतमको ध्याय खरो
केवलज्ञान पाय भवि बोधे, ततछिन पायौ लोकशिरो ॥

या बिन समुझे द्रव्य-लिंगमुनि, उग्र तपनकर भार भरो
नवग्रीवक पर्यन्त जाय चिर, फेर भवार्णव माहिं परो ॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप, येहि जगत में सार नरो
पूरव शिवको गये जाहिं अब, फिर जैहैं,यह नियत करो॥

कोटि ग्रन्थको सार यही है, ये ही जिनवानी उचरो
'दौल' ध्याय अपने आतमको, मुक्तिरमा तब वेग बरो ॥

ऐसा मोही क्यों न अधोगति जावै

ऐसा मोही क्यों न अधोगति जावै, जाको जिनवानी न सुहावै

वीतराग से देव छोड़कर, भैरव यक्ष मनावै
कल्पलता दयालुता तजि, हिंसा इन्द्रायनि वावै ॥१॥

रुचै न गुरु निर्ग्रन्थ भेष बहु, - परिग्रही गुरु भावै
परधन परतियको अभिलाषै, अशन अशोधित खावै ॥२॥

परकी विभव देख ह्वै सोगी, परदुख हरख लहावै
धर्म हेतु इक दाम न खरचै, उपवन लक्ष बहावै ॥३॥

ज्यों गृह में संचै बहु अघ त्यों, वनहू में उपजावै
अम्बर त्याग कहाय दिगम्बर, बाघम्बर तन छावै ॥४॥

आरम्भ तज शठ यंत्र मंत्र करि, जनपै पूज्य मनावै
धाम वाम तज दासी राखै, बाहिर मढ़ी बनावै ॥५॥

नाम धराय जती तपसी मन, विषयनिमें ललचावै
'दौलत' सो अनन्त भव भटकै, ओरनको भटकावै ॥६॥

ओ जीवड़ा तू थारी

ओ जीवड़ा तू थारी करणी रो, फल इक दिन पावेलो
पापां रो बांध्योड़ो बोझो, थारे सागै जावेलो ॥टेक॥

चार दिना री चाँदनी जी, फेर अँधेरी रात
आयु पल पल बीतै छै जी - २, मत ना भूलो या बात ॥१-पापां॥

भाई बंधु साथी सगलां, कोई न साथै जाय
जीव अकेलो अवतरयो जी - २, और अकेलो जाय ॥२-पापां॥

जो जैसी करनी करे जी, वैसो ही फल पाय
पाप करयां दुःख ही मिले जी -२, जिनवाणी बतलाय ॥३-पापां॥

और अबै न कुदेव सुहावै

और अबै न कुदेव सुहावै, जिन थाके चरनन रति जोरी ॥टेक॥

कामकोहवश गहैं अशन असि, अंक निशंक धरै तिय गोरी
औरनके किम भाव सुधारैं, आप कुभाव-भारधर-धोरी ॥१॥

तुम विनमोह अकोहछोहविन, छके शांत रस पीय कटोरी
तुम तज सेय अमेय भरी जो, जानत हो विपदा सब मोरी ॥२॥

तुम तज तिनै भजै शठ जो सो दाख न चाखत खात निमोरी
हे जगतार उधार 'दौलको', निकट विकट भवजलधि हिलोरी ॥३॥

कबधौं सर पर धर डोलेगा

कबधौं सर पर धर डोलेगा, पापों की गठरिया
करले करले हल्का बोझा, लम्बी है डगरिया ॥टेर॥

यह संसार बिहड बन पंछी, कुल तरुवर सम जान ले
आयु रेन बसेरा करके, उड जाना है मान ले
फ़िर भोगों में तडफ़ रहा क्यों, जल बिन ज्यों मछलिया ॥१॥

चिंतामणि सम मनुष जनम पा, निज स्वभाव क्यों भूला है
अक्षय आतम द्रव्य छोडकर, नश्वर पर क्यों फ़ूला है
क्षण भंगुर है तन धन यौवन, जिमि सावन बदरिया ॥२॥

परिग्रह पोट उतार सयाने, रत्नत्रय उर धार ले
पंचम गति सौभाग्य मिलेगी, वीतराग पथ सार ले
प्रभु भक्ति बिन बीत ना जाये, तेरी प्रिय उमरिया ॥३॥

कबै निरग्रंथ स्वरूप धरूंगा

कबै निरग्रंथ स्वरूप धरूंगा, तप करके मुक्ति वरूंगा॥

कब गृह वास आस सब छाड़ूं, कब वन में विचरूंगा
बाह्याभ्यंतर त्याग परिग्रह, उभय लोक विचरूंगा ॥

होय एकाकी परम उदासी, पंचाचार धरूंगा
कब स्थिर योग धरु पद्मासन, इन्द्रिय दमन करूंगा ॥

आतम ध्यान साजि दिल अपने, मोह अरि से लड़ूंगा
त्याग उपाधि समाधि लगाकर, परिषह सहन करूंगा ॥

कब गुणस्थान श्रेणी पर चढ के करम कलंक हरूंगा
आनन्दकंद चिदानन्द साहब, बिन तुमरे सुमरूंगा ॥

ऐसी लब्धि जबे मैं पाऊं, आप में आप तिरूंगा
अमोलकचंद सुत हीराचंद कहै यह, चहुरि जग में ना भ्रमूंगा॥

करलो आतम ज्ञान परमातम

करलो आतम ज्ञान परमातम बन जइयो
करलो भेदविज्ञान ज्ञानी बन जइयो ॥

जग झूठा और रिश्ते झूठे, रिश्ते झूठे नाते झूठे
सांचो है आतम राम, परमातम बन जइयो ॥

कुन्दकुन्द आचार्य देव ने, आतम तत्व बताया है
शुद्धातम को जान, परमातम बन जइयो ॥

देह भिन्न है आतम भिन्न है, ज्ञान भिन्न है राग भिन्न है
ज्ञायक को पहिचान, परमातम बन जइयो ॥

कुन्दकुन्द के ही प्रताप से, ध्रुव की धूम मची है रे
धर लो ध्रुव का ध्यान, परमातम बन जइयो ॥

कहा मानले ओ मेरे भैया

कहा मानले ओ मेरे भैया, भव भव डुलने में क्या सार है
तू बनजा बने तो परमात्मा, तेरी आत्मा की शक्ति अपार है ॥

भोग बुरे हैं त्याग सजन ये, विपद करें और नरक धरें
ध्यान ही है एक नाव सजन जो, इधर तिरें और उधर वरें
झूँठी प्रीति में तेरी ही हार है, वाणी गणधर की ये हितकार है ॥१॥

लोभ पाप का बाप सजन क्यों राग करे दुःखभार भरे
ज्ञान कसौटी परख सजन मत छलियों का विश्वास करे
ठग आठों की यहाँ भरमार है, इन्हें जीते तो बेड़ा पार है ॥२॥

नरतन का 'सौभाग्य' सजन ये हाथ लगे ना हाथ लगे
कर आतमरस पान सजन जो जनम भगे और मरण भगे
मोक्ष महल का ये ही द्वार है, वीतरागी ही बनना सार है ॥३॥

काहे पाप करे काहे छल

काहे पाप करे काहे छल, जरा चेत ओ मानव करनी से....
तेरी आयु घटे पल पल ॥टेक॥

तेरा तुझको न बोध विचार है, मानमाया का छाया अपार है
कैसे भोंदू बना है संभल,
जरा चेत ओ मानव करनी से... ॥

तेरा ज्ञाता व दृष्टा स्वभाव है, काहे जड़ से यूं इतना लगाव है
दुनियां ठगनी पे अब ना मचल,
जरा चेत ओ मानव करनी से... ॥

शुद्ध चिद्रूप चेतन स्वरूप तू, मोक्ष लक्ष्मी का 'सौभाग्य' भूप तूं
बन सकता है यह बल प्रबल,
जरा चेत ओ मानव करनी से... ॥

कैसो सुंदर अवसर आयो है

कैसो सुंदर अवसर आयो है, आयो है
ज्ञान स्वभावी आत्मा, मेरे मन को भायो है ॥

भूतकाल प्रभु आपका, वह मेरा वर्तमान,
वर्तमान जो आपका, वह भविष्य मम जान ॥कैसो...॥

रूप तुम्हारा सबसे न्यारा, भेद ज्ञान करना,
जौलों पौरुष थके न तौलों, उद्यम सो चरना ॥कैसो...॥

अनुभव चितामणी रतन, अनुभव है रस कूप,
अनुभव मारग मोक्ष को, अनुभव मोक्ष स्वरूप ॥कैसो...॥

जो कर्त्ता सो भोक्ता, साथी सगा न कोय,
धर्म छुडावे बंध ते, धर्म धरो सब कोय ॥कैसो...॥

निर्मल ध्यान लगाय कर, कर्म कलंक नशाय,
भये सिद्ध परमात्मा, वन्दूं मन वच काय ॥कैसो...॥

क्यूं करे अभिमान जीवन

क्यूं करे अभिमान जीवन, है ये दो दिन का
इक हवा के झोंके से उड़ जाए ज्यों तिनका ॥

लाखों आए और चले गए,थिर न रह पाया
ख़ाक बन जायेगी इक दिन, ये तेरी काया
ये समय है आज तेरे आत्म चिंतन का ॥

खाली हाथों आया जग में, संग ना कुछ जाए
कर्म तू जैसा करेगा, काम वो ही आए
ज्ञान की ज्योति जगा, तम दूर कर मन का ॥

छोड़कर झंझट जगत के, शरण प्रभु की आ
त्याग जप तप शील संयम,साधना चित ला
दास है ये भक्त तेरा- वीर चरणन का ॥

गाडी खडी रे खडी रे तैयार

गाडी खडी रे खडी रे तैयार, चलो रे भाई शिवपुर को ॥

जो तू चाहे मोक्ष को, सुन रे मोही जीव
मिथ्यामत को छोड कर, जिनवाणी रस पीव ॥१॥

जो जिन पूजै भाव धर, दान सुपात्रहि देय
सो नर पावे परम पद, मुक्ति श्री फल लेय ॥२॥

जिनकी रुचि अति धर्म सों, साधर्मिन सौं प्रीत
देव शास्त्र गुरु की सदा, उर में परम प्रतीत ॥३॥

इस भव तरु का मूल इक, जानों मिथ्या भाव
ताको कर निर्मूल अब, करिये मोक्ष उपाव ॥४॥

दानों में बस दान है, श्रेष्ठ ज्ञान ही दान
जो करता इस दान को, पाता केवलज्ञान ॥५॥

जो जाने अरहंत गुण, द्रव्य और पर्याय
सो जाने निज आत्मा, ताके मोह नशाय ॥६॥

निज परिणति से जो करे, जड चेतन पहिचान
बन जाता है एक दिन, समयसार भगवान ॥७॥

तीन लोक का नाथ तू, क्यों बन रहा अनाथ
रत्नत्रय निधि साध ले, क्यों न होय जगनाथ ॥८॥

चेतन अपनो रूप निहारो

चेतन अपनो रूप निहारो, नहीं गोरो नहीं कारो
दर्शन ज्ञान मयी तिन मूरत, सकल कर्म ते न्यारो।

जाकी बिन पहचान किये ते, सहो महा दुख भारो,
जाके लखे उदय हुए तत्क्षण, केवलज्ञान उजारो।

कर्म जनित पर्याय पाय ना, कीनो आप पसारो,
आपा पर स्वरूप ना पिछान्यो, तातें सहो रुझारो।

अब निज में निज जान नियत कहां सो सब ही उरझारो,
जगत राम सब विधि सुखसागर, पदी पाओ अविकारो।

चेतन तूँ तिहुँ काल अकेला

चेतन तूँ तिहुँ काल अकेला,
नदी नाव संजोग मिले ज्यों, त्यों कुटुम्ब का मेला ॥
चेतन....

यह संसार असार रूप सब, ज्यों पटपेखन खेला
सुख सम्पत्ति शरीर जल बुद बुद, विनशत नाहीं बेला ॥
चेतन....

मोही मगन आतम गुन भूलत, पूरी तोही गल जेला
मै मै करत चहुंगति डोलत, बोलत जैसे छैला ॥
चेतन....

कहत बनारसि मिथ्यामत तज, होय सुगुरु का चेला
तास वचन परतीत आन जिय,होई सहज सुर झेला ॥
चेतन.....

जब चले आत्माराम

जब चले आत्माराम, छोड धन-धाम, जगत से भाई
जग में न कोई सहायी॥

तू क्यों करता तेरा मेरा, नहीं दुनिया में कोई तेरा
जब काल आय तब सबसे होय जुदाई, जग में न कोई सहायी ॥

तू मोहजाल में फ़ंसा हुआ, पापों के रंग में रंगा हुआ
जिन्दगानी तूने वृथा यों जी गवाई, जग में न कोई सहायी ॥

सम्यक्त्व सुधा का पान करो, निज आतम ही का ज्ञान करो
यूं टले जीव से लगी कर्म की काई, जग में न कोई सहायी ॥

चेतो चेतो अब बढे चलो, सतपथ सुमार्ग पर बढे चलो
यूं बाज रही यमराजा की शहनाई, जग में न कोई सहायी ॥

जिया कब तक उलझेगा

जिया कब तक उलझेगा संसार विकल्पों मे
कितने भव बीत चुके, संकल्प विकल्पों में ॥टेक॥

उड उड कर यह चेतन, गति गति में जाता है
भोगों में लिप्त सदा भव भव दुख पाता है ॥
निज तो न सुहाता है, पर ही मन भाता है
ये जीवन बीत रहा, झूंठे संकल्पों में ॥जिया-१॥

तू कौन कहां का है और क्या है नाम अरे
आया किस गांव से है, जाना किस गांव अरे ॥
यह तन तो पुद्गल है, दो दिन का ठाठ अरे
अन्तर मुख हो जा तू, तो सुख अति कल्पों में ॥जिया-२॥

यदि अवसर चूका तो, भव भव पछतायेगा
यह नर भव कठिन महा, किस गति में जायेगा ॥
नर भव पाया भी तो, जिन कुल नहीं पायेगा
अनगिनत जन्मों में, अनगिनत विकल्पों में ॥जिया-३॥

जीव! तू भ्रमत सदीव अकेला

जीव! तू भ्रमत सदीव अकेला
संग साथी कोई नहिं तेरा ॥टेक॥

अपना सुखदुख आप हि भुगतै,
होत कुटुंब न भेला
स्वार्थ भयैं सब बिछुरि जात हैं,
विघट जात ज्यों मेला ॥१॥

रक्षक कोइ न पूरन ह्वै जब,
आयु अंत की बेला
फूटत पारि बँधत नहीं जैसें,
दुद्धर जलको ठेला ॥२॥

तन धन जीवन विनशि जात ज्यों,
इन्द्रजाल का खेला
भागचन्द इमि लख करि भाई,
हो सतगुरु का चेला ॥३॥

जीवन के किसी भी पल में

जीवन के किसी भी पल में वैराग्य उमड सकता है
संसार में रहकर प्राणी, संसार को तज सकता है॥

कहीं दर्पण देख विरक्ति, कहीं मृतक देख वैरागी,
बिन कारण दीक्षा लेता, वो पूर्व जन्म का त्यागी,
निर्ग्रन्थ साधु ही इतने, सदगुण से सज सकता है ॥संसार॥

आत्मा तो अजर अमर है, हम आयु गिनें इस तन की,
वैसा ही जीवन बनता, जैसी धारा चिंतन की,
जो पर को समझ पाया है, वह खुद को समझ सकता है ॥

शास्त्रों में सुने थे जैसे, देखे वैसे ही मुनिवर,
तेजस्वी परम तपस्वी, उपकारी मेरे गुरुवर,
इनकी मृदु वाणी सुनकर, हर प्राणी सुधर सकता है ॥

जैन धरम के हीरे मोती

तर्ज : सांवली सलोनी तेरी

जैन धरम के हीरे मोती चुन ले प्राणी
चार दिनों की तेरी बची जिंदगानी हो..
करता है क्यों पगले तू मनमानी
मिल जाएगी तेरी मिट्टी में जवानी हो

जनम हुआ तेरा इस धरती पे तूने रुदन मचाया
आंख ही तेरी खुल ना पाई, भूख-भूख चिल्लाया
बचपन बीता, खेल में तेरा,
आया बुढापा, रोग ने घेरा,
सोने जैसे शास्त्र की कदर ना पहचानी ॥चार॥

दौलत के दीवानों सुन लो एक दिन ऐसा आएगा
धन दौलत और रूप खजाना पडा यहीं रह जाएगा
स्वारथ का है बस यही खेला - २
दो दिन का है बस यही मेला
यूं ही उमरिया तेरी खाली बीत जानी ॥चार॥

जो अपना नहीं उसके अपनेपन

जो अपना नहीं उसके अपनेपन में जीवन चला गया
पर में अपनापन करके हा मैं अपने से छला गया॥

जग में ऐसा हुआ कौन जो अपने से ही हारा,
जिसकी परिणति को अनादि से मोह शत्रु ने मारा
जिसने जिसको अपना माना, उसे छोड वह चला गया ॥पर॥

अपने को विस्मृत करके हाँ जिसको अपना माना,
क्या वह अपना हुआ कभी, यह सत्य अरे ना जाना
जो अनादि से अपना है वह विस्मृति में क्यों चला गया ॥पर॥

अपने में पर के शासन का अंत कहो कब होगा,
निज में पर के अवभासन का अंत कहो कब होगा
प्रगट ज्ञान का अंश अरे पर परिणति में क्यों चला गया ॥पर॥

जिसने वीतराग मुद्रा लख निज स्वरूप को जाना,
रंग राग से भिन्न अरे निज आत्म तत्व पहिचाना
प्रगट ज्ञान का पुंज तभी निज ज्ञान पुंज में चला गया ॥पर॥

जो आज दिन है वो, कल ना रहेगा

जो आज दिन है वो, कल ना रहेगा, कल ना रहेगा,
घड़ी ना रहेगी ये पल ना रहेगा
समझ सीख गुरु की वाणी, फिरको कहेगा, फिरको कहेगा,
घड़ी ना रहेगी ये पल ना रहेगा ॥टेक॥

जग भोगों के पीछे, अनन्तों काल काल बीते हैं
इस आशा तृष्णा के अभी भी सपने रीते हैं
बना मूढ़ कबलों मन पर, चलता रहेगा-२ ॥घड़ी-१॥

अरे इस माटी के तन पे, वृथा अभिमान है तेरा
पड़ा रह जायगा वैभव, उठेगा छोड़ जब डेरा
नहीं साथ आया न जाते, कोई संग रहेगा-२ ॥घड़ी-२॥

ज्ञानदृग खोलकर चेतन, भेदविज्ञान घट भर ले
सहज 'सौभाग्य' सुख साधन, मुक्ति रमणी सखा वर ले
यही एक पद है प्रियवर, अमर जो रहेगा-२ ॥घड़ी-३॥

जो जो देखी वीतराग

जो जो देखी वीतराग ने, सो सो होसी वीरा रे
अनहोनी होसी नहि क्यों जग में, काहे होत अधीरा रे ॥

समय एक बढै नहिं घटसी, जो सुख दुख की पीरा रे
तू क्यों सोच करै मन मूरख, होय वज्र ज्यों हीरा रे ॥

लगै न तीर कमान बान कहूं, मार सकै नहिं मीरा रे
तू सम्हारि पौरुष बल अपनो, सुख अनंत तो तीरा रे ॥

निश्चय ध्यान धरहु वा प्रभु को, जो टारे भव भीरा रे
'भैया' चेत धरम निज अपनो, जो तारैं भव नीरा रे ॥

ज्ञाता दृष्टा राही हूं

ज्ञाता दृष्टा राही हूं, अतुल सुखों का ग्राही हूं,
बोलो मेरे संग, आनंदघन आनंदघन आनंदघन ॥

आत्मा में रमूंगा मैं क्षण क्षण में,
चाहे मेरा ज्ञान जाने निज पर को,
अपने को जाने बिना लूंगा नहीं दम,
आगम की आगम बढाऊंगा कदम,
सुख में दुख में, दुख में सुख में, एक राह पर चल ॥

धूप हो या गर्मी बरसात हो जहां,
अनुभव की धारा बहाऊंगा वहां,
विषयों का फ़िर नहीं होगा जनम,
आगम की आगम बढाऊंगा कदम,
सुख में दुख में, दुख में सुख में, एक राह पर चल ॥

गुण अनंत का स्वामी हूं मैं मुझमें ये रतन,
गणधर भी हार गये कर वर्णन,
अनुपम और अद्भुत है मेरा ये चमन,
आगम की आगम बढाऊंगा कदम,
सुख में दुख में, दुख में सुख में, एक राह पर चल ॥

तन पिंजरे के अन्दर बैठा

तन पिंजरे के अन्दर बैठा आतमराम कहे
पिंजरा दिन दिन होत पुराना पंछी वही रहे

इस पिंजरे के नौ दरावाजे न सांकल ना ताला
खुले हुए पिंजरे में रहता पंछी उड़ने वाला
पिंजरा जन्मे पिंजरा पनपे पिंजरा जरे बहे ॥पिंजरा..॥

ना जाने कितने युग से है पिंजरे पंछी का नाता
पञ्च तत्त्व से निर्मित पिंजरा बिखर बिखर जुड़ जाता
हानि लाभ सुख दुःख पिंजरे का पंछी आप सहे ॥पिंजरा..॥

लाख चौरासी भाँती के पिंजरे पंछी सब एक जैसे
ज्ञानी सोचे इस पिंजरे से मुक्ति मिलती कैसे
पिंजरा पंछी भिन्न जानने से ही मुक्ति मिलती ॥पिंजरा..॥

तू जाग रे चेतन देव तुझे जिनदेव

तर्ज : आ लौट के आजा मेरे मीत

तू जाग रे चेतन देव तुझे जिनदेव जगाते हैं
तेरे अंदर में आनन्द के गीत तुझे संगीत न भाते हैं ॥

परपद अपद है, परपद अपद है तुझको न शोभा देता
अपने ही रंग में, अपनी ही धुन में रम जा तू संतों ने घेरा
तेरी महिमा अगम अनूप, तुझे जिनदेव जगाते हैं ॥

इस पल भी जीना, निज बल पे जीना, शोभावे सन्मुख ही जीना
दो दिन का मेला फ़िर तू अकेला कोई है जग का कहीं ना
सुन समयसार संगीत तुझे जिनदेव सुनाते हैं ॥

चैतन्य रस में, आनन्द के रस में, शान्ति के रस में नहाले
प्रभुता के रस में, भीरुता के रस में, वैराग्य रस में मजा ले
फ़िर सब गावें तेरे गीत, तुझे जिनदेव जगाते हैं ॥

तू जाग रे चेतन प्राणी

तू जाग रे चेतन प्राणी कर आतम की अगवानी
जो आतम को लखते हैं उनकी है अमर कहानी ॥

है ज्ञान मात्र निज ज्ञायक, जिसमें है ज्ञेय झलकते
है झलकन भी ज्ञायक है, इसमें नहीं ज्ञेय महकते
मै दर्शन ज्ञान स्वरूपी मेरी चैतन्य निशानी ॥

अब समकित सावन आया, चिन्मय आनंद बरसता
भीगा है कण कण मेरा, हो गई अखंड सरसता
समकित की मधु चितवन झलकी है मुक्ति निशानी ॥

ये शाश्वत भव्य जिनालय है शांति बरसती इनमें
मानों आया सिद्धालय मेरी बस्ती हो उसमें
मैं हूं शिवपुर का वासी भव भव खतम कहानी ॥

तोड़ विषियों से मन जोड़

तोड़ विषियों से मन जोड़ प्रभु से लगन,
आज अवसर मिला ॥टेर ॥

रंग दुनियां के अब तक न समझा है तू
भूल निज को हा! पर मैं यों रीझा है तू ॥
अब तो मुँह खोल चख, स्वाद आतम का लख
शिव पयोधर मिला ॥१ ॥

हाथ आने की फिर ये सु-घड़ियाँ नहीं
प्रीति जड़ से लगाना है अच्छा नहीं ॥
देख पुद्गल का घर, नहीं रहता अमर
जग चराचर मिला ॥२॥

ज्ञान ज्योति हृदय में अब तो जगा
देख 'सौभाग्य' जग में न कोई सगा ॥
तजदे मिथ्या भरम, तुझे सच्चे धरम का
है अवसर मिला ॥३॥

देखा जब अपने अंतर को

देखा जब अपने अंतर को कुछ और नहीं भगवान हूं मैं
पर्याय भले ही पामर हो अंदर से वैभववान हूं मैं ॥

चैतन्य प्राणों से जीवित हैं, इंद्रिय बल श्वासोच्छ्वास नहीं,
हूं आयु रहित नित अजर अमर, सच्चिदानंद गुणखान हूं मैं ॥

आधीन नहीं संयोगों के, पर्यायों से अप्रभावी हूं,
स्वाधीन अखंड प्रतापी हूं, निज से ही प्रभुतावान हूं मैं ॥

सामान्य विशेषों सहित विशुद्ध, प्रत्यक्ष झलक जावे क्षण में,
सर्वज्ञ सर्वोदय श्री आदिक, सम्यक निधियों की खान हूं मैं ॥

सौ धर्मों में व्याप्ति विभु हूं, अरु धर्म अनंतामयी धर्मी,
नित निज स्वरूप की रचना से, अंतर में धीरजवान हूं मैं ॥

मेरा वैभव शाश्वत अक्षुण्ण, पर से आदान प्रदान नहीं,
त्यागोपादान शून्य निष्क्रिय, अरु अगुरुलघु से उधाम हूं मैं ॥

तृप्ति आनंदमयी प्रगटी, जब देखा अंतर नाथ को मैं,
नहीं रही कामना अब कोई, बस निर्विकार निष्काम हूं मैं ॥

धोली हो गई रे काली कामली

धोली हो गई रे काली कामली माथा की थारी
सुरज्ञानी चेतो, धोली हो गई रे काली कामली ॥टेर॥

वदन गठीलो कंचन काया, लाल बूँद रंग थारो
हुयो अपूरव फेर फार सब, ढांचो बदल्यो सारो ॥१॥

नाक कान आँख्या की किरिया सुस्त पड़ गई सारी
काजू और अखरोट चबे नहिं दाँता बिना सुपारी जी ॥२॥

हालण लागी नाड़ कमर भी झुक कर बणी कवानी
मुंडो देख आरसी सोचो ढल गई कयां जवानी जी ॥३॥

न्याय नीति ने तजकर छोड़ी भोग संपदा भाई
बात-बात में झूठ कपट छल, कीनी मायाचारी ॥४॥

बैठ हताई तास चोपड़ा खेल्यो बुला खिलाय
लड़या पराया भोला भाई फूल्या नहीं समाय ॥५॥

प्रभू भक्ति में रूचि न लीनी नहीं करूणा चितधारी
वीतराग दर्शन नहीं रूचियो उमर खोदई सारी जी ॥६॥

पुन्य योग 'सौभाग्य' मिल्यो है नरकुल उत्तम प्यारो
निजानंद समता रस पील्यो होसी भव निस्तारो ॥७॥

ध्यान धर ले प्रभू को

ध्यान धर ले प्रभू को ध्यान धर ले
आ माथे ऊबी मौत भाया ज्ञान करले ॥टेक ॥

फूल गुलाबी कोमल काया, या पल में मुरझासी,
जोबन जोर जवानी थारी, सन्ध्या सी ढल जासी ॥१॥

हाड़ मांस का पींजरा पर, या रूपाली चाम,
देख रिझायो बावला, क्यूं जड़ को बण्यो गुलाम ॥२॥

लाम्बो चौड़ो मांड पसारो, कीयां रह्यो है फूल,
हाट हवेली काम न आसी, या सोना की झूल ॥३॥

भाई बन्धु कुटुम्ब कबीलो, है मतलब को सारो,
आपा पर को भेद समझले जद होसी निस्तारो ॥४॥

मोक्ष महल को सांचो मारग, यो छः जरा समझले,
उत्तम कुल सौभाग्य मिल्यो है, आतमराम सुमरलौ ॥५॥

निजपुर में आज मची रे होरी

निजपुर में आज मची रे होरी ॥ टेक ॥
उमगी चिदानंद जी इत आये, इत आई सुमति गोरी ॥

लोकलाज कुलकानि गमाई, ज्ञान गुलाल भरी झोरी
समकित केसर रंग बनायो, चारित की पिचुकी छोरी ॥

गावत अजपा गान मनोहर, अनहद झरसौं वरस्यो री
देखन आये बुधजन भीगे, निरख्यौ ख्याल अनोखो री ॥

निजपुर में आज मची होरी

निजपुर में आज मची होरी ॥निज-टेक॥

उमँगि चिदानँदजी इत आये, उत आई सुतीगोरी ॥१-निज॥

लोकलाज कुलकानि गमाई, ज्ञान गुलाल भरी झोरी ॥२-निज॥

समकित केसर रंग बनायो, चारित की पिचुकी छोरी ॥३-निज॥

गावत अजपा गान मनोहर, अनहद झरसौं बरस्यो री ॥४-निज॥

देखन आये बुधजन भीगे, निरख्यौ ख्याल अनोखो री ॥५-निज॥

पाना नहीं जीवन को

पाना नहीं जीवन को, बद्लना है साधना,
तू ऐसा जीवन पावत है, जलना है साधना॥

मूंड मुंडाना बहुत सरल है, मन मुंडन आसान नहीं,
व्यर्थ भभूत रमाना तन पर, यदि भीतर का ज्ञान नहीं,
पर की पीडा में, मोम सा पिघलना है साधना ॥पाना॥

मंदिर में हम बहुत गये पर, मन यह मंदिर नहीं बना,
व्यर्थ शिवालय में जाना जो, मन शिवसुन्दर नहीं बना
पल पल समता में इस मन का ढलना है साधना ॥पाना॥

सच्चा पाठ तभी होगा जब, जीवन में पारायण हो,
श्वास श्वास धडकन धडकन से जुडी हुई रामायण हो,
तब सत पथ पर जन जन मन का चलना है साधना॥पाना॥

पाप मिटाता चल ओ बंधू

तर्ज : गीत गाता चल ओ साथी

पाप मिटाता चल ओ बंधू पुण्य कमाता चल
ओ बंधू रे... भला हो, भलाई कर तू हर घडी हर पल

पाप की नैया कभी तर नहीं सकती, पुण्य से मिलती मेरे भाई आत्म शान्ति
ओ ss कर काम ऐसे आकाश के तले,
धरती पे सदियों (तेरा नाम जो चले) -२
ओ बंधू रे... भलाई का अपने मन में निश्चय कर अटल ॥पाप-१॥

साधाना कठिन करके कहलाया साधू, जाल मोह माया का न तोड पाया बंधू
ओ ss सारा समय तूने यूं ही खोया,
तन किया उजला (मन का मैल न धोया) -२
ओ बंधू रे... करनी का फ़ल भोगेगा आज नहीं तो कल ॥पाप-२॥

कर्म का लेखा कभी टाले न टलेगा, जैसा जो करेगा यहां वैसा ही भरेगा
ओ ss इस बैरी जग में कोइ न अपना,
सच्ची बात है ये (सदा याद रखना) -२
ओ बंधू रे... किसी से कभी ना करना तू कपट और छल ॥पाप-३॥

दान जो लुटाया तूने कहलाया दानी, ज्ञान जो गुरू से लिया बना बडा ज्ञानी
ओ ss गुरु का किया ना आदर सत्कार,
दान और (ज्ञान तेरा हुआ बेकार) - २
ओ बंधू रे... सेवा कर गुरू की होगा तब जीवन सफ़ल ॥पाप-४॥

भजन बिन योंही जनम गमायो

भजन बिन योंही जनम गमायो ॥टेर॥
पानी पहली पाल न बाँधी, फिर पीछै पछतायो ॥१॥

रामा-मोह भये दिन खोवत, आशा पाश बँधायो
जप तप संजमदान नहीं दीनों मानुष जनम हरायो ॥२॥

देह शीस जब काँपन लागी, दसन चलाचल थायो
लागी आगि बुझावन कारन चाहत कूप खुदायो ॥३॥

काल अनादि गुमायो भ्रमतां, कबहुँ न थिर चित लायो
हरी विषय सुख भरम भुलानो, मृग तृष्णा वशि धायो ॥४॥

भाया थारी बावली जवानी

भाया थारी बावली जवानी चाली रे
भगवान भजन तूं कद करसी थारी गरदन हाली रे ॥टेक॥

लाख चोरासी जीवाजून में मुश्किल नरतन पायो
तूं जीवन ने खेल समझकर बिरधा कीयां गमायो
आयो मूठी बाँध मुसाफिर जासी हाथा खाली रे ॥१॥

झूँठ कपट कर जोड़ जोड़ धन कोठा भरी तिजोरी रे
धर्म कमाई करी न दमड़ी कोरी मूँछ मरोड़ी रे
है मिथ्या अभिमान आँख की थोथी थारी लाली रे ॥२॥

कंचन काया काम न आसी थारा गोती नाती रे
आतमराम अकेलो जासी पड़ी रहेगी माटी रे
जन्तर मन्तर धन सम्पत से मोत टले नहीं टाली रे ॥३॥

आपा पर को भेद समझले खोल हिया की आँख रे
वीतराग जिन दर्शन तजकर अठी उठी मत झाँक रे
पद पूजा सौभाग्य करेली शिव रमणी ले थाली रे ॥४॥

भूल के अपना घर

भूल के अपना घर, जाने कितनों के घर, तुझको जाना पडा ॥

इस जहां में कई घर बनाये तूने,
रिश्तेदारी सभी से निभाई तूने
जिनके थे तुम पिता, फ़िर उन्हीं को पिता, तुझे बनाना पडा ॥

जो थी माता तेरी वो ही पत्नी बनी,
पत्नी से फ़िर तेरी भगिनी बनी
रिश्ते करते रहे, हम बिछुडते रहे, ना ठिकाना मिला ॥

बनके थलचर तू सबलों से खाया गया,
बन के नभचर तू जालों फ़ंसाया गया
नर्क पशुओं के गम, देख कर ये सितम तुझको रोना पडा ॥

इस जहां की तो वधुऐं अनेकों वरीं,
मुक्ता रानी न अब तक तेरे मन बसी
जिसने उसको वरा, इस जहां की धरा, पर ना आना पडा ॥

मन महल में दो दो भाव जगे

मन महल में दो दो भाव जगे, इक स्वभाव है, इक विभाव है
अपने-अपने अधिकार मिले, इक स्वभाव है, इक विभाव है ॥

बहिरंग के भाव तो पर के हैं, अंतर के स्वभाव सो अपने हैं
यही भेद समझले पहले जरा, तू कौन है तेरा कौन यहाँ
तू कौन है तेरा कौन यहाँ ॥१॥

तन तेल फुलेल इतर भी मले, नित नवला भूषण अंग सजे
रस भेद विज्ञान न कंठ धरा नहीं सम्यक् श्रद्धा साज सजे
नहीं सम्यक् श्रद्धा साज सजे ॥२॥

मिथ्यात्व तिमिर के हरने को, अक्षय आतम आलोक जगा
हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, तब दर्शन मन 'सौभाग्य' पगा
तब दर्शन मन 'सौभाग्य' पगा ॥३॥

ममता की पतवार ना तोडी

ममता की पतवार ना तोडी आखिर को दम तोड दिया
इक अनजाने राही ने शिवपुर का मारग छोड दिया ॥ममता॥

नर्क में जिसने भावना भायी मानुष तन को पाने की
भेष दिगम्बर धारण करके मुक्ति पद को पाने की
लेकिन देखो आज ये हालत ममता के दीवाने की
चेतन होकर जड द्रव्यों से कैसे नाता जोड लिया ॥इक॥

ममता के बन्धन मे बंध कर क्या युग युग तक सोना है
मोह अरी का सचमुच इस पर हो गया जादू टोना है
चेतन क्या नरतन को पाकर अब भी यों ही खोना है
मन का रथ क्यों शिवमारग से कुमारग पर मोड दिया ॥इक॥

मत खोना दुनिया में आकर ये बस्ती अनजानी है
जायेगा हर जाने वाला जग की रीति पुरानी है
जीवन बन जाता यहां पंकज सबकी एक कहानी है
चेतन निज स्वरुप देखा तो दुख का दामन तोड दिया ॥इक॥

माया में फ़ंसे इंसान

माया में फ़ंसे इंसान, विषयों में ना बह जाना
चिन्मय चैतन्य निधि को भूल ना पछताना॥

तन धन वैभव परिजन, तेरे काम ना आयेंगे,
संयोग सभी नश्वर, तेरे साथ ना जायेंगे,
तू अजर अमर ध्रुव है, यह भाव सदा लाना ॥माया॥

पर द्रव्यों में रमकर, अपने को भूल रहा,
माया अरु ममता में तू प्रतिक्षण फ़ूल रहा,
अनमोल तेरा जीवन, गफ़लत में ना खो जाना ॥माया॥

चैतन्य सदन भासी, तू ज्ञान दिवाकर है,
है सहज शुद्ध भगवन, तू सुख का सागर है,
अपने को जरा पहिचान, विषयों में ना खो जाना ॥माया॥

लख चौरासी भ्रमते, दुर्लभ नरतन पाया,
जिनश्रुत जिनदेव शरण, पुण्योदय से पाया,
आतम अनुभूति बिना रह जाये ना पछताना ॥माया॥

मेरे कब ह्वै वा दिन की सुघरी

मेरे कब ह्वै वा दिन की सुघरी ॥टेक॥
तन विन वसन असनविन वनमें, निवसों नासादृष्टिधरी ॥

पुण्यपाप परसौं कब विरचों, परचों निजनिधि चिरविसरी
तज उपाधि सजि सहजसमाधी, सहों घाम हिम मेघझरी ॥१॥

कब थिरजोग धरों ऐसो मोहि, उपल जान मृग खाज हरी
ध्यान-कमान तान अनुभव-शर,छेदों किहि दिन मोह अरी॥२॥

कब तृनकंचन एक गनों अरु, मनिजडितालय शैलदरी
'दौलत' सत गुरुचरन सेव जो, पुरवो आश यहै हमरी ॥३॥

मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूं

मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूं, मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूं ॥

मैं हूं अपने में स्वयं पूर्ण, पर की मुझमें कुछ गंध नहीं
मैं अरस, अरूपी, अस्पर्शी, पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं ॥

मैं रंग राग से भिन्न भेद से, भी मैं भिन्न निराला हूं
मैं हूं अखंड चैतन्य पिण्ड, निज रस में रमने वाला हूं ॥

मैं ही मेरा कर्ता धर्ता, मुझमें पर का कुछ का काम नहीं
मैं मुझमें रमने वाला हूं, पर में मेरा विश्राम नहीं ॥

मैं शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध एक, पर परिणति से अप्रभावी हूं
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्त्व, मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूं ॥

मैं दर्शन ज्ञान स्वरूपी हूं

मैं दर्शन ज्ञान स्वरूपी हूं, मैं सहजानन्द स्वरूपी हूं ॥

हूं ज्ञान मात्र परभाव शून्य, हूं सहज ज्ञान धन स्वयं पूर्ण
हूं सत्य सहज आनन्द धाम, मैं सहजानन्द स्वरूपी हूं॥

हूं खुद का ही कर्ता भोक्ता, पर में मेरा कुछ काम नहीं
पर का न प्रवेश न कार्य यहां, मैं सहजानन्द स्वरूपी हूं ॥

आओ उतरो रमलो निज में, निज में निज की दुविधा ही क्या
है अनुभव रस से सहज प्राप्त, मैं सहजानन्द स्वरूपी हूं ॥

मैं हूँ आतमराम

मैं हूँ आतमराम, मैं हूँ आतमराम,
सहज स्वभावी ज्ञाता दृष्टा चेतन मेरा नाम ॥टेर॥

कुमति कुटिल ने अब तक मुझको निज फंदे में डाला
मोहराज ने दिव्य ज्ञान पर, डाला परदा काला
डुला कुगति अविराम, खोया काल तमाम ॥सहज-१॥

जिन दर्शन से बोध हुआ है मुझको मेरा आज
पर द्रव्यों से प्रीति बढ़ा निज, कैसे करूँ अकाज
दूर हटो जग काम, रागादिक परिणाम ॥सहज-२॥

आओ अंतर ज्ञान सितारो, आतम बल प्रगटा दो
पंचम गति 'सौभाग्य' मिले प्रिय आवागमन छुड़ादो
पाऊँ सुख ललाम, शिवस्वरूप शिवधाम ॥सहज-३॥

मोक्ष पद मिलता है धीरे धीरे

मोक्ष पद मिलता है धीरे धीरे,

मंदिर जाऊं दर्शन पाऊं, प्रभु चरणों में ध्यान लगाऊं
लगन बढती है धीरे धीरे ॥मोक्ष॥

ईर्ष्या छोड़ूं, समता धारूं, प्रभु चरणों में सब कुछ वारूं
कषाय नशती है धीरे धीरे ॥मोक्ष॥

ममता छोड़ूं, सत्संग पाऊं, मूल गुणों को मैं अपनाऊं
ज्ञान बढता है धीरे धीरे ॥मोक्ष॥

इच्छायें रोकूं, संयम धारूं, बारह भावना मन में विचारूं
तपस्या बढती है धीरे धीरे ॥मोक्ष॥

परिग्रह छोड़ूं, दीक्षा धारूं, सोहं सोहं मन में विचारूं
करमन झरते हैं धीरे धीरे ॥मोक्ष॥

सब जीवों से क्षमा कराऊं, केवल ज्ञान की ज्योति जगाऊं
शिवपुर मैं जाऊं धीरे धीरे ॥मोक्ष॥

मोह की महिमा देखो

मोह की महिमा देखो क्या तेरे मन में समाई,
अपनी ही महिमा भुलाई तूने अपनी ही महिमा ना आई

काहे अरिहन्तो के कुल को लजाया,
काहे जिनवाणी माँ का कहना भुलाया ।
काहे मुनिराजों की सीख ना मानी, सिद्ध समान शक्ति, हरकत बचकानी,
अपने ही हाथों अपने घर में ही आग लगाई ॥अपनी॥

समवसरण में जिनवर, इन्द्रों ने गाया,
सौ सौ इन्द्रों के मध्य सबको समझाया ।
अपनी शुद्धात्मा को भगवन बताया,भव्यों ने समझा अंदर अनुभव में आया,
जानो और देखो चेतन इसमें ही तेरी भलाई ॥अपनी॥

काहे अपनाये तूने माटी के ढेले,
कहता तू सोना चांदी, सिक्के व धेले ।
पुद्‌गल अचेतन से प्रीती बढाई, प्रभुता को भूला पामर कृति बनाई,
रघुकुल के राम तूने काहे को रीति गमाई ॥अपनी॥

आतम आराधना का आतम ही मंच है,
जिसमें परभावों का ना रंच प्रपंच है ।
कोई ना स्वामी जिसमें कोई ना चाकर, बंसी बजैया तूही तेरा नटनागर,
जिसने भी मुक्ति पाई अस्ति की मस्ती में पाई ॥अपनी॥

मोहे भावे न भैया थारो देश

मोहे भावे न भैया थारो देश, रहूंगा मैं तो निज घर में ॥

मोहे न भावे यह महल अटारी, झूठी लागे मोहे दुनिया सारी
मोहे भावे नगन सुभेष, रहूंगा मैं तो निज घर में ॥

हमें यहां अच्छा नहीं लगता, यहां हमारा कोई न दिखता
मोहे लागे यहां परदेस, रहूंगा मैं तो निज घर में ॥

श्रद्धा ज्ञान चारित्र निवासा, अनंत गुण परिवार हमारा
मैं तो जाऊंगा सुख के धाम, रहूंगा मैं तो निज घर में ॥

कब पाऊंगा निज में थिरता, मैं तो इसके लिये तरसता
मैं तो धारूं दिगम्बर वेष, रहूंगा मैं तो निज घर में ॥

ये शाश्वत सुख का

ये शाश्वत सुख का प्याला, कोई पियेगा अनुभव वाला ॥

ध्रुव अखंड है, आनंद कंद है, शुद्ध बुद्ध चैतन्य पिण्ड है
ध्रुव की फ़ेरो माला ॥कोई....॥

मंगलमय है, मंगलकारी, सत चित आनंद का है धारी
ध्रुव का हो उजियारा ॥कोई....॥

ध्रुव का रस तो ज्ञानी पावे, जन्म मरण का दुःख मिटावे
ध्रुव का धाम निराला ॥कोई....॥

ध्रुव की धूनी मुनि रमावे, ध्रुव के आनंद में रम जावे
ध्रुव का स्वाद निराला ॥कोई....॥

ध्रुव के रस में हम रम जावें, अपूर्व अवसर कब यह पावें
ध्रुव का हो मतवाला ॥कोई....॥

वीर भज ले रे भाया

वीर भज ले रे भाया वीर भज ले
(जरा सा) -३ कहना म्हारा मान ले तू वीर भज ले

मुट्ठी बांधे आयो जगत में, हाथ पसारे जासी
और जरा धरम री कर ले, या ही आडे आसी ॥जरा-१॥

ज्वानी वी अकडाई में तू, टेढो टेढो चाले
पर तन्ने इतनी नई मालुम रे, काईं होसी काले ॥जरा-२॥

मोह माया में भूल रहा तू, कर रहा थारी म्हारी
अरे ज्ञान धरम की बात करे तो, लगती तुझको खारी ॥जरा-३॥

छोटी मोटी बनी हवेली यहीं पडी रह जासी
और दो गज कफ़न को टुकडो तेरी, आखिर साथ निभासी ॥जरा-४॥

तू मेहमान है चार दिनां का, मत ना भूले भाई
काल के काजी आऎंगे तब, कंठ पकड ले जासी ॥जरा-५॥

हरख हरख कर कहे 'हरखचंद', ये मौका नहीं आसी
प्रभू भजन बिन अरे बावले, तू पीछे पछतासी ॥जरा-६॥

शास्त्रों की बातों को मन

तर्ज : माता तू दया करके

शास्त्रों की बातों को मन से ना जुदा करना,
संकट जो कोई आये स्वाध्याय सदा करना ॥
जीवन के अंधेरों में दुखों का बीडा है,
पहचान जरा कर ले फ़िर जड से मिटा देना ॥

हम राह भटकते हैं, मंजिल का नहीं पाना,
चहुं ओर अंधेरा है बुझा दीप हमारा है।
हमें राह दिखा जिनवर भव पार हमें करना ॥शास्त्रों॥

धन दौलत की दुनिया अपना ही पराया है,
तू सार करे किसकी माटी की काया है,
पहचान जरा करले फ़िर जग से विदा लेना ॥शास्त्रों॥

संसार महा अघसागर

संसार महा अघसागर में, वह मूढ़ महा दु:ख भरता है
जड़ नश्वर भोग समझ अपने, जो पर में ममता करता है

बिन ज्ञान जिया तो जीना क्या, बिन ज्ञान जिया तो जीना क्या
पुण्य उदय नर जन्म मिला शुभ,व्यर्थ गमों फल लीना क्या ॥

कष्ट पड़ा है जो जो उठाना, लाख चौरासी में गोते खाना
भूल गया तूं किस मस्ती में उस दिन था प्रण कीना क्या ॥

बचपन बीता बीती जवानी, सर पर छाई मौत डरानी
ये कंचन सी काया खोकर, बांधा है गाँठ नगीना क्या ॥

दिखते जो जग भोग रंगीले, ऊपर मीठे हैं जहरीले
भव भय कारण नर्क निशानी, है तूने चित दीना क्या ॥

अंतर आतम अनुभव करले, भेद विज्ञान सुधा घट भरले
अक्षय पद 'सौभाग्य' मिलेगा, पुनि पुनि मरना जीना क्या ॥

सजधज के जिस दिन

सजधज के जिस दिन मौत की शहजादी आयेगी,
ना सोना काम आयेगा, ना चांदी आयेगी॥

छोटा सा तू, कितने बडे अरमान हैं तेरे,
मिट्टी का तू सोने के सब सामान हैं तेरे,
मिट्टी की काया मिट्टी में जिस दिन समायेगी
ना सोना काम आयेगा, ना चांदी आयेगी ॥

कोठी वही बंगला वही बगिया रहे वही,
पिंजरा वही, पंछी वही है बागवां वही,
ये तन का चोला आत्मा जब छोड जायेगी
ना सोना काम आयेगा, ना चांदी आयेगी ॥

पर खोल के पंछी तू पिंजरा तोड के उड जा,
माया-महल के सारे बंधन छोड के उड जा,
धडकन में जिस दिन मौत तेरी गुनगुनायेगी
ना सोना काम आयेगा, ना चांदी आयेगी ॥

सिद्धों से मिलने का मार्ग

सिद्धों से मिलने का मार्ग ध्यान है
अपने पास आने का मार्ग ध्यान है

निज से प्रीति हुई है अब तो निज की श्रद्धा जगी
अपने से अपनापन का बस मार्ग ध्यान है
निज में ही समाने का मार्ग ध्यान है

सुख सागर लहराता अब तो अंतर में मेरे
अंतर में नहीं समाता अब तो बाहर में झलके
सिद्धो के सैम बन जाना बस एक ही काम है ॥निज॥

निज परिणति ने घूँघट खोला, मालामाल हुई
चेतन वैभव पाकर अब तो वह निहाल हो गई
अंतर में समाने का बस एक ही काम है ॥निज॥

अन्तरंग में तत्त्व का जब ऐसा बंधा समां
मैं ज्ञायक भगवान हूँ बस ऐसा मुझे लगा
जाननहारा को जानता बस एक ही काम है ॥निज॥

सुन रे जिया चिरकाल गया

सुन रे जिया चिरकाल गया,
तूने छोडा ना अब तक प्रमाद, जीवन थोडा रहा॥

जिनवाणी कहती है तेरी कथा, तूने भूल करी सही भारी व्यथा
अब कर ले स्वयं की पहचान, जीवन थोडा रहा ॥

जीव तत्व है तू परम उपादेय, अजीव सभी हैं ज्ञान के ज्ञेय
निज को निज पर को पर जान, जीवन थोडा रहा॥

आस्रव बंध ये भाव विकारी, चेतन ने पाया दुख इनसे भारी
सम्यक्त्व को ले पहिचान, जीवन थोडा रहा ॥

संवर निर्जरा शुद्ध भाव है, मोक्ष तत्व पूर्ण बंध अभाव है
इनको ही तू हित रूप मान, जीवन थोडा रहा ॥

सुनो जिया ये सतगुरु की बातैं

सुनो जिया ये सतगुरु की बातैं,
हित कहत दयाल दया तैं ॥टेक॥

यह तन आन अचेतन है तू, चेतन मिलत न यातैं
तदपि पिछान एक आतमको, तजत न हठ शठ-तातैं ॥१॥

चहुँगति फिरत भरत ममताको, विषय महाविष खातैं
तदपि न तजत न रजत अभागै, दृग व्रत बुद्धिसुधातैं ॥२॥

मात तात सुत भ्रात स्वजन तुझ, साथी स्वारथ नातैं
तू इन काज साज गृहको सब, ज्ञानादिक मत घातै ॥३॥

तन धन भोग संजोग सुपन सम, वार न लगत विलातैं
ममत न कर भ्रम तज तू भ्राता, अनुभव-ज्ञान कलातैं ॥४॥

दुर्लभ नर-भव सुथल सुकुल है, जिन उपदेश लहा तैं
'दौल' तजो मनसौं ममता ज्यों, निवडो द्वंद दशातैं ॥५॥

सोते सोते ही निकल

सोते सोते ही निकल गयी, सारी जिन्दगी
सारी जिन्दगी तेरी प्यारी जिन्दगी,
बोझा ढोते ही निकल गयी, सारी जिन्दगी ॥

जनम लेत ही इस धरती पर तूने रुदन मचाया,
आंखे भी न खुलने पाई, भूख भूख चिल्लाया
रोते रोते ही निकल गयी, सारी जिन्दगी ॥

खेलकूद में बचपन बीता, यौवन पा बौराया,
धर्म कर्म का मर्म ना जाना, विषय भोग लपटाया
भोगों भोगों में निकल गयी, सारी जिन्दगी ॥

धीरे धीरे बढा बुढापा, डगमग डोले काया,
सब के सब रोगों ने देखो डेरा खूब जमाया
रोगों रोगों में निकल गयी, सारी जिन्दगी ॥

जिसको तू अपना समझा था, वह दे बैठा धोखा,
प्राण गये फ़िर जल जायेगा, ये माटी का खोका
खोका ढोने में निकल गयी, सारी जिन्दगी ॥

हम तो कबहुँ न निज घर आये

हम तो कबहुँ न निज घर आये
परघर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये ॥

परपद निजपद मानि मगन ह्वै, परपरनति लपटाये
शुद्ध बुद्ध सुख कन्द मनोहर, चेतन भाव न भाये ॥१॥

नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये
अमल अखण्ड अतुल अविनाशी, आतमगुन नहिं गाये ॥२॥

यह बहु भूल भई हमरी फिर, कहा काज पछताये
'दौल' तजौ अजहूँ विषयनको, सतगुरु वचन सुनाये ॥३॥

हम तो कबहुँ न निजगुन भाये

हम तो कबहुँ न निजगुन भाये
तन निज मान जान तनदुखसुख में बिलखे हरखाये ॥

तनको गरन मरन लखि तनको, धरन मान हम जाये
या भ्रम भौंर परे भवजल चिर, चहुँगति विपत लहाये ॥१॥

दरशबोधव्रतसुधा न चाख्यौ, विविध विषय-विष खाये
सुगुरु दयाल सीख दइ पुनि पुनि, सुनि, सुनि उर नहि लाये ॥२॥

बहिरातमता तजी न अन्तर-दृष्टि न ह्वै निज ध्याये
धाम-काम-धन-रामाकी नित, आश-हुताश जलाये ॥३॥

अचल अनूप शुद्ध चिद्रूपी, सब सुखमय मुनि गाये
'दौल' चिदानंद स्वगुन मगन जे, ते जिय सुखिया थाये ॥४॥

हम तो कबहूँ न हित उपजाये

हम तो कबहूँ न हित उपजाये
सुकुल-सुदेव-सुगुरु सुसंग हित, कारन पाय गमाये! ॥

ज्यों शिशु नाचत, आप न माचत, लखनहारा बौराये
त्यों श्रुत वांचत आप न राचत, औरनको समुझाये ॥१॥

सुजस-लाहकी चाह न तज निज, प्रभुता लखि हरखाये
विषय तजे न रजे निज पदमें, परपद अपद लुभाये ॥२॥

पापत्याग जिन-जाप न कीन्हौं, सुमनचाप-तप ताये
चेतन तनको कहत भिन्न पर, देह सनेही थाये ॥३॥

यह चिर भूल भई हमरी अब कहा होत पछताये
'दौल' अजौं भवभोग रचौ मत, यौं गुरु वचन सुनाये ॥४॥

हम न किसीके कोई न हमारा

हम न किसीके कोई न हमारा, झूठा है जगका ब्योहारा
तनसम्बन्धी सब परिवारा, सो तन हमने जाना न्यारा ॥

पुन्य उदय सुखका बढ़वारा, पाप उदय दुख होत अपारा
पाप पुन्य दोऊ संसारा, मैं सब देखन जानन हारा ॥१॥

मैं तिहुँ जग तिहुँ काल अकेला, पर संजोग भया बहु मेला
थिति पूरी करि खिर खिर जांहीं,मेरे हर्ष शोक कछु नाहीं॥२॥

राग भावतैं सज्जन मानैं, दोष भावतैं दुर्जन जानैं
राग दोष दोऊ मम नाहीं, 'द्यानत' मैं चेतनपदमाहीं ॥३॥

भजन

Contact for
order
Call and
whatsapp
9993602663
7722983010

9993602663

पीतल डिब्बा सेट

4G 3.72KB/s 9:21 VoLTE

Like Share

8

Like Share

10"
11"

MILTON
REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

जैन मन्दिर गली नं. 2 कैलाश
श्रीमती आभा जैन राकेश जैन

WEIGHT g
654.0
STAND BY
STABLE
NET

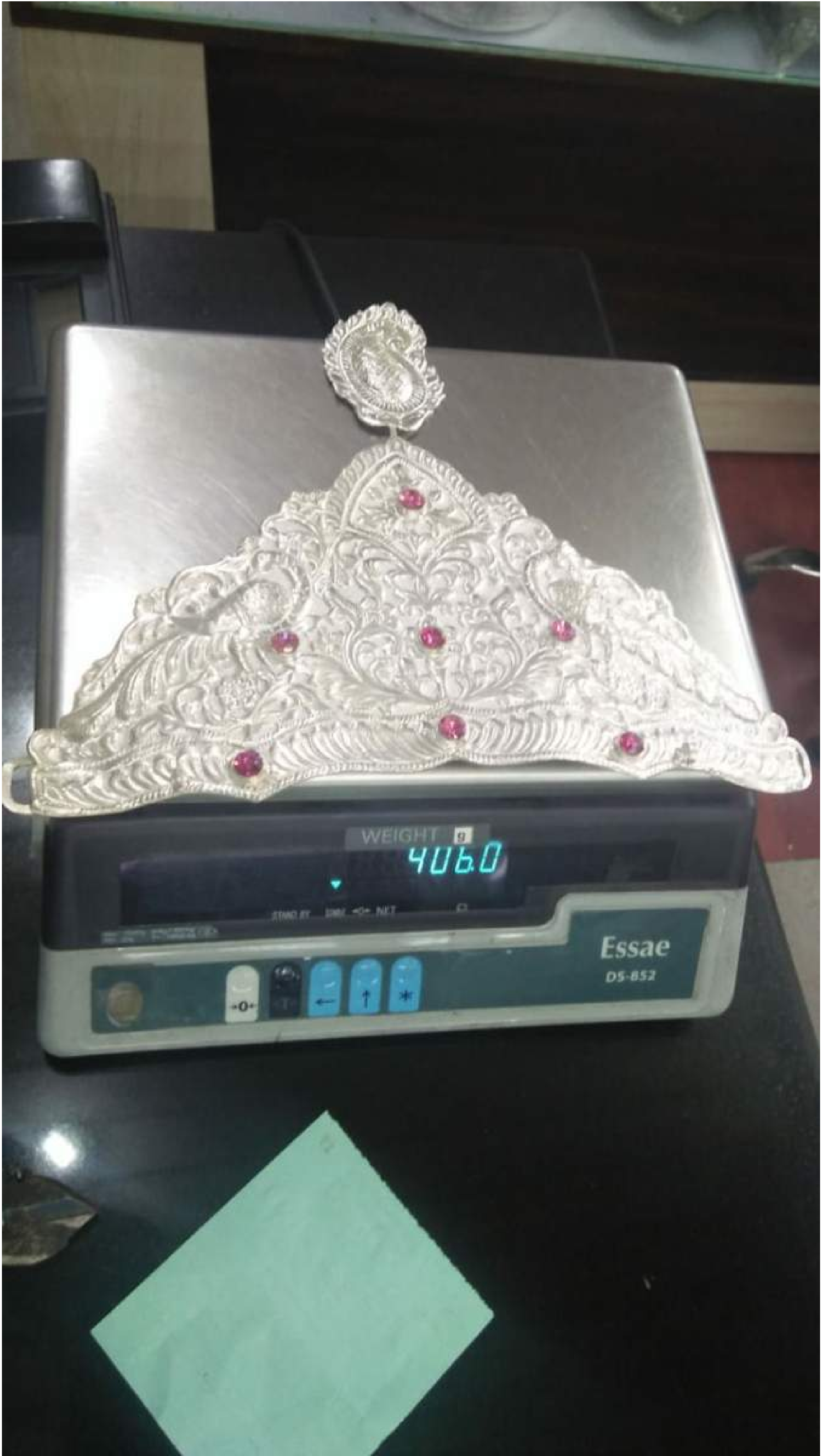
WEIGHT g
406.0
Essae
DS-852

WEIGHT
3450
DS-852

WEIGHT
42040
Essae
DS-852

PhotoGrid

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

5/03/03